### TALE

#### FROM THE BIKRAMORBASHEE

OF KALIDASA

RAMSADAYA BHATTACHARJEA.

wv

#### विक्राश्वनी।

कालिमामञ्ज्ञीछ विकत्मार्क्तनी नाष्ट्रेत्कद

केलाश्राम जाल।

जीवात्रमम्य चढ्ढाठोया अनीजः।

CALCOTTA :

THE SANSTRIT PRESS.

1859.

#### विकाशन ।

সংস্ত ভাষার মুহাক্ষিক্ষারিকার প্রদীত রিক্রমোর্কণী নামক নাটক অবল্যন করিয়া এই প্রক্র রিথিত হটুল, ইহা ুমূল প্রস্তের অনিক্ল অমুবাদ নহে, উপাধানিটা যাত্র সন্ধানত হইয়াকে, এবং অনেক হানে অমুবাদিজ ক্রীক্ষাকে। ক্ষাক্রব সংস্কৃতাভিজ্ঞ মহাশর্মগণের নিকট আমার এই নিবেদন, যে সাধারণের নিকট কালিদাসক্ত বিক্রমোর্কণীর এরপ কদাকারে পরিচয় দান নিবল্ধন অপরাধ মার্জনা করিয়া যেন আমার প্রতি ক্ষ্মা প্রদর্শন করেন। আর সংস্কৃতানভিজ্ঞ মহাশয়দিগের নিকট এই প্রার্থনা যে এই অমুবাদিত গল্পটা মাত্র পাঠ করিয়া যেন বিক্রমোর্কশীর রসবভার উৎকর্ষাপ্রকর্ম অবধারিত না করেন।

ইহার সক্লভাগ লিখিত হইলে, অভিজ্ঞার ৺ তারাশন্ধর তর্করত্ব মহাশায় দেখিয়া ও কোন কোন স্থান স্থলোধিত করিয়া উৎসাহ প্রদাদ করেন। প্রথম ও বিভীয় অন্ধ প্রস্তুত হইলে শ্রীমৃত মাখন লাল ভটাচার্য্য মহাশায় সনিশ্রেষ্ট্র পরিশ্রম ও অভিনিবেশ পূর্বক পাঠ ও হানে হানে ছই একটা শব্দ পরিবর্ত্তন করিয়া অনেক সাহার্য্য করেন। অনন্তর সমস্তভাগ প্রস্তুত হইলে শ্রীমৃত অযোধ্যানাথ পাকড়াশী প্রভৃতি কভিপন্ন বন্ধুকে দেখিতে দি, ভাঁছারা আদ্যোপাস্ত পাঠ করিয়া বিজ্ঞগণসমক্ষে প্রদর্শনযোগ্য বলিয়া সাহস প্রদান করেন। ভেষ্মনন্তর কিরপে মূলাকনের বার্ত্তর করিব ভাবিরা অত্যন্ত চিন্তিত হইলাম। পরিশেবে গোবর্তাক্তিবিদালী প্রধান ভূমাধিকারী প্রীযুত বাবু নারদাপ্রসম সূথোপাধ্যার মহাশর আমার মূখে নবিশেষ প্রবণ করিরা খীর জনামান্য বদান্যতা প্রদর্শন পূর্বক সহস্র থণ্ড মুদ্রাক্তনের সমস্ত বার প্রদান করিরা সে চিন্তার অবনান করিলেন; ফলতঃ উলিখিত ক্রমিছিল মুখোপাধ্যার মহাশারের এই অলোকসামান্য অন্তগ্রহলাভ না হইলে ইহা মুদ্রিত করা আমার পক্ষে নিভান্ত হন্ধর হইত সন্দেহ নাই। একানে যদ্ধিকা ভাষাক্রাগী মহাশারদাকরের ক্রম্প্রাহ ও প্রসম্বতা লাভি হয়, তাহা হইলেই চরিতার্থ হইব।

জীরামসদর শর্মা

बाँग्रेबा मराज्य खूल। ्र ১• दे अश्रहामन, मरबर ১৯১७।

# विकटमार्च भी।

#### अर्थम यह

**शूर्सकारन** जात्रज्वरम् शूकत्वा नारम श्रक महावर्ष পরাকাত নরপুতি ছিলেন। এক দিবস তিনি গঙ্গাতীরে ज्यतीत स्यादित्वत भूजा वन्मनानि ममाभन कतिहा ज्व-माভिমুথে র্থারোহণে প্রত্যাগমন করিতেছেন, এমন সময়ে অপ্সরাগণের এই করুণধৃৰি তাঁহার অবণগোচর हरेल, "हर अवतिहाती स्त्र शक्त भाजी महाज्ञ भन ! तक्त করুন, রক্ষা করুন"। রাজা অবণমাত্র ব্যথ্য হইয়া তাঁহা-দিগের সম্মুখে উপস্থিত হ**ইলেন** এবং অভয় প্রদান করিয়া জিজ্ঞাসা করিলেন, তোমরা কি নিমিত্ত এমন কাডর বিরে রোদন করিতেছ, কি হইরাছে? সবিশেষ অবগত হইলে সাধাানুসারে প্রতিবিধানের কেই। পাই। অঞ্চরাগণ, অসামান্য তেজস্বী স্থরেক্সবঞ্চু ক্রহারাজ পुकतवारक मन्द्रश्ववादी (पश्चिता देशवादिवान शूक्तक चाः क्तिशास नेक्स निरंकन कतिए नानितन महाताल। ৰপাডিমানিনী ভাসিধীগণের অক্যানভূমি এবং দেবলা क्षित, के अक्षेत्र। जानिनेनेतनंत्र नमाधिजन कविवाद सक्माद चंद्र मार्चः वान, व्यामादनत अत्रवस्त्रात च सन्ति, त्काम আন্তর্বশতঃ অলকাপুনী গ্রন্থ ক্রিয়াছিলেন; এ-ভারিক সময়ে পথিমধ্যে এক ছার ও দানব চিত্রলে-খার সহিত তাঁহাকে বলপুর্বক হরণ করিয়া প্রস্থান করিয়াছে।

নীরপতি অমুরোপদ্রব শ্রবণে রেয়েপ্রবশ 🌉ইয়া किछांगा कतितन, टेंडायता विनिष्ड शात हैताचा दिनान् क्रिक পলাধন করিয়াছে ? তাঁহার। ক্হিলেন, মহারাজ! এই ঈশান দিক্ অভিমুখে পলারন করিয়াছে। তথন তিনি ठाँशिमिश्राटक आश्वाम वारका करिंद्रमा, रह सूत्रविनानिनी-भग ! विशम्कारम रेभर्या। वसम कड़ाई छेडिछ । अ ममरम নিতান্ত অধীর হইলে আন্তরিক ক্লেশ ব্যতিরিক্ত আর किष्ठ्रे लाख नार्ट । अर्जंबर लामता (भाकारवर्ग महत्र्राप সযত্ন হও, আমিও তোমানিগের প্রিয়সখীকে প্রত্যানয়ন कतिरा वर्षामाधा कियो कतिराहि, अकार अहे विकास করি তোমরা কোনু ছানে অবস্থান করিয়া আমার প্রত্যা-প্রমন প্রতীকা করিবে? তাঁহারা বিনীত বচমে কহি-**त्मनः महाद्राजः । अरे अञ्चर्यदेखीः (हमकू**षे প्रकारतः नियतः (मृत्म श्राविद्धार महातारकत्र विकत्र धार्यमा कतिव। ें अनुसुद महीशाल गात्रशिटक क्रेमीबहुकारन तथ हालुमा করিতে আমেশ করিলেন। সার্গ্নি ক্রেডবেপেক্সর্থ চালাইতে व्यक्तिन । ब्रांकी गांतशिटक क्रांगंग धनायांन क्षेत्रां कतिशा कहिएलन, ऋखं हा तथ स्वतन स्वदन हिनाइल्ट्राइ ह्वांध रुत्र গ্রুতও একপ বেগে চলিতে পারে না। দেখা রধরন স্বারা मियावनी हुनिष रहेता धृतिकशांत नात वाटा वाटा के

खीन श्रेटिकाइ, एक नकन खुक्क द्वरण चूति छहर, देश अ स्टेटकाइ एवन अवस्थित गाँध अना अक अवावनी विभाग इरेगाएइ, वाइनर्शन निमाद्ध छामक नकन एक निष्ठत स्थान दिन इन्हें निर्माटक वर्द व नकन एक भूषे तर्षक मधान्य स्थान स्थान हिन हिन, तम नकन निर्णाप्त आस्त्रको इरेगाएक। वर्षक्ष क्रिक्ट क्रिक्ट अञ्चान क्रिका।

 फिटक, ज्येनातान श्रीतालात केरिएक नातितान, महाताक जामारमत मृक्तिभरधत काडी इह-लन। जारेन जामता विकित द्वारम नमन कति, क्र कथा कश्शि नकत्व रहमकूणे जिमूर्य भमन कतिर्तन । . তথার উপস্থিত হইরা রক্তা মেনকারে জিজাস। করিলেন স্থি ! মহারাজ কি আমাদের মর্মবেদনা নিবারণ করিতে ममर्थ इहेरतन? (मनका कहिस्सन मधि! द्यामात जैकन आनका इटेर उर्ह (कन? जिनि कहिरलन थिय़ मिर्थ। ংরি, ইর, বিরিঞ্চি প্রভৃতি দেবগণকেও ছুর্ভ দানক-शरात प्रमार्थ आहान शा**रहे** छ। हिमा भाषाना ় •ভূপতি হইয়া কিবপে তৰিবয়ে ক্তকাৰ্য্য ইইবৈন, আ-भात अकास गरमार स्टेरबाहा। (कास्क्रके हिरलन जिल षरीता । निरमय जान ना, अहै निशिष्टरे लागात हेराँक नामाना शृष्वीक लादक्त्र नाम भेताकमधूना विश हरेट्टट किन्त जानि जानि, देवलिक, सम्प्रभटनत महिल খোরতর সংখ্যাম উপন্থিত ফ্রুলে বিশেষ সাহায্য প্র-ভ্যাশার ই হাকে সবছমানে বেনাপড়ের বরণ করিয়া বা- (केंद्र) तडा करिएनन शिवज्ञात । (त्राट्य क्रमन श्राहाड, शरम शरम अनिक यांगका छेशक्ति एवं। यांश रुडेस; शार्यमा कृति सराजाक क्रिक्टिय विक्री रुडेन।

महाशिक इताचारक श्रांकिक कातिएक वाशिएक विकास स्वाचिक इताचारक श्रांकिक का जाति का का निर्माण का निर्

अगिरक धर्मणी इतकामरा छुछ मानरवत विक्रो।
कात मूर्जि अगिरका धरा अकात अविज्ञ इहेगाछ उम्रवाह तिक्रो।
अगर्ग स्रमें इहेर इहेर विमूक हहेगाछ उम्रवाह तहरामन, हेश मिरिता विकासिका अज्ञाल छिछरक छाँशत
रामकामन नार्थ निञ्ज छुँ छुँ हहेराना विकासिका स्रमें विवास स्र

क्तम कप्ताकृत रहेशा जामानिन्द्रक निकास वााकृत कतिर्घ ; जिल्लाकका कर्तनाम श्रीकृतारकत পরাক্রম প্রভাবে ভোমার অস্ক্রর্ক্ত নিগ্রহাশীলার স-मार् मित्राक्त्र रहेशाटकः अकटन उपाकाकीन नविनीत नाात व्यक्त विज्ञा अपना-দের বিষয় হৃদয়কে পরিভূপ্ত কর। ভূপতির এমপ প্রবো-ধ বাক্টেও উর্কাশীর শোষ্ট্রান্তি হুইল না দেখিয়া ক্রিক্ত लिथा विषश क्षरत कहिए नाशितन, कि आकर्षा ! अश-र्यास रेशात मध्छालाच हरेन ना। क्वल नियान अधान षातारे जीविष विषय अर्थी 💆 रहेएउंछ ! कि इहेन ! বুকি প্রতিকৃত্য দৈব এত দিনে স্থামাদিগকে, ক্রিয়সখীর বিয়োগ ছংখে চিরছংখিনী করিল ! ভূপতি তাঁহার তাদৃশ ক্লেণোক্তি অবণ ক্রিয়া কহিতে লাগিলেন ভুনি অ্কা-রণে এত ব্যাকৃল হইতেছকেন? ইনি অস্করভয়ে অত্যন্ত ভীত হইয়াছিলেন। এই নিমিত্ত এপর্যান্ত মুগ্ধ ও বিচে-जन रहेका तरिशास्त्र । मजूत् आत किष्टू हे महा अ (मश रेंहाँत क्षत्रिक मन्मात्रमाना वात्रःवात किनाठ इहेग्रा কেব্ৰল ভয়কপাই প্ৰকাশ ক্রিক্তেছে।

विज्ञदाने शिक्षां आश्राम बादका विश्वस हरेश ज्ञाने भूवं नहर के के विश्वस हरेश ज्ञाने भूवं नहर के के विश्वस हरेश ज्ञानित के विश्वस के विश

# Francisco II

া শন্তর মুরপতি উর্বেশীর প্রতি নমন পাত করি-त्रा महन्ते सदन् कारिहरू मासिहरून शतं। शतः। वंश-र्यात विद्वात करात किहूबाज जिल्हाम रहेश ना ! छनाव-রণকাশবার কংকাশ শাস্ত্রপ্রতীত হুইতেছে। কি করি, कि उभारत देशत स्वाता कात्र करि, धरेकन हिला कतिहरुद्धक अभव समेदन, अभिनी स्ट्रशियात साम् সক্ষেত্ৰ ইইরা উঠিলের। কুপতি তাঁহাকে প্রবেদ लार्थ। ये एक जाता नहाकी अकृष्टिका हरेरान । চন্দোদরে ধ্বান্তজাল উন্নীলিত হইলে, যামিনীর যেৰূপ त्रमनी ब्रक्तः , जिन्नाकाटमः निधुम जाशिनिचा (यमन मिनीशामांग इस, अवर शक्नाव्यवाह जीत मृखिका शाउ बाता कव्या इरेगा किथिए कुरस्रे प्यमन निर्मन करण প্রবাহিত হয়, সেইৰূপ তোমার প্রিয়ম্খী মোহমুক্ত ও নিঃশক্ষতিত্ত 🔫 ইয়া নয়নের প্রীতিকর মনোহর আকুতি भातन कतिरलन। - ठिखरलभा तांत्रात अधूत वाकः व्यवन করিয়া সতৃষ্ণ নয়নে উর্ন্ধশীর শরীরে নয়ন পাত করি-লেন, এবং তাঁহাকে বান্তিনিক প্রবুদ্ধা দেখিয়া যৎপরেন मांखि जामिकिङ रहेन्ना इंटर्बा एक्ट्र वहरू करिए लागि-বোন, প্রিয়স্থি ৷ এক্সনে বিশ্বস্তা হও ; শর্ণাগত রক্ষিতা महाताल श्रुकत्रा (परदिकी क्रूफे मानवरक मृतीक्र कतिश व्योगोनिशतक अंखर माने कित्रसारक्ष्मा । उर्दानी असम यू भन छेचीनन कतिशा किछ्युमा कतिरनन मथि। अनेकान ञ्चत्रशिक जामात क्रमत्रमंगा जेगानिक क्षेत्रितन ?

# 2117 981

विवेदमधी करित्वम, त्रशि ! (४३३) व श्वरः करतमः नारे। किं के शिवर विवयक्ष कार्यक कार्यक किंदिन इरन महाताम श्रुकारा जगामामा प्रमुखक अकान क-बिक्रा या गानित्शत क्षेत्रक मात्र कार्याम कतिहार्य । छसभी धरे वाका अत्वानाव अविमात छ एक नगरन মরপতির প্রতি দৃষ্টিপতি করিয়া ওঁছোর মনোরস ्मभूताक्वि । मर्कारन । साहिकः इटेटनम अवर भटन महन करिट वाश्विकान, आही! जन्माविक्टल कथन धकश क्लमाधुती आंगात नग्नताहत रह नारे! এकत्। অস্তরক্ত অপকার উপকার কর্পে পরিণত হইল। স্থৃপত্তি সতৃষ্ণ নয়নে উৰ্বাশীয় অলোকিক ৰূপলাবণ্য व्यवदेशाक्त क्रिक्रा भटन भटन अरे आत्नाजन क्रिट्ड वानिक्नन, शृक्षकारन जनवान वास्ट्रक्त मत्रकटनकः পরিঞ্ছ করিয়া বদরিকাশ্রমে অভিকঠোর তপ্স্যা আরম্ভ করিয়াছিলেন। স্বর্গাধিপতি তাঁহার ছোরতর তপদ্যায় गाणिभार मकिल हरेया म्याधिक्रमादर्थ (मनका, ब्रहा অভৃতি কতিপায় স্থারবিলাসিনীকৈ প্রেরণ করেন; তথন जिमि चीत अजाव अमर्गमार्थ फेक्स्टमम इटेंट टेशेंटक আবিষ্ঠ করিয়া তাহাদিগের কৌন্দর্য্যভিমানের সম্যক্ नित्राकत्रनः कतिशाहित्यनः । अरे आहीन ध्याम चाता त्यात्क रेनि उर्यमी नाटम विश्वाष्ट स्रेशास्त्रम। किन्न रेसँ। दि ক্তেনাধনের স্থান বলিক্স: আমার প্রতীয়িত হট্টতেতে না। ब्बांध रह, जाल्यानक्षमात्री स्थाकत चीत्र त्रीकार्यात पदा রিউ। দেখি শান্তির নিমিত ইছার এই অনুপ্র মোহন

मृद्धि निर्माण करियों थाकिरवंग, अथवा लेशवान अमवत्र क नवान में जब महामानि आश्रान निरातनार्थ धरे धक अनुमः-भरकात अस्मास यान लेतिज्ञान करिया थाकिरवन, किया वन बर्गाक निक वानसी माजात अकदानश्वातिज्ञा मन्नाम-मार्थ हेर्द्वारक निर्माण करिया श्वाकिरवन, नजूवा कराकीर्न वियत्तिभूच रिमाणांत्रक उर्द्वार्थ निज्ञ अमसाविज।

জনন্ব সহচরীগণ শৃতিপধানত 'ইইলে উর্নাণী চিত্রলেখাকে জিজাদা করিলেন, প্রিয়দাধি! তুমি বলিতে পার প্রানাধিকা প্রিয়ভমা বয়সাগণ কোথার আছেন! তিনি কহিলেন গাঁথি! আমি প্রথমাবধি তোমারই সমভিন্যাহারে আছি কিনপে তাঁহাদের স্মাচার জানিব, অভ্যাপ্রদানী মহারাজকে জিজাদা করিলে সনিশেষ ক্ষত্র শ্বাভ হইতে পারিবে।

নরপতি তাঁহার প্রার্থনা প্রান্ত অপেক। নাংকরি
চাই কহিলেন স্থানির! দহচরীপথ ডোমার অদর্শনে
লোকসালরে নিমন্ন রহির্মাছেন। নেখা তুমি মানুজাক্রমে

একবার ধাহার নরনপ্রের পথিক হইয়াছ, তোনার অদ্ধর্শনে সে ব্যক্তিও নিতান্ত উৎক্তিত ও ব্যাকুল হয়;
সহস্মান্তিত সম্ভূগ্বস্থে স্থী-জনের কথা কি কহিব।
উর্বাশী রাজার এতাদৃশ্বর্টন নিন্যান আবন করিয়া মনে

মনে কহিতে জালিলেন, ইহারে এই স্থাপুর বাক্য
ভাষার কর্ণকুহরে অমৃত বর্ষন করিল, অথবা স্থাক্র

হইতে স্থা বই আর কি নির্গত হইয়া থাকে।

মহাশ্ব। তাঁহারা নিতান্ত শোকাকুল হইরাছেন বলিয়াই আমার ক্ষান্ত এত ব্যাকুল হইতেছে। অতএব একণে তাঁহারা কোন হানে শ্রেছিত ক্ষিতেছেন অনুকল্পা প্রাক্তি প্রকিক বলিয়া আমার উৎকলিকাতপ্ত ক্ষান্ত স্থাতন অনিক প্রকিক বলিয়া আমার উৎকলিকাতপ্ত ক্ষান্ত স্থাতন স্থাতন স্থাতন ক্ষান, তথ্য তিনি হেমকুট পর্যতের অনতি দুরে উপনীত ইইয়াছিলেন, এজনা অনুলি সঞ্চালন দার। দেখাইয়া কহিলেন। ঐ দেখা, লোকে উপরাণমূক নিশাকরকে যেমন উৎস্কুক নয়নে অবলোকন করে দেই ক্ষাতোমার সহচরীগণ হেমকুট পর্যতের শিগরদেশে আরোক্ত করিয়া দানবছন্তবিমুক্ত ভোমার ম্থচন্দ্র নিরীক্ষণ করিতেছেন। উরাদী সেই দিকে দৃটিপতে করিয়ালার বর্গ্যাদিগকে দেখিতে পাইলেন এবং যংপ্রোনান্তি আন্দিত ইইয়া নির্মিন্য নয়নে নিরীক্ষণ করিতে লাগিকেন।

এদিকে রন্তা ক্রমে ক্রমে নৃপতিকে প্রত্যাসর হইতে নেথিয়া • হর্ষোৎকুল বদানে ক্রিলেন, সথি। ঐ দেখ মহারাজ চিত্রলেখা সমভিব্যাহারিদী উর্বাদীকে লইয়া উপনীত হইলেন। বােধ হইতেছে যেন ভগবান তার-কাপতি প্রিয়ন্তমা রিশাখা সমভিব্যাহারে মর্ভা ভূমিতে প্রবর্তীর্ণ হইলেন। মেনকা সভূষ্ণ নম্ননে অবশাকন করিয়া কহিলেন সথি। এউত্তরই আমানের অত্যন্ত আক্রাদের বিষয়; প্রিয়স্থী অমুর হস্ত হইতে নিক্তি পাইলেন এবং মহারাজও অক্ষত শরীরে অক্ষর যশোরাশি উপার্জ্য করিয়া প্রত্যাগ্যন করিলেন।

नत्र पि कर्म करम रहमकूरित छेशिक्शास छेछी न ररेक्का नावधित्क त्वश नमुद्रश भूतिक भवनक कविरछ चारकः कतिरवन । लाइथि जुल्जित ज्ञारम्। स्त्राटक तथ ष्टित कतिशा करम करम माह्युर काशिल : नामाद्रेवात সময় রধের ক্রিছে কম্প উপস্থিত হওয়াতে ট্রমণী শক্তিত अ बाक्ष ममत इनेस विज्ञालया आम्म नत्रशिक् व्यक्ति क्रम क्रिट्रिम । बीका काँश्रेष्ठ स्थलार्ग ताङ्क क्रिम ल्या পুলকিত হইয়া মনে মনে কহিতে লাগিলেন, এত দিনে णामात रेक्तिय्रभग हित्रार्थ रहेत, अबन नवाक समन्त्री तमनीत चत्रः धहार हायस्यास्य क्षेत्र कता नामाना मोणा-श्यात विषय नरह। উर्वाणा ताकाक्षणार्टम अवलाखन स्वा गानी<u>न श्वभश्र</u>मशाय नद्यम्थी इहेग्रा विज्ञालेशाः निक्छ किकिए दान आर्थना क्रिलन ; ह्यूड़ा हिजल्मश তাঁহার অফে অৱদশার স্পাই আবিষ্ঠার দেখিয়া সামত उपरंत्र कहित्तन, अकटन जूमि सब्बल, जान लाईग्राह छैर अर्थका उँ कुछ स्नाम पिट्ड **आमात** कमला माई।

এদিকে রক্তা সধীদিগকৈ স্থোধন করিয়া কহিলেন, দেখ সহারাজ নিতান্ত মনিহিত হইলেন আর বিলয় করা উচিত হইতেছে না: আইন, আমরা অথ্যে গিয়া ইহার যথোপর্ক সম্বানা করি এই কথা কহিয়া সকলেই সম্বর গমনে প্রভাগমন করিলেন।

ভূপতি তাঁহাদিগকে রথের নিকটে উপনীত হাইতে দেখিয়া রথ স্থির করিতে আদেশ করিলেন এবং ক্লছি-লেন স্তা ঐ দেখ অঞ্চরাপন একান্ত উৎস্ক হইয়া এ-

भवें के आगम क्रियाद्य अवरे रेहादम् मरहत्री अ अधि-भेत्र ताथ रहेतारहन , जल्या रहाता भव्यमत मक्का रहे-मा वार्षा वार्षा कार्य ने सर्गन तमनी सुक्षेत्र थात्र करून। माम्बद्धि हिंद कतियांनाक अन्तद्वासन अमी शवर्जी हहेता विभीख वण्टम कहिटलमें महाद्वाकान जानेमात जायुक्का अंद्रिंग कीर्वि विदेशांकी उत्तरिकीर्ग । अ श्रेलिया इडेल । त्रामा किरियान विद्यामारमत्रं अन्तरीनेमानस्य जानरमात्र পরিসীমানাই। তাঁহাদের এইরপ কথোপকখন চলি-তেতে अमन भमरत, उक्तमी विज्ञालयात रख व्यवसम क-तिश्रा तथ हरेटा अवलत्न कितितन, अवर अवन्यूर्न নয়নে ও স্থালিত বচনে কহিলেন, সুস্যাসাণ তোমরা সকলেই এককালে আমাকে একবার গড়ে আলিজন কর। আমার এক ফলের নিমিত্তও এমন আশা ছিল্ল কাংখ, शूनेखात (डाम: निर्मत हक्तानन मित्रीक्न कहिएक शाह्त। তাঁছারা চাইলোন সখি : আর কেন নে চুক্রিবহ শোকাগ্রির উত্তেজনী কর। ধর্ণন হত তংগ্য দানব তোমাকে হরণ कतिशा अञ्चान कतिन। ज्यन निधनत जन्नकात्रमस, जनश चत्रामयः, क्रव ष्नामय अञ्चलाम हरेटच लाविलः, कि कत्रि काथाय याहे काहातह ना भद्रनात्र इहे (कई वा जामादमत छन्दर्भ छ्न्थी हरेता अरे छ्न्यह दहरमत जाव-সান করিবেক, ভাবিয়া ভিত্তিয়া কিছুই ভ্রিকরিতে না পারিষা কেবল হাহাকার করিয়া রোদন করিতে লাগিলাম, **उपर्वाध जाञारमत द्वापन जिल्ला जात्र कान विद्यापत**त् উপায় ছিল না। দেখা তোমার বিরহে আমাদিনের কি

জনন্তর সার্থি গগণমণ্ডলে দৃষ্টিপাত করিয়া এক রথের বৃহদণ্ড দেখিতে পাইলেন। এবং গল্পবাধিপতি চিত্ররথকে জবলোকন করিয়া কহিলেন গল্পবাল চিত্র রথ আগমন করিতেছেন। এই কথা বলিতে বলিতেই চিত্ররথ রাজস্মীপে উপন্তি হইয়া কহিলেন, মহারাজ। অলোক সামান্য বাহুবলে জগতীতলে বিজয়ী হইলেন। মরপতি প্রিয়ব্দু চিত্ররথকে সমাগত দেখিয়া রথ হইতে জবতরণ করিলেন এবং প্রথমসমাগমোচিত স্থাগত প্রভৃতি শিক্টাচারপরক্ষরা সমাপন করিয়া পরক্ষর হস্তধারণ পূর্বকে উপনিত্ত হইলেন। রাজা জিজানিলেন, সথে। সমরোচিত বেশ ভূবা পরিগ্রহ করিয়া কোণাল গমন করি-মাছ? তিনি কহিলেন সথে। দেবরাজ, ছুরালা কেণীক্ষত

মার প্রতি আজা প্রদান করিয়াছিলেন, এ নিশিত্ত ভাঁচার जाटनगासुगाटत श्रीप्त नगर देनगड नामक नमकिवास्यतः করিয়া প্রস্থান করিয়াছিকাম টিপথিন্ত্রেট বিমানটারিশ গণের মুখে তোমার বিজয় বার্ত্তী লাবণে সাভিশর আহলা-मिछ हरेग्रा **मवित्मव अ**वंश्व हरेवात्र बिभिछ आमिग्राहि। ভূমি এই অসমসাহসিকতা প্রকাশ করাতে দেবরাজের মহৎ উপকার হইয়াছে। দেখা ভিদবান নারায়ণ উব্ধ-শীকে স্থাটি করিয়া তাঁহার যেউপকার করিয়াছিলেন, **अक्टर्स जूमि मानव इंख इहेट्ड विभूक क**्रिशा (महे উপকারকে বিশেষিত করিলে। রাজা কৃষ্ঠিলেন সংখ। अभेन कथा करिंख मा , आमा इहेट सुत्र कित छे नकात इटेरव अमन कि कम्पा बाट्ह, क्वल डें.इ.त जमुबाह-त्रसहे आति शहे हुछत कार्या क्रवकारी हरेताछ। **(एथ) क्यांती फतिकूलटक ख**श्चर विनक्षे ना कतिरलंड छाः হার গভীর পর্জনের প্রতিধনিতে কত শত হন্ত্রী প্রাণ ভাগে করিয়া থাকে। চিত্র**র্থ কহিলেন সংখ**ে তোমার य कल अवल लड़ाक्रम, अ विमन्न जाहात अमुक्त नहें उटि : 'যাহা হউক, একণে উর্বাদীকে লইয়া একবার অমরাবূর্তী গমন করিলে অপরিমীম হর্ম প্রাপ্ত হই। রাজা কহি-लान, मट्य! अकृत्व (एवंद्राक पर्यान याहेवात व्यवकान নাই; অতএব তুমিই আমার প্রতিনিধি স্বরূপ ইহাঁকে ल हेशा शिशा (मवताद्वात अटमान পরিবর্ধন কর। जान-खत ठिळात्रथ ज्ञानिशास्क माश्राधन कतिशा कहिरलेन. তোমার। ত্রার স্থরলোক গমনের উদ্যোপ কর দেব-

রাজ অতান্ত উৎক্তিত হইলা রহিলাছেল। চিত্রবের चाद्रमाञ्चरादा व्यवातावयः नक्टन रे यक काटन अमरना-म् यं रहेटन उक्का विज्ञातन वाहिक कहिएन मधि! याहे-বার সময় মহোপকারী মহাশারের অকুমতি গ্রহণ করা खनगा कर्डना, किन्न जामि अक्तारिता महना मन्यू थी-ন কুইতে গারি না; অতএব তুমি আমার প্রতিনিধি হই सा हेहाँत निकृष्ट असूम्बि आर्थना कता अमन्द्रता विक्र-त्वथ त्राक्रमभीत्य उपनीष हरेग्रा कश्चिम महात्रेश ! षामादनत शिवमणि डेर्स्सी नित्तमन कविद्विद्वन, त्य षा-गात अकांच रामना हिन किছू विन महाता जित रायात नियुक्त रुहेशा धरे रुठ जीवरमत मार्थकण। मन्त्रामन कतिक, কিছ ছুৰ্ভাগ্য ক্ৰমে প্রাধীনতা তাহাতে সম্পূর্ণ প্রতিবন্ধ-কতাচরণ করিল; কি করি, মহারাজ যে উপকার করিয়া-ছেন আমি তাহার কিছুই করিতে পারিলাম না; অন্তএন धकर्व त्रसूमिट इंड्रेटन महावादण्य घटनावानि ममिछः वााश्टत भागता स्तर्वाहरू समम कति। त्राज्ञी कश्टिनन यामिनिटान्नल र अपन कतिर्देख बिलाइ शाति मा, किन्छ श्रूम-वीत रयन छामानिरशत गर्भन शाहै। धहै दिनश छाहा -मिश्राक अभिता अक्षेत्रिक श्रीमान कतित्वन। कृत्म अन्तर-রাপণ প্রস্থান করিতে আরম্ভ করিলে, উর্বাণী মনে মনে কহিতে লাগিলেন, ইহাঁকে পরিত্যাগ করিয়া বাইতে প। উঠিতেছে না। কি আশ্চর্যা। যত বার অবলোকন করি-তেহি, ততই দৰ্শনস্থার আতিশ্যা হইতেছে: কিৰুপে रेशांक मृष्टिभाषत आत्मावत कति। धरेनभ जानिएड

ভাবিতে নিতান্ত অনিচ্ছা প্রদর্শন পূর্বক গমনোদ্র হই-লেন, এবং স্কুই চারি পা গমন করিয়া, লভা বিউপে আমার একাবলী লাগিয়া গেল, এই ছল করিয়া মুখ ফিরাইয়া अञ्च नश्रदन द्राकात अहतीकिक सन नावना नितीकन कतिए नागितन धरे कहिए नागितन, मिथ किय-लारथ । नजाविषेश इहेरच এই हक्ष्य अकांवनी क भूति য়া দাও। চিত্রলেখা তাঁহার আন্তরিক ভাব অবগত হুইয়া मित्रिक वनरम कहित्वन, मिर्च । धकानली हेमाटक एएकप স্থাংগত হইয়াছে মোচন করা ছুদ্ধর। উক্ষশী কিধিং কুত্রিম কোপ প্রকাশ করিয়া কহিলেন, এ পরিহাসের সময় নহে, সহচরিগণ দূবরর্ত্তিনী হইলেন। শীঘ্র খুলিয়া माउ। हिजल्या करिलन मिथ ! कुमि वात्रयात विलटण्ड বটে, কিন্তু আমার বোধ হইতেছে ইয়া কোন মতেই विभुक्त रहेवात नरहः; जटव मिथि यान अथन स्योधन कति-তে পারি। উরবর্শী, তিত্রলেখার এইৰপ বচনভর্জা ভাবণ ক্রিয়া বিবেচনা করিলেন এ ত সবিশেষ সক্লুই জানিতে পারিয়াছে। তবে ইহার নিক্ট গোপনে প্রয়োজন কি. - विटमयङः ইहात असुकृषा वाजित्तदक आसात महनात्रथ পূর্ব হওরা তুর্বট ; অভএব এবিবর দৃঢ়কণে ইহার হৃদর-अभ করিয়া রাখা উচিত। এই স্থির করিয়া কহিলেন প্রিরদ্ধি : দেখিও যেন কার্য্যকালে একথা ভুলিও না ।

এদিকে রাজা, সেই স্থালিত লতাকে সম্বোধন করিয়া কহিলেন হে প্রিয়কারিণি। তুমি প্রিয়তমার গমন সমরে মুত্রিমাত্র প্রতিবন্ধকতা করিয়া আমার মহোপকার ক রিলে। কুমি একণ অনুকূল না হইলে পরির্ভমুখী প্রেরস্থীর এতাদৃশ বিলাস দৃতি কথনই আমার অদৃটে ঘটিবার সন্তাবনাছিল না।

শ্বনন্তর চিত্রনেখা লাডারিটপ হইতে হার মোচন করিয়া দিলে, উর্বাশী, হার! ইহাঁকে পরিত্যাগ করিয়া নিভাত্তই বাইতে হইল, এই ভাবিয়া দীর্ঘনিখাস পরিত্যাগ পূর্বক রাজার মোহনমূত্তি অবলোক্তর করিতে করিতে জ্যত পহিতা বয়স্যাগণের অনুসরণে সম্বর হইলেন।

अमिरक मात्रिय द्राकारक निर्वतन कृतिल. यहाताल । ञ्चतर्भावत प्रकारणाती छुत्र्ड मानवनरगत निवनार्थ आश्रनि যে বায়ব্য অস্ত্র: পরিত্যাগ করিয়াছিলেন; সেই অস্ত্র তारामिभाक नवनमनिषदम निकिश कतिया भूनकीत তুণীরে প্রবেশ করিল। রাজা কহিলেন স্থত। রথ কিঞ্চিৎ व्यवसमित कत्र, व्यामि व्यवस्ताहन कतिराउछ। मात्रवि यथाखाः विनिष्ठा छन्त्रुकान कतित्व तास्त्रा तथः इटेट्ड व्यव-जत्र कतिराम, अवर ष्मश्रतीरक नग्नमभाज कतिश किर्छ লাগিলেন, কি আক্র্যা গ্রামার মন এমন বিচলিত হইল কেন, যত নিরুত্তি করিতে চেফা করি ততই কেবল .. त्म अन्ता अञ्चलकीत अञ्चलत्व धावमान इटेटल्ट । किछ আমার মুন স্বভাবতঃ এমন অধীর নহে; বোধ করি বিষমশরের শুরু প্রহার ভয়ে এরপ অধীরতা অবলয়ন कतिशास्त्र मरमह नाहे। याहा इक्षेक,कम्मर्भ विकि धुताका-का, त्व मक्त्र विषदा कथम काम प्राप्त क्रुकार्या इहेवात मखावना मारे, अमन विचारत जारात महना लाख ख्रामता

शास्त्र। नज्या स्ताक्ष्मा स्नामार्थ स्वाप्त अञ्चान कति-त्वन, ज्यां जिल्ला हरेट जामात्र मन निद्ध हरेट्ट ह ना। रामन ताक्षरः भी भूगात्वत ख्यां जाश थिए कतिशा ज्यश्यां उद्या व्याकर्य। कतिशा भंभनम एटल उज्जीन हर, रमस्क्रिय वह स्तास्त्रकृती जामात स्वत्र क्यां के स्वाप्ति कतिशा ज्यां करा व्याकर्य। क्रियां भमन क्रिट एहन।

### বিত্তহাৰশী ৷

#### দিতীয় অক।

नदर्शक चग्रह क्षणागमन कतिशा चीत्र थिवदामा मानवरकत्र माक्यांटा डेक्स्मी वृद्धांस भारताशास ममर वर्षना कतिशाहित्यन अवः उ९ भशुमात्र श्रेकाम ना कतित्छ उँ। शदक विटमंब अदल मावधान कतिहा निशाहित्तन। किन्छ রাজনহতরেরা প্রায়ই পরিহাদপ্রিয়; স্বতরাং তাহাদের স্বভারত চকুল হইয়া থাকে। অতএব মানবক, রাজার ज्यारमनासूयात्री वीत्रजा अवस्त्रस्य अममर्थ इहेन्ना जाविरज मानिटलन, 'এই वाकत्र्या भागत क्रमग्र एक कतिश अकारनामा व इहेटजर । अकरन जात जानीत जन-नमाटक थाका উচ্ত मटरं। कि जानि, काशत भाकादङ कथन कथाम कथाम अकाम कतिया (कनिवः, किस तालधानी-चिं बनाकीर्ग दान, नर्कां मर्कां नर्कां त्वारकत नमानम, ্রাশার্ক্সাও অবশ্য প্রবস্থারকণীয়, কি করি কোথার নির্জ্জন স্বান পাইব। এইরূপ টিকা করিতে করিতে তাঁহার স্মরণ हरेल, म्वज्न आसाम नाट्य अक याजि विजन आट्राम बाटह। सार प्राठ वकारी भर्ताटनावनात्र वााभुज শাকেন, ভাবৎ আমি তথায় গিয়া মৌনভাবে অবস্থান

করি। এই রূপ নিশ্চর করিয়া একাকী তদভিমুখে প্রস্থান করিলেন।

अमिरक बाजा डेकॅमी मर्मनिविमाविध टिविवितिनी हि-নায় একান্ত চিন্তাকুল; তথাপি যাবৎ সভামগুণে সভা-मधनी विकि रुरे । विषय कार्या वााशृज शकिरजन, উর্বাণী চিন্তা তাবৎ তাঁহাকে নিতাম নাাকুল করিডে পারিত না। কিন্তু যথন সমুদায় কর্মকলাপ সমাধানাতে বিশ্রামার্থ অন্তঃপুরে ওাবেশ করিতেন, তথন অম শান্তি इउग्ना पूरत थाकुक, वतर अवन अवस्वादस्तरे छेट्यक इहेड। अवः जाहात विहातामि नमल विषय्यहे निकृष-सुक्छ। निक्छ इंग्रें। जिनि मध्या मध्या उँकानी कि स्राप्त अयन निमध इंटेटिन (य, अक्काटन यांश्रुकान भूना इहेसा क्वन विद्वनिधित्वत मास निकल बादव अव-তান করিতেন। মহিষী তদর্শনে সাভিশয় শক্ষিতা इहेश निक शतिष्ठातिका निश्वनिकारक कहिरलन निश्व-निंदक। निवाकतदनवा मधार्थानादन्त अछ।।शननावधि मधा-রাজকে প্রায় সক্ষদাই চিন্তাকুন দেখিতেছি এবং আ-কার বিহার শয়ন উপবেশনাদি দকল বিষয়েই অয়ত্ম প্রকাশ করিতেছেন। কি জনা ইছার এভাদুশী চিত্ত-বিকৃতি জন্মিল কিছুই স্থির করিতে পারিতেছি না , বোধ कति काम कामिनी देदाँ क्रमग्रशा ्रशास्त्र। म-जूवा जनाविधातिमी हिसात अबल अधीत इहेट कथनहे **मिर्च नारे।** याश क्छेक, हेर्डात श्रियवयमा मानवक प्रक শ্যই সবিশেষ অবগত থাকিতে পারেন। কিন্তু সহত্রে

अकाम कतिवात लाक मट्टम। यनि कोमनक्राम जा-হাঁর মুখে ব্যক্ত করাইয়া জানিতে পার তাহা হইলে স-ন্দেহ দূর হইতে পারে। তড়িয় আর কোন সহজ উপায় দেখিতেছি न। ; अতএব অবিনয়ে তাঁহার নিকটে পিয়া वित्मिय कारण मधुमास बृखान सानिसा आहेम। निश्निका রাজ্জীর আদেশানুসারে মানবকের অত্থেবণে পমন করি-ল। এবং মনে মনে ভাবিতে লাগিল আমি কিৰূপে व्राक्षमहत्त हजूत जानात्मत्र निक्षे अन्तर अनुहिन अधि-না করিব। অথবা তিনি অতি অধীর প্রাকৃতি, তাঁহার निक्षे किकिए ठाजुती अवनश्न कतिरत्न स्थनाशास्त स-কার্যা সাধন করিতে পারিব। এইরূপ চিস্তা করিয়া যা-रेट यारेट रेज्छणः पृष्ठि निर्मा পूर्यक पिबिट পাইল মানবক দেবছন প্রাসাদে একাকী রহিয়াছেন। দেখিবামাত্র তথায় উপনীত হইয়া সাফীক্ষ প্রণিপাত পুর্বাক সম্মুদ্র দণ্ডায়মান হইল। মানবক সহসা রাজ-মহিষার পরিচারিণীকে উপস্থিত দেখিয়া কিঞ্চিৎ দন্দি-हान हहेत्वन এবং यथाविधि जामी: श्रदेश शृक्तक जि-জ্ঞাসা করিলেন। নিপুনিকে। এক্ষণে ভোসাদিগের সঙ্গীতের সময়, সঙ্গীত ব্যাপার পরিত্যাগ করিয়া কোথায় গমন করিতেছ? সে বিনীত ভাবে কহিল, মহাশয়! **मियीत असूमिक करम मशामातात्रहे शाम वसम क**तिएक আসিয়াছি। তিনি কহিলেন নিপুনিকে। রাজী কি আজ্ঞা क्रिंडिट्रिस ? त्र कृष्टिन महाभग्न! (मदी निर्देशन क्रांडि-ছেন বে, মহাশর আমার প্রতি সর্বনাই অনুকুল ব্যব-

हात कतिशा थाएकन, जामात क्रिंटन कथनहे निकिन्छ थाकि-তে পারিবেন না, বরং প্রতিকারের চেফাই পাইবেন স **ন্দেহ নাই। মানবক ভাছার এই** বচন প্রবণ করিয়! **ष्यक्रिया সংশ्वाकः इरेट्सन** अवश खिळामा क्रिट्सन মিপুনিকে! রাজী সহসা আমার প্রতি এতাদৃশ অসদৃশ আদেশ করিলেন কেন? বুকি বয়দ্য তাঁচার প্রতি কিছু প্রতিকুলাচরণ করিয়া থাকিবেন। সে কহিল মহাশ্য বিমন किছू नतः; महाताल पिन यामिनी त्य कामिनीत कलानु-थारन निवंछ थारकम अक मिन स्पष्टे कामिनीव मारम **प्रिक्त मध्यायन कतियाष्ट्रिलन, जिनि मिटे लाज** श्वनन দারা গঢ়োরুরাগের স্পাষ্ট আবির্ভাব অনুভব করিয়া ङ्वावधातमार्थ श्राप्तमात निक्षे श्रामातक शाकाहेबाह्हन, একণে অনুগ্ৰহ প্ৰকাশ পুৰ্বক সৰিশেব বৰ্ণন। করিতা রাজ্ঞীর সংশ্রান মানদের সন্তাপ পরিহার করুন। মান-বক চতুরা পরিচারিকার বাক্চাতুর্ঘা পরিজ্ঞানে বিযুদ इहेशा भटन भटन ভाविट्ड वालिटलन, यनि वसना छाहुन रिश्रांभानी इहेशा अञ्चर्धः अञ्चल्त मत्या असंसी इहा छ প্রকাশিত করিয়াছেন, তবে আমি আর কেন র্থা এই তুর্ভর রহস্যভার বহন করিয়া আত্মাকে আয়াসিত করি। বিশেষ্ত এইকলে গোপন করিয়া রাজমহিষীর রোধা-স্পদ হওয়া ব্যাতীত আর কিছুই বিশেষ লাভ দেখিতে-ছি না। याहा इंडेक, धकरन अकान कताई आमात विस्था হইতেছে। এইরূপ নিশ্চয় করিয়া কহিলেন নিপুনিকে। অপ্যর৷ জাতিতে উর্বাদী নামী এক পরম ৰূপবতী রমণী

আছে শুনিয়া থাকিবে: বয়স্য তাঁহারই মাননোমাদিনী নোহন মূর্ত্তি অবলোকন করিয়া নিডান্ত মুক্তমন্তারা মহীনীর প্রতি তাদৃশ অন্যায়াচরণ করিছেছেন। রাজীর কথাইবা কি কহিব, পূর্বের আমার সহিত যেরপ হাস্য পরিহাসে কালাভিপাত করিতেন, এক্ষণে তাহার কিছুই নাই। কেবল সর্বাদা অনামনক হইয়া থাকেন, তাঁহার তাদৃশ চিত্ত বিক্তি দর্শনে আমি নির্ভ্য় উৎক্তিত ও শশক্তিতে কাল যাপন করিতেছি এবং আহার বিহারাদি সকল বিষয়েই নির্গুনাই হইয়াছি; কির্পে তাঁহার উৎক্তি। দুর করিব এই চিন্তাতেই নিয়ত চিন্তাকুল হইয়াদিন দিন ছুর্বাল ও কুশ হইতেছি।

निश्वनिका खनिवामार्ज क्रिकालाक करिए का निश्वनिका खनिवामार्ज करि एए एक निर्माल का निवास का निर्माल का निवास करिया करिया

কথারই উত্তেজনা করা হয়; অতএব অবিকৃত চিত্তে জ ক্লান্ত্রিম প্রণয় প্রদর্শন করিয়া সম্ভূট রাখিতে চেটা করাই তাঁহাকে প্রকৃতিস্থ করিবার মথার্থ উপার। জনন্তর নিপু-নিকা মথাজ্ঞা বলিয়া প্রণাশ করিয়া প্রস্থান করিলা

अभित्क मंत्रपछि भर्माधिकत्वन कार्त्या द्यानुष्ठ न्यारहम এমন সময়ে, বৈতালিক মধ্যাক্সময়স্থাতক স্কৃতিপাঠ ক-রিতে লাগিল—মহারাজ। জগত প্রমোদ প্রদ্রিতা ভগবান সবিতার সহিত আপনার কোন বিভিন্নতা নাট। দেখুন, मियाकत निककतमाता उत्भावानि विनाम कतिहा इम एवस ममल जीत्वत श्रामा वर्कन कंदतन; मश्राह्म यथाविधि শিক্ষা দান করিরা প্রস্থামগুলীর অজ্ঞানতি:মিরের সমূ-लायुलन क्रिटिड्डिन। जिनिष्ट एयम ज्जनभश्यस्य মধ্যস্থলে আরোহণ করিয়া মুগুরি মাতা বিশ্রাম করেন; সহারাজও মধ্যাত্র সময়ে কির্থক্ষণের নিমিত্ত বিশ্রাম ক্-রিয়া গাকেন। মহারাজ সংপ্রতি মণাফ্কাল উপস্থিত, किनमिं भगनमधावखी इहैया अथत कितरण किश्चस দাহ করিতেছেন, চাতকগণ আতপতাপে সাতিশর তাপি-তি হইয়া উচ্চৈঃস্বরে জল প্রার্থনা করিতেছে, শুক শ্বন রিকা কোকিলাদি ৰিহুগকুল সম্ভাপিত হুইয়া নিকুঞ্বনে প্রবেশ করিয়া মগুরস্বরে আপন আপন আনুরিক ভাব প্রকাশ করিতেছে, হংস সার্য বক্ত গ্রভৃতি জলচর বিহ্-সমগণ সরোবরের উত্তপ্ত বারি পরিত্যাপ করিয়া তীর নবিনীর স্থশীতল ছায়ায় অবস্থান করিতেছে, পথিকগণ নিতাত আন্তও ঘর্মাক্ত কলেবর ছইয়া স্থশীতলছার তরুমূলে উপৰিষ্ট হইয়া প্রান্তি দূর ক্রিতেছে, রুঘকেরা
নিতান্ত ক্লান্ত ও কর্ষণ হইছে নির্ত্ত হইয়া হালিক গণের
নক্ষন মোচন ক্রিয়া দিলে তাহারা ক্ষুৎপিপাশায় কাত্র
হইয়া স্থলিত গমনে ভবনাজিমুখে ধাবমান হইতেছে,
বরাহকুল তুর্কিমহ গাত্রস্থালায় আহার পরিত্যাগপূর্মক পললশারী হইয়াছে: মহিবগণ প্রথম রৌক্ত তাপে সন্তাপিত হইরা উর্দ্মুখে নদীতীরে প্রস্থান ক্রিতেছে, হস্তিযুখ সলিল মধ্যে সমস্ত শরীর নিমগ্র ক্রিয়া কেবল শুও
দণ্ড মাত্র উর্গ্রোলন ক্রিয়া রহিয়াছে এবং হরিণগণ
আহার বিহার পরিহার পুর্কেক তর্মজ্যায়ায় সমিধিই হইয়া
বিশ্রাম ক্রিতেছে; এখন মহারাক্ষের বিশ্রামের সময়
উপস্থিত।

নরপতি বন্দিগণের মাধাাত্নিক স্তুতি পাঠ অবণ করিয়া বথার্থই অবকাশ সময় উপস্থিত হইরাছে বিবে-চলা করিলেন এবং মধুরবচনে নিজ্ঞ পারিবদবর্গকে বিদায় করিয়া ভবনাভিত্যথে গমন করিতেছেন, এমন সগয়ে উর্বাণা চিন্তা অবসর পাইয়া বলপূর্বক তাঁহার হৃদয় মন্দির অধিকার করিলে মনে মনে ভাবিতে লাগিলেন। হায় কি আশ্র্যা! যে অবধি আমি সেই জগনোহিনীকে নরনগোচর ক্রিয়াছি ভদবি তিনি আমার হৃদয়বাসিনী হইয়াছেন। কিন্তু কিরপে আমার হৃদয়বাসিনী হইয়াছেন। কিন্তু কিরপে আমার হৃদয়াভান্তরে প্রবেশ করিলেন কিছুই জানি না,বোধ করি অক্সণ কন্দর্প অন্ন-বরত্ব শর প্রহারে আমার বক্ষাহল বিদীর্ণকরিয়া তাঁহার প্রবেশদ্বার প্রস্তুত করিয়া দিয়া আমাকে এই অননাবার্য্য

# দ্বিতীক্স আৰু 🕬

অন্তর্দাহে নিরন্তর দগ্ধ করিতেছে। এইরূপ চিন্তা করিতে कतिटल बाहिटलर इन अमन नमदश, मानवक लाहाटक शृहा-जिमू<del>थः स्मिथिता मन्मृत्य উপ</del>ष्टिত श्रेरनम । कि**स** ताका উর্বাণীটিভায় এমন নিমগ্ন, যে ভিনি নিকটে উপস্থিত হইলেন তাহা জানিতে না পারিয়া পূর্ববৎ গমন করিতে লাগিলেন। মানবকও ভাঁহার পশ্চাৎ গমন করিতে করিতে মনে মনে ভাবিতে লাগিলেন হার। আমি এতাবং काल पर्याच हेरीत नमिष्ठगाहात गहिए छ । ज्यापि, महायगापित कथा पूरत थाकूक, कानित्छ । शिद्यन ना । বোধ হয় এইরূপ স্বধীরতাচরণ করিয়াই মহিয়ীকে তাদৃশ মনঃপড়ীয় পীড়িত করিতেছেন। এই প্রকার চিন্তা করিতে-ছেন এমন সময়ে, দহ্দা ভাঁছার প্রতি দৃটি পাত হও-রা**তে নরপতি সস্ত্রুমে স্বাগতা**দি ক্রিজ্ঞাসা করিয়া ক্রি লেন বয়স্তা। এতক্ষণ কোথায় কি ৰূপে অবস্থান করিতে-ছিলে? রহস্ত রক্ষার কোন বিল্ল উপস্থিত হয় নাই ত? এই কথা শুনিয়া মানবক মণে মনে ভাবিতে লাগিলেন-तुकि निश्विका आभारक श्रवक्षमां ও উक्षमी वृद्धान्त मक्क প্রচারিত করিয়া থাকিবে; নতুবা বয়স্ত প্রথমেই একথা জিল্ঞানা করিবেন কেন? এইৰূপ ভাবিয়া উত্তর না দিয়া মৌনভাবে রহিলেন। নৃপতি তাঁহাকে উত্তরদানে পরা आ श्र (प्रथिया कहित्सन वयस्य ! स्त्रोनी इटेगा विटिन (कन? বোধ করি রীতিমত রহ্ফা রক্ষা করিতে, পার মাই। মানবক কহিলেন সংখ ! তাহা ভাবিও না ৷ পাছে রহক্ত প্রকাশ হয় এই আশসায় আমি এমন মৌনাবলগন করি- রাছি যে ভোমার সহিত আলাপে প্রবৃত্ত হইতেও অনেক विद्वान विदिष्ठ इरेट्ड । त्राक्ष केहिटन व्याखं! বৈধ্যাশালী না হইলে তোমার সাক্ষাতে তাদৃশ অঞ্জকাশু विषय अकान कतिय (कम? म याहा इंडेक, वन पिथ, একণে কোথায় পিয়া কি উপায়ে চিন্ত বিরোদন করি ? নানবক কহিলেন চল পাকশালায় প্রবেশ করিয়া নানা-বিধ স্থার মিন্টার ভক্ষণ স্থার। উৎকণ্ঠাপনোদন করি। রাজা বাস্পত্মলিত বচনে কহিলেন, হাঁ, তথায় অভিলবিত वन्त्र लाटक राजात मण्यू वं मरखादयत मसावन। वरहे. কিন্তু অস্থলত বস্তু প্রাথয়িতা আমার আত্মা কিরপে পরিতৃপ্ত হইবে তা**হাই ভাবিতেছি। এখন মানব**ক ভাবি-লেন ইহাঁকে পরিহাস বা অনা কোন উপায়ে স্কুস্থ করিবার অবসর অতীত হইয়াছে। সমাগমবিষয়িণী কথাবার্ত্তা শুনিলে, কথঞিৎ ক্রিঞ্চিৎ স্বাস্থ্য লাভ করিতে পারেন। এইৰূপ ভাবিয়া কহিলেন বয়স্য। চিন্তাকুল হইও না, অচিরাৎ তাঁছার সহিত তোমার সমাগম হইবে। ताका किन्छामा कतिरमम नरथ ! जूमि कि यूक्ति अवनयन করিয়া এমন আস্থাস প্রদান করিতেছ? তিনি কহিলেন আমি এই যুক্তি অনুসারে কহিতেছি, কোন ব্যক্তিই তোমার এই মোহন মূর্ত্তি একবার অবলোকন করিলে বি-মৃত হইতে পারে না। বিশেষতঃ গ্রীজাতি পুরুষসৌন্দ-র্দ্যের নিভান্ত পক্ষপাতিনী; অতএব বোধ হয় তিনি তোমা-क्र अक्रवादत जुनिए भातित्वन ना। नत्रभि उाँशत এই অকিঞ্চিৎকর কথা অবণ করিয়া দীর্ঘনিশাস পরিত্যাপ

शृक्षक कहित्वन वयुगा । जुमि छाहारक रमश्र नाहे, अ बना আমার এই ধৎসামান্য সৌন্দর্য্যের এত গৌরব করিতেছ। তাঁহার কথা অধিক আর কি বলিব দেই অলোকিক ৰূপ लावना हिन्छ। कति**दलेश भरन अकूल** जानरम्नामस इस । मान-বক কহিলেন বুঝিলাম দে দ্রীরত্ন অবলাজাতির পরা-ভব স্থান। নতুবা তোমার মনে বিম্ময় উৎপাদন করা मामामा तमनीत कर्या नत्ह। ताका किह्टलन मृद्ध ! (म ত্রিভূবনললামভূতা ললনার বিষয় যাহা বর্ণনা করিয়াছি, তাছাতে তাঁহার রূপসম্পত্তির শতাংশের একাংশেরও পরিচয় দেওয়া হয় নাই। ইহাতে মনে কর অঞ্চ প্রত্য-ক্ষের বর্ণনা কিব্রুপে সম্ভাবিত হইতে পারে: ফলতঃ, তিনি আভরণের আভরণ, প্রসাধন বস্তুর প্রসাধন ও উপ मारनत छेलमान जृमि। मानवक कहिरलन नत्थे। टामात অমুৰূপ কামিনীতেই অভিলাষ হইয়াছে। মানব লাভিতে স্থরকামিনীসম্ভোগাভিলাৰ কেবল তোমাতেই সম্ভবে ।

অনন্তর নরপতি সে কথায় অযাত্র প্রকাশপূর্ধক কহিলন বয়স্য। সে যাহা হউক,সপ্রতি শীতল স্থানে অবস্থান ভিন্ন অন্তর্গান্ত শান্তির আর কোন উপায় দেখিতেছি নাঃ অতএব আইস প্রমদোদ্যানে প্রবেশ করি। এই কহিয়া উভয়ে প্রমদবনোদেশে প্রস্থান করিলেন। ক্রমে ক্রমে প্রমদবনের সনিহিত হইয়া মানবক কহিলেন স্থো! কেহ কহিয়া দিতেছে না, তথাপি পুল্পারাগবাহী স্থানীতল মলয়ানিল দারা প্রাই প্রতীতি হইতেছে আমরা প্রমদ্বনের সমীপে উপনীত হইয়াছি। আইম, প্রবেশ করি,

26

क्षेत्रे बिन्ना छेख्या अत्यभ क्रियाना अत्यभिन्ना मिथ-**रमन, तर्कृम जनामाहि शामश्रम कम खरत खरन** हरेशा ্রহিয়াছে, মুদ্লিকা মালতী যুধিকা মাধবী প্রভৃতি পুলা সকল প্রস্কৃতিত হইয়া রম্ণীয়**্শোভা বিস্তার** করিতেছে, মধুপাবলী মধুলোভে গুন্ গুন্ খুরে পুলা হইতে পুলা-ন্তরে পতিত হইতেছে। কোকিলকুল রুক্ষশাখায় বসিয়া মধুরস্বরে গান করিতেছে। কলাপিগণ কেকাধনি করিয়া আফ্লাদে নৃত্য করিভেছে, গুক শারিকাদি বিহৃত্বম সকল আনন্দে মধুর ধ্বনি করিভেছে, সরোব্রে কুমুদ কংলার কোকনদাদি জলজ কুস্তম বিকশিত হইয়। নয়নের অনি-र्वाहनीय जानतन्त्राद्यापन कतिरंग्रह, मत्या मत्या मद्या গণ কথন উন্নায় কখন বা নিময় হইয়া আবৰ্ত্ত উপস্থিত क्तिएउए । १९म मात्रम वक एकाबाकामि जनएत विरुक्षम कूल मध्या मध्या इर्सप्टाक मध्य क्रिटिए हि, मलसमाङ्ग्र নানা পুজের পরাণ বহন করিয়া চতুর্দিক আমোদিত করিতেছে। তথার যোগিগণেরও মন বিরুত্ও চঞ্চল হইয়া উঠে। নরপতি একে উর্বাদীবিরহে নিতান্ত কাতর, তাহাতে স্পাবার এই ভয়কর স্থানে ভ্রমণ করিতেছেন, এই অবসরে বিয়োগবেদনা তাঁহার সর্বাঙ্গব্যাপিনী হইলে काख्य बहरन कहिए नाशिरमन मर्थ। मरन कतिशाहिमाम अभवत्न अद्वम क्रिल छाएभत अदनक ममछ। इहे-বেক, কিন্তু কেমন অদৃক্টের দোষ; উত্তরোত্তর বৃদ্ধিই क्हेर्ड वाजिल। (यमन लाटक शमनद्भूम निवातनार्थ यानाद्राह्ण कतिया जनभर्य गमन कतिएक ध्रवृत्त इस,

### विशेष भक्र।

পরিশেষে প্রতিকৃল অবাহ জারা প্রজিহত ছইয়া নিতান্ত वाक्त इरेग्रा উठि, आकि आमात ठिक दनरे नेनारे गर्छ-য়াছে। এই কথা গুনিয়া মানবক জিজাসা করিলেন বয়স্য । এমন রমণীয় স্থানে এরপ বিপরীত কথা কহিতেছ कित ? अणि मीन विकेटन किश्तिम मरथ ! जूमि कि जान मा रव अक्सन मकतरकडू अजीव मूल्यम, नेहरकरे वित्रही मिश्राटक शीष्ट्रम कतिया थारक, जाहारण व्यामात अनग्र मि-ভাষ্ট চূর্লভ বস্তার আর্থনা করিতেছে, বিশেষঃ এই প্রমদ वरन वमलबाक विकासमान, शार्टन शारन महकावम अर्बी वि স্তার করিয়া ভাহার সম্পূর্ণ সহায়তা করিতেছে,এই নিমিত্র নিতান্ত অশরণ হইয়া ঈদৃশ অসদৃশ ভাব প্রকাশ করিতেছি। मानवक कहिलाम, वस्ता । अठ अधीत हहेएउছ दकन ? मत्नाजरवत अक्षे श्रुव बंदर एक, वित्रहीनित्वत मत्या এক জনের প্রতি অমুকুলতা ও অন্যের প্রতি প্রতিকুলতা-চরণ করিয়া থাকেন। আমার বোধ হয়, তিনি তোমার मत्नातंथ - निक्षि विषद्ध अवसारे महाम्रूछ। कतिरुटाइन । नत्र शिक किट्टिन माहा इंडेक, बाक्यत्वत करभाध वाका 'শিরোধার্য্য করিলাম। এইরূপ কথোপকখন করিতে করিতে উভয়ে ইড্ডেভ : অমণ করিতে লাগিলেন।

मानवक छेम्। दिन वस्काणीन भाषा निर्नीकः। कृतिश धानिकः मदन कृदिलम वस्त्रा। वस्त्र समानदम कानदिन दिक्रमन तमगीस्रा कृष्णिस्याद्धः। नत्रशिक् कृष्टिलम स्रोधः। कृषिशाद्ध वर्षे, किन्द्र धानाशि वास्त्रीः भाषात समाक धाविश्रीव इस नाहे, थे मध्ये कृतवक श्रूटकात छेख्य शाद्ध

नीकिमा बश्चक अवश्रक स्त्रमारे अवश् निद्राजारन शांचेल বর্ণের আজা একার পাইতেছে; অচিরাৎ লৌহিতা थवर गर्कातमञ्जतीतक मण्यान भवात स्था नारे, रेशाटक रवाश्र संग्रही संस्कृति बाला ७ रघीवरमञ मिक्षशास व्यवश्थि क्रिटिएएंन है मानवक हाति निरक দৃষ্টিপাত করিয়া কারিলেন বয়সা৷ যথার্থ অনুভব করি-য়াছ, অন্যাপি বসন্তকালীক স্থুত্ৰীকতা সন্ধতঃ সংখারিত हर नाहे । याहा हड़ेक, आयर्त आहमक सान क्यान कविट जिल् कित्र स्मान विश्वाम कता छेठिछ। े आहेम कहे मन्म अवसी गांधवीलामधाल स्नीडन नीनकां मिनिना समत-গণের পদভরচ্যত কুমানমূহে মুশোভিত হইরাছে; তথায় উপবেশন করিয়া পাশ্ব লতিকা সকল অবলোকন कड़िट्ड कतिट्ड উৎकर्श विटमान्न कति। त्राका अनिया भीर्य निर्मात श्रांतिकाम कतिया व्यक्तिन मृद्ध । त्महे सुर्विकानिमीत अवस्थाकिक कारका जिन्न अना दिवान विषया व्यामात नयमः পतिकृष्ण एत ना ।.. यथन शहम মনোরম কুম্বনেডিভা লকা দকল দেখিতে মাই, তখন धरे क्थंति नग्नम्यूनंग निखाय अनिका अपर्मन शूर्यक निवृक्त स्रेशा रमरे मानरमांशानिनीत स्वार्किनी मृति पर्मना-র্থ একান্ত ঔৎস্কার প্রকাশ করে; জতএর জন্যবিধ व्यत्मालम भावा आमात रूपग्रदक मञ्जूना कतिएल हिन्दी कित्र-বার সময় অতীত হইয়াছে। সংখ ় আমি আর কি সে बाश मध्रती (पथिएड शाहेव। मानवक क्रमकाल हिन्छ।

### দিতীয় অহা

করিয়া কহিলেদ বর্দা ক্রেমান ক্রিমান বের্মা হইতেছে দেই সুরবিলাদিনী সমাধি করে ক্রেমান ক্রিমান ক্রিমান করিবলাল ও পরিতাপের বিষয় অবগত হইনা ক্রেমান ক্রিমান করিবলা নরপতি কথা কত দুর কার্মাকাকী বলা যায় না; কিন্তু আক্রেমান অতীব দ্র্মান এই যে সেই প্রেক্তিবলার সহিত সমাগম অতীব দ্র্মান ক্রিমান অভীক ক্রিমান মন অকারণে সেই রূপ আনদ্দনীরে নিম্মা হইতেছে; ইহার বিশেষ কারণ কিছু বলিতে পার?

এইকপ কথোপকথন চলিতে লাগিল, এদিকে উর্বাদী রাজগরিতাাণ দিবসাবধি সকল বিষয়ে নিস্পৃহ হইরা কেবল কিরপে ভূপতির সহিত সমাগম হয় এই চিতাতেই নিয়ত চিন্তাকুল ছিলোন। ক্রমশং রাজদর্শনলালসা বলবতা হইরা তাঁহাকে অতান্ত ব্যাকুল করিলে তিনি তাঁহার দর্শনের উপায়ান্তর না দেখিয়া স্বয়ং গমনোলুখী হইলেন, এবং প্রস্থানাচিত বেশ ভূষা পরিপ্রাহ্থ করিতে লাগিলেন ইহা দেখিয়া চিত্রলেখা জিজ্ঞানিলেন সখি। কোথাও ঘাইবার বিশেষ প্রয়েজন দেখিতেছি না, অথচ বেশ বিন্যাস করিতেছে। বল দেখি ইহা কোথার যাইবার উদ্যোগ স্উর্বাশ লক্ষার নম্মুখী হইরা কহিলেন স্থি। মনে করিয়া দেখ, সেই হেমকুটালখরে আমার একাবলী বৈক্রমন্তিকা লতাবিটপে বিলম হইলে আমি কাতর বচনে ছাড়াইয়া দিতে কহিয়াছিলাম, তখন ভূমি পরিহাস পূর্বক

### स्कित्य देशी

गरकड़े विश्वक होता मा अफरत रम मनन कथा धक-कारत विश्वकत्तर के किन्द्रवर्श समुनात श्रामिश । अ अपन राजिता ना मह देवता कुरियास देशा वि महाताच शुक्रवता पर्नाद्वतं महत्वादमार्थः केर्क्तणी व्यवसार नवपृथा दहेगा ज-পরিস্কৃট বিদ্যান করিলের, প্রিয়ন্ধি। ছংখের কথা কি करिन। कड अकान बुकारेनाम, कान मटलरे जामान मध रुमग्न अभव हरे द्वामा मिड्डिना हरेग्रा आमारक वृद् অবলাজননিদিত নীচ পদ্মীতে পদাৰ্পণ কুরাইতে প্রস্তুত इरेगाए। विकालथा कहिरतान निथा। देशानिजा जिन्म-नीप्त भर्थ नरह ; ज्याकाजित्व ज्यानकत्क धरे भर्थत পথিক হইতে দেখা যায় 🏣 যাহা হউক, অনুনুৱক্ত ব্যক্তি প্রতি অনুরাগিনী হ**ইলে মনগ্রকাঞ্জ পাইতে হয়; অতএ**ব প্রথমে যে কোন রূপে উচ্চার মানরিক **ভা**ব অবগত হওয়া উচিত। তাহা কি বিহিত বিধানে অনুষ্ঠিত হই-शाष्ट्र वेदानी विस्तान मश्चि । आमारक, कांशाक्छ मिठाकार्ता, नियुक्क कतिरंछ इस मारे। मर्भन मिवनामि रुपग्न स्मरे ज्ञादमरे जनज्ञान क्रिडिएट्ट जन्द जनगाउ यथने তাঁহার আমুগতা করিভেছে, ভাহাতে বোধ হয় সে বিষয়ে আর কোন সংশয় উপস্থিত হইতে পারে না। অত-এব অকরণ কন্দর্গ জামাকে নিভাক অসহার দেখিয়া এই अनासाहिकारमें ध्वेहक किति छह। अक्रात যাহাতে নিরাপদে তথার উত্তীর্ণ হইতে: প্রারা যায়, তা-रारे हिक कता कर्चना रहेशाहा। विजातनथा कहितान मुश्रिः

## THE PRINT

fraince elected winds to the wind to the কেশীকত অভ্যানের পদ্ধ বেরাক স্ক্রান্তিগতক অপ-ताकिका माहम त्या किताबिका विकास का किताबिका जणाता भरीक धारुतम् **अस्ति**क कि दुनवस्य कि सामद्रश्नन कि मल्यानन मक्टनत्र मुखिन्य अविक्म कतिए नम्ब एरेव। केसेनी करिएमन गर्वि । नक्तिर कानि किछ कानी-वृखीख नातन इरेटन बामात नातुनाम नतीद्वत लानिङ ওর্ক হইয়া যায় ও অন্ধে নিজার আভিত্ত হইয়া হিতাহিত बिटवहनाश्रमा देवेटक देवा किन्द्रलाथा कश्टिलन, जनवाम স্রপতি আমানিবের ক্তি কেরণ অনু গ্রহ প্রকাশ করিয়া থাকেন, তাহাতে এক কাণের বিদিত্তও কোন বিষয়ে অণু-माज विकास मजावनी। मारे दिल्लामणः सामास भूटर्गम्बरमन विलाकन कतिएव नक्षे हिस्तिह अवमान स्टेटव ; अछ धन আর র্থা বাক্যালাশেক্ষালক্ষেপ করিবার আবশ্যক নাই भारेम অবিলয়ে अञ्चान कति । अरे विलश उउटत विमा-नाटबार्व शृक्षक श्रद्धान कविद्यान । कटम कटम बाजनम নের সন্নিহিত হইয়া, িচিত্রলেখা জীতিবিকারিতবদনে कंट्रिलन मधि। थे दस्य अक्षामभूनामक्रदमत छीटत रहामात প্রিয়তমের আবা**ণ্ডব**র্ন জ্বাজিত হইতেছে। উর্বাদী जरे कथा अमितामाक में महिमाएटम निहीका कतिहा करिटनम, मर्का कृषिटक अस्त आमान मृक्टिलाहत रत ना : বোধ হয়, বেন স্বৰ্গভূমি স্থানাত্ত্তিত হইয়া এই স্থানে निटविष्ण इंदेशारक। किस देश रमित्रा ताजमर्गम मानमा करम क्वकी इहेग्रा यामात स्पग्नक निडाड বাৰ্থী ক্ষিতিভাৰত বল শেকিপ্ৰকণে কোন্ ভাবে মহা-বাৰতের কৰি জ্বতিব চিবালেথা কহিলেন আইস এই সম্পূৰ্ণকাৰী জনস্বাৰে স্কৃতিৰ ক্ষিয়া ,অনুসন্ধান করি। এ কাম সাতি ব্যন্তাৰ কোন ভাৰি, এই ভানেই তাঁহার কমন বাইক।

भेरे दिन के निर्माण करने करने करने अवस्त कर

এ দিকে মানবক কহিতেছেন বয়সা। আমি তোসার প্রেরসীদর্শনের এক অভি অনারাসলভা উপায় নির্নারিত করিয়াছি। উক্দী গুনিরা বিশার প্রকাশপূর্কাক চিত্র-দেখাকে জিজ্ঞাসা করিলেন নির্দ্ধিই ক্রমতীতলে কোন্ কামিনীর এমন সৌভারা, বীহার সহিত সমাগন বাসনায় ই হাকেওনানা উপায় চিন্তা করিতে হইতেছে। চিত্রলেখা উত্তর করিলেন স্থি। সংশ্যারাত হইবার প্ররোজন কি? नगानि जननम् स्थारमङ्ख्यास्य हरे छ जातिस्य। उद्योगे किरितन मिने। शाद्ध हे रात जगानेनुतान जन-जन कितिमा निजाल सम्बद्ध स्थार्थ हरे छ । नगानि जननमन स्थित सामग्र हरे छ ।

রাজা উর্বাহিত্যার লাল্ডেনের হিন্দ বিভাগত দানিবক উত্তর পাইলেন না; উথেকে ক্রিডেলের বিভাগত দেখিলা পুনর্বার বিলেগ প্রয়ত্ত সহকারে ক্রিডেলের দিয়েল সংখ্। চিন্তার এমন ক্রিটিছেলের ক্রিটাছিল এই লগাও ভোমার হলমকম হর নাল ক্রিটাছিল এই লগা তাহার কর্ব-কুহরে প্রবেশ করিবালার ক্রিটাছিল এই লগা তাহার কর্ব-কুহরে প্রবেশ করিবালার ক্রিটাছিল এই লগা তাহার কর্ব-কুহরে প্রবেশ করিবালার ক্রিডেলায় ছইয়া কহিলেন সংখ্। বল ক্রেটেলেনায় ছিয় করিয়াছ ? মানবক কহি-লেন সংখ্। কিয়্তুক্তলার ছিয় করিয়াছ ? মানবক কহি-লেন সংখ্। কিয়্তুক্তলার ছিয় করিয়াছ ? মানবক কহি-লেন সংখ্। কিয়ত্ত্রার প্রতিক্রিড করিয়া ছল্পনে এক চিত্রপটে তাহার প্রতিক্রিড করিয়া ছল্পনে চিন্তবিনাদন করে।

এই কথা শুনিয়া নারপতি দির্ঘ নিশ্বাস পরিত্যাগ পূর্বক কহিলে সথা। তুমি যাহা কহিলে তাহা বিনোদনের যথার্থ উপায় বেটে কিন্ত আমার ভাগ্যে নিতান্ত সূর্দট; যেহেতু সূর্বিন্ত বিষম বাণে আমার শরীর জর্জারিত হইয়াছে। অন্তর্জ শরীরে নিদ্রাবেশ অমন্ত্রাবিত : মুক্তরাং স্বপ্লের প্রত্যাশা পরিত্যাগ কর। আর যদিও আমি কর্পণিৎ তাহার প্রতিরূপ চিত্রিত করিতে পারি, তথাপি দর্শন হওয়া কঠিন; কারণ সেই অলেকিক রূপলাবণা

কই কথা শুনিয়া চিত্রইক্র উর্কেশীতে কহিলেন স্থি।
মহারাজের অনুরাম্প্রক্র বঁচন বিনাগে শুনিলে । উর্কেশী
কৃতিলেন শুনিলাম বঁটে, কিন্তু ইহার উদ্দেশ্য ছির না হওয়াতে আমার অন্তঃক্রণ বিশ্বস্ত হই তেছে না ।

মানবক রাজানে সংখ্যাপন করিয়া কহিলেন নার ইছা অপেকা মহল উপার উলারম করিছে লামার সামর্থানাই; নরপতি কাতর বচনে কহিলেন বর্ষা। যে কপ অসুলভ বস্তুতে অভিলাম করিয়াছে, ভাষাতে পরিভাপ জিল আর কোন মুলভ উপার চদ্যিতেছি না। সংখ! জুল থের কথা কি কহিব যে আলাভিমানিনী আমার আন্তরিক মাতন। অনিয়াত জানিতেছে না এবং সমানি ছারা আ মাকে একার অনুরক্ত বুকিয়াও নিভান্ত উপেকা অসুসনি করিতেছে, ভ্রাল্মা কন্দর্শ আমাকে সেই নির্দ্ধারই প্রথম্যানা কবিল। বুফিলান, অকরণ মনোভন আমাকে যাবজ্ঞান এই ছুল্মহ ক্লেভাগী করিবার মানসে এই চাতুরী অবলম্বন করিয়াছে। আমার এই মর্মাবেদনার অবসানের সম্ভাবনা নাই; স্বতরাং ভাহারই মনোবাঞ্চা পূর্ণ হউক।

উর্কাশী রাজার এই রপ আক্ষেপাক্তি প্রবণ করিয়া স্লেছাত বিচনে কহিলেন প্রিয়সখি! এ কথা আমাকেই লক্ষা করিকেছে: কিন্তু কেমন আক্ষর্যা দেখা, আমি যাহার নিমিত্ত কুক, শীল, লক্ষায় জলাঞ্জলি নিয়া এই অবলাজননিদিত পথে পদার্গা করিয়াছি, তিনিই আ বার আমাকে অনুরাগণ্যা ভারিয়া কত প্রকার ভংগনা করিতেছেন। ইছা শুনিরা শীল্ল সম্মানি হইয়া আখা-পরিচয় দিতে আমার অভ্যন্ত বাসনা হইছেছে কিন্তু রাজ্ঞা সে বিষয়ে প্রবল প্রতিবন্ধক অভ্যন্ত প্রধান এক পরিকা দারা ইহার জম ভঞ্জন করি। চিত্রলেখা কহিলেন ইছা যুক্তিবিরুদ্ধ নহে।

ा अमस्त्र हिसानी कर मत्नामक शक्तिका अन्ना कतिया রাজনমাথে নিমেশ করিলের। মানবক নেই ভূলপত্র मिथिया गर्न निर्माक खरम मुक्किकिट्छ कहिएलन मर्थ । (मर्थ काथ) इटेड्ड वरे जूककारिटर्गक छेपछि रहेत। নরপতি নিরীক্ষণ করিয়া কহিলেন বয়সা। ইহা ভুজক-নিমোক নহে, অক্ষান্তিত ভূ অপত্র বোধ হইতেছে। তথন मानवक कवित्तन मरथ । त्वाव इह, महाकू जावा देवनी ভোমার বিলাপ ও পরিভাপ শ্রবণ করিয়া, অসমোন্য অ ক্রতিম অনুরাগের চিহুস্বরূপ এই পত্রিকা প্রেরণ করিয়া थाकिरवन। नव्रशक्ति कहित्तन वसमा। दिनत्वत अमाधा कि-षूष्टे नारे। **अरे कथा ति**न्या डाहा शहा कवित्तन अवः शांठ कतिता आख्वानिक इटेश कहित्वन मत्थ ! कृषि यथीर्थ असुख्य कतियाहः, इंश ब्लायमीत अनम् পত्रिकारे वर्षे। मानवक क्लोकुकाकुनिष्कामत्त्र कहित्तन भरशः हेशहष् কি লিখিয়াছেন শুনিতে অতাস্ক বাঞ্চা হইতেছে। নরপতি পাঠ করিতে আরম্ভ করিলেন " স্থামন্ আমি আপনার भरनारवषना कानिरा है। वाशनि महा कहिएल

#### - जिस्का सार्व भी ।

পাত্রের, কিন্তু স্থাপনার সভ্রেত্যকাজিনী হইয়া যে যাতনাম দিন মানিনী, স্কিনাহন করিতেছি তাহা কেবল আমার
স্করাস্থাই আনেন স্ক্রিক স্থান কি নিবেদন ক্ষরিব;
পারিকার্ডস্থান, সামার-বিশ্বন বোধ হয়, এবং নন্দনননস্মীর্থ প্রক্রিক স্থান্ত ক্রিকে করিয়া সামাকে
নির্ভার দ্বা, করিতেছে গ্রে

উর্বাণী সশৃষ্ক চিত্তে কহিলেন স্থি। ইছা পাঠ করিয়া নরপতি কি ক্ষান্তন স্থানার সন্দেহ হইতেছে। চিত্রলেথা কহিলেন অনি আন্ত্রপ্রথাবিমানিরি। এখনও ভোমার সন্দেহ তঞ্জন হইল না? ইহার এই ক্ষান্ত ক্ষাশারীর দারা স্থায় প্রতীতি হইতেছে নে ক্ষান্ত্রাগাই সদৃশ ক্ষাতার প্রথান কারণ।

মান্ত্ৰক উর্মানীলিপিত পত্রার্থ ক্ষরণত ইইয়া পুল কিতবদনে কহিলেন বয়ক্ত। ভাগাক্সমে একণে তোমার উর্মাণীপ্রান্তর এক বিলক্ষণ আশ্বাস লাভ ইইল।

রাজা কহিলেন সধে । আখাদ লাভের ক্থা কি কৰিতেছ: বখন এই পিত্রিকাবিনাস্ত রচনাম্বারা উভ রের অসুরাগ তুলারপ বোধ হইছেছে, তখন ইছাকে ভাঁহার সাক্ষাংকারলাভ অংশক্ষা আনি অণ্পলাভ জ্ঞান করি না।

উর্বাণী রাজার এইবাপ আশুরিক অনুরাগস্চক বঁচনাবলী ভাবণ করিয়া প্রকুলবদনে কহিলেন, এত দিনে ভাগার স্থ্য সন্দেহখুনা হইল। আমি ইহাঁর প্রতি যে বঁগা ইনিও যে আমার প্রতি তদপেক। ম্যুন মহেন, ইহা

# দিতীর অক

নামানা সৌভাগোর বিষয় নহৈ। অনন্তর উক্লীরাপ চিন্তাকরিতে করিতে রাজার পুক্রার্যক্ষত সরদশার আবিতাব হুইলে কৈলোদান হুইতে লাগিল, এজনা সান-বককে নহোধন করিয়া কহিলেন সংখা অস্কিলেনহার। অকর সকল বুক্তলার ইইতেছে: সভএব ভূমি ইহা ধারণকরা এই বলিয়া তাহার ইতে পত্রিকা প্রদান করিলেন। মানবন্ধ পত্রিকা গ্রহণ করিয়া কহিলেন সংখা উদারাশয়া উক্লী মলনকোশন ভারা ভোমার মনোর্থ দিছিলভিকার কুক্সোদান প্রকাশ করিতেছেন, কিন্তু কলবিবরা বিলক্ষণ ক্ষুপণ্ডা প্রকাশ করিতেছেন।

উর্বালী তাঁহাদের কথোপকণন খান্যা আরাভিপ্রার বিজ্ঞাপনার্থ অতান্ত ব্যাকুল হইলেন এবং চিত্রলেখানে সম্বোধন করিয়া কহিলেন সথি। যাবৎ আমি অংগমনপ্রমা অপন্যান করি, তাবং ভুমি এক।কিনী ইকার নমাপ বাহ্রিনী ইকার আমার অভিনত প্রার্ণনা বিজ্ঞাপন কর: চিত্রলেখা তথাস্থ বলিয়া সহয়, গমনে রাজসর্মাপে উপানীত হইলেন। নরপতি দর্শনমাত্র অভিযাত্র মন্তুমে স্থানি গত জিজ্ঞানা করিলেন এবং তাঁহাকে একাকিনী দে থিয়া কহিলেন উল্লৈ। পুর্বেজুমি বয়না সমভিব্যাহারিনী হইয়া যেরপে নরদের আনন্দ বর্জন করিয়াছিলে, একণে তাঁহার বিপরীত ভাব অবলয়ন করিলে কেন? চিত্রলেখা বিনীভবচনে কহিলেন মহাশয়। বিনা মেযোদ্যের কথন সৌদামিনী নয়নগোচর হয় না। মানবক প্রথম ভাহাকেই উর্বাণী স্থির করিয়াছিলেন। কিন্তু

রাজার তাদৃশ সন্তামণ অবলে বিশ্বিত হইয়া মনে মনে ফহিতে লাগিলেন, ইনি উবলীর সহচারিনী, ইহার কলে মার্রা দেখিয়া বোধ হয়, কেউছিরে সৌল্যোর বিষয় মাননে চিন্তা করাও মুক্তিন। নরপতি কহিলেন ততে। যদিও তোমাকে একাজিনী দেখিয়া আমার মনের যথার্থ ভূতি লাভ হইল না, তথালি অনেকাংশে মুছ্ হইয়াছি সন্দেহ নাই। সম্বাহি আসন পারি এই করিয়া সদয়হারিনীর স্বাক্তিন ক্রমান সমাচার প্রদান করিয়া আমার উৎকণাত্ত হৃদয়কে মুক্তিন কর।

**अनन्छत विज्ञदम्यो केन्द्रसम्म क**ित्रस्र मधुत दहेटन कहिट नाशिदनम, महाताकी विश्वमंत्री विभीजकीटव महा-भट्यत निक्ठे अक्री निट्युंगन क्तिएडएइन, अविह्छ श्रह्या শ্রুতিপাত করিলে চরিভার্যভালাভ হয়। নরপতি সম্পূহ-वहरन कहिरलन छट्छ। देवान वाक्ति व रहकारल काकि-**त्वत क्यात्र श्रमिए श्रमिष्ट्रा श्रकाम कति**त्रा थात्क ? विज्ञास्य क्रिट्ड माणिद्धन महामन्। जिन करे निर्वयम করিতেছেম যে অন্তরোপদ্রব সময়ে মহারাজ যৎপরো-नांखि आज्ञान चीकार कित्या आमारक मिहे इस्वियह विशन रहेट मुखं कतिशादहन, किस महाभटेश मर्भन निवना-বধি এক অনমুভূত বিপৎপাত আমাকৈ সহসা অভিভূত করিতেছে; অতএব প্রার্থনা মহাশয় অমুকল্পা প্রকাশ कतिश थरे अननानिवाद्या क्लिटमंत्र अवनान कतिट्र काल-इका अनर्भन ना करतन। त्रांका अनिशा अनश्चिक वहरन किट्टिन मिश्रे । श्रिप्ति अपूर्व विषय याहा वर्षना कतिरल छाहा

### বিতীয় শ্বন্ধ।

उर्धमी तम क्थाम अमनधाम अमर्गन क्रिया क्रियान मिथा। अपि भी अरे अलाशमन क्रियान एए क्रियान क्रिय

शमन करा। उसनी स्वन जारावर अस्ट्राट्स नवण्य रहेता ७९ क्षेत्रज्ञाहात् स्वत्राहाता हेशबीछ रहेत्त्व क्षा के के किए में निमान के किए दहें हैं ममञ्रद्ध । ज मचत्रामान अपूर्णामान क्रिक्स इत्यावत श्र र्कर श्री संभागतक केंगरवन्तर संशादिकारक अवस् समाज, वक (मनमूक विकारमध्यक बर्गायक करिया) सामित विज्ञातिक । अविभारत असमीर के त्यामका के शक्ति वर्ष वर्ष । वन। नामे अट्रेनेज क्राज्यानि त्यामाहिश्यक ता व्यक्तिय नार्केटके व किन्द्र दिनदा विकित्त कहिसादहर, तान-ताल जीत मछात्र मुख्या साहत छाहा अधिना मर्गनार्थ थ छ उ रहे बाटहन ; अ छ ब न (क तन) त्रीक न हा है अहर न कत । उसनी तर कृतिमनी हानम नाका अपन कतिहा विषक्षत्मटन महन महन जानात जम्हणते अर तना वानित्सन । विज्ञत्मया छाहादक मत्याथन कतिशा कहित्वन स्थि ! प्रतिकृत्वत बाकार्थ अदल्ड रहेरत ? जात रिलंध कर्ता असूतिछ ; आहेर प्राप्त महा-রাজের অনুমতি আহণ করিয়া দেবলোকে হাতা করি। **उन्तर्भी नीम्मियान शतिजानमृत्यक कहित्नन विश्वमधि।** जामि ७ हे समझिलां भटम अक्वाद्ध इंडब्रेस के ब्राह्म गिकितिरीन रहेगाए। अकत्व कडवाकड्वा (क्रमात्रहे উপর নির্ভন্ন করিতেছে।

अनवत विवादस्था तांस्त्रमीट्य सिर्वनम केतिन, घडा-तांस । उसनी निनीच वहरत कर निरंत्रम केतिरण्डासन सामता निजास शताधीन, उपहिच श्रभूकार्या उसकान করিতে পাহস করিতে পারি না। শতএব অর্জাত হই-য়া দেবরাজের নিক্টবর্তিনী হইতে ও আপনাকে অন-পরাধিনী করিতে বাসনা করি।

महश्राकि नवाका नश्रदम ७ शकाम वर्गन कहित्नन, ্বার্থা ভোষাদিগ্রকে দেবকার্যা স্থাতিক্রম করিছে অনু-द्राथ कहा नाम्मञ्चन कक्ष नरहे; किछ प्रचि एवन युग-मरीमजीविष काञ्चिदक अक्वादा विकृष रहे गा। क्रिका कित्रमञ्जू महानात्रशतिकालिकात अह । ता-्रामाम इटेट मा इटेट इ इचिनक इटिन व ठाशांत मस्टा শুলন করিল; আমি কি ছতভাগিনী! এইকণ চিতা করিতে করিতে দীন্ধরনে রাজার প্রতি দৃষ্টিপাত করিতে क्तिएक मशीमम्बिसाशाद्वः (पर्वादक श्रंष्ट्रांन क्वित्वन । छक्तभी नवनशर्वतं वाजीं इरेल नवशिव मीर्गन-नाम পরিত্যাগ পূর্বক কহিলেন যদি দেই অনুপ্র দে मार्ग तामि मर्भान विकेष रहेए इहेल, उर्व जात गरे অকিঞ্ছিকর নেত্রভার বছন করিয়া কি কল। একেণে ুকোধার বাই, কিবপে ছঃখতপ্ত হৃদয়কে স্কন্ত করি। · आहेताल मानाध्यकात विखा करित्र क्विरक विषश इहे-ा अहितास । मानवनः छक्षणीलिथि छूर्जभव श्रमर्भन ুক্সরিয়া তাঁহার চিক্ত বিনোদন করিতে একান্ত অভিনাধী इंट्रेलन; किस रेंछ.भूर्य के शब उं। होत रेंछ ररेएछ শ্বলিত ব্ইয় বায়ুবেগে ছানান্তরিত হইয়াছিল; স্তরাং ্তাহা দেখিতে মা পাইয়া অক্ষোভারিত ভূর্জপত্তের কথার आत छेट्राथ ना कतिया छिविधिहिट करिट नाशिटनन

আমি কি প্ৰবীরপ্রকৃতি ভিক্তি প্রসূত্ত এমত বিশিষ্ঠ ও विद्वारण स्रेशाहिलाम (यः स्थामिक पूर्मात्व त्कान समस्य खणे रहेन, जाहा काचिएक शाबिबाम ना । वहना आर्थना क्रिक कि कहित । महश्रुष्ठ क्रिकाम बहुता क्रिका गारक कि केरिएक केरिएक निवृद्ध इरेटन रे-मानव केर् गण (त्रात्रन कतिशक्षक किस्तान नृद्ध । चामि धरे कहिएक ছিলাম যে- এত বিলাপ ও পরিতাপ্ত ক্রিভেছ কেন ৪ জ র্মণী অতি মহানুদ্ধারা, তাঁহার আকার ইছিত স্বায়া তোমাতে অনুবাগ স্থান প্রতি হইয়াছে; অত্তর ভাচ্যা यङ्जिम असूत्रात कथन विकल हहेवात नरहा मत्रभाकः मीनवहरत कहिरनम वश्रुका जुमि बाहा कहिर छह। भमन সময়ে সভ্যা নর্মপাত ছারা আমিও ভাষা স্বচকে প্রতাক कतियाहिः किस विद्यावदेशमात्रः दक्षम अजीवनीय প্রভাব , কোনকণেই আমার হৃদয় বিখাদ করিতেছে ना। मानवक गतन मत्न जाविष्डत्ह्न के कर्ण कर्ण व्याख ভূর্জপত্রের অন্বেশণ করিবেন; ঝিজ্ঞানা করিলেই বা কি करिव, এই बाश फिछा किश्विष्टिष्ट्न अमन नमत्स, मह भठि करिएम रम्मा। यम मिथि अकर्ग कि छेशास्त्र खिन्नाः वितरिष्ठ मधा जीविएकत साम्रा मण्याम्म कृति । श्रेटत कृत्र-পতের বিষয় স্তিপথাকা হইলে কহিলেন নথে। কোমার নিকট যে প্রের্সীপ্রেরিছ আখাদপত্রিক। আছে, কৈ তা দাও দেখি। মানবুক ইতত্তভ দুক্তিশাত করিয়া বিষয়বদনে কহিলেন দেখিতে পাইতেছি নাঃবৌধ হয়, সে স্বর্গীয় ভূর্জপত্র, সভানে প্রস্থান করিয়াছে 🖈 রাজা শুনিয়া

गार्थित विक्र क्षेत्र में भूतक स्वित्य में स्वाहित स्

्रश्वितक ताक्यारकी अनी बता श्रीचितक उत्रनी वितरह निष्ठां विषुत्र क्षित्रा अवित्र माडिगते हिंदाकूल हरेशा-हिटलमं मध्यकि मिललकिरातिनी किसुनिकाटक कहित्तम मिश्रिक । याप्ति होता माश्रामी पटिन, किंद जाति जाहाटक मा त्रिशा अककात्त्र निर्मिष्ठ सुद्द थाकित्व लाति ना । याश इष्टेंक, विनिद्ध भारत विकटिन जिनि दकान हाटन অবস্থান করিতেছেন ? সে কহিল দেবি ! মহারাজ মান-বকের সহিত লভাগু**হে প্রবেশ করিয়মহেন দে**খিয়াছি। ताली कहित्वन उर्व छन उपात्र छेनाइंड हरेता उँहा निरुगत द्रह्मानाथ **अनिर्दर्श शिहे**वी अरे यनिता उछरत नजाइशाँकपूरशः ध्यशाम कतित्वम। किश्रमृत गमन क-রিয়া ভূর্তপত্তের প্রতি দৃষ্টিপাত হইবা মাত্র কহিলেন निभूभिक । दमश मूज हीत्रदक्ते मात्र और भज वायु দার। পরিচারিত হইরা অদিকে আদিতেছে। নিপ্ ণিকা অভিনিবেশ পূর্বক নিরীকণ করিয়া কহিলেন দেবি ! 'পরিবর্ত্তন ধারা বোধ হইতেছে ইছা অক্ষরান্তিত ভূর্জপার। **धरे य अधिर अधिर वाशनातरे सूश्रामध रहेन।** এই কথা মাল্ল উৎস্কা একাশ পূর্বক প্রহণ করিয়া कहित्लन अपि शाँठ कविया पिथिय। जिनि कहित्लन एक एक देशांड कि विश्वित आहा। निश्नाका शार्थ করিয়া কহিলেন দেবি। ইহা উর্বালীর মদনলেখন, বোধ হল আয়া মানবকের অনবধান্যশতঃ আমাদের হস্ত-গত হইয়াছে। গাঁজী কহিলেন তকৈ পাঁলজাকে পাঠ কর। নিপুশিকা পাঠ করিতে লাগিল। রাজী প্রবণ-করিয়া আদ্যোপাত সমুদ্ধ ভাষার্থ অবগত হল্লা কহি-লেন নিপুশিকে। এই থাকিলা আমাদিগের সম্পূর্ণস্বশ্বেপ সন্দেহ ভাষা করিবলা ছল এই উপহার দিয়াই মহা-গ্রাজের সহিত সাক্ষাৎ করা বাইবেক। এই বলিয়া রাজ-সমীপে গমন করিতে লাগিলোন।

এদিকে महीं भिष्ठि अव माज वित्नामतना शाह कुर्कभव क्ष ४ हिर्क् ठ इवझाटक सल्भातानांकि विषक्ष करेरलन এবং সনীর**ণ কর্ম অপজত ইইয়া**ছে বলিয়া কাতর वहरन वांशुरक नरशंधन कतियाँ कहिएक कानिरकन मर्थ मनशानिन । " जूमि सीम स्त्रिक्ति मन्नामनार्भ अन्यद्राच नानाविध स्द्रां शिष्ट्रणाव পরাম সংগ্রহ করি-তেছ, করা কিন্তু কি **উপ**কার প্রত্যাশীর প্রেরনীর अरमधी **পर्किका इतर्ग कतिला, जारा** युक्थिए भारिताम ना। जात विश्ववित्रहिक एक्कांशांगरनंत अहेत्र छेत्रास जित विशामतनेत आत छेशास्त्र नाई , देशां द्वामात বিলক্ষণ ক্ষমসম আছে ই অভএৰ ভাৰ্দিগকে সেই ারম ধনে বঞ্চিত করা ডাদৃশ মহামাগণের উপযুক্ত কর্ম নতে। নিপুণিকা নরপাছার ভাতৃশা কাছবোজি অবণ করিয়া কহিল দেবি ! সহারাজ এই ভূজ পতের অবেষণ করিতে করিডে কত প্রকার বিলাপ ও পরিভাপ করিভে

ছেন শুনিতে পাইভেছেন ? সহিধী কহিলেন দিপুনিকে। আর আমানের কথোপুকথনের প্রয়োজন নাই; মৌনাব-লবমুন পূর্বাক দেখা যাউক অভ্যুপ্ত কি করেন।

আমবক ইতত্ততঃ অত্যেবণ করিতে করিছত এক সন্তুর ब्रिक अठातिक रहेशा विषश् वंगरेन कहिए नाशितन वतुत्रा 🕛 शजिकादवादय वाहात निकटी वाहे. त्कमन अपृ-क्रित माय वार्वा माळ विश्वन हरेता यथ्मातानि कांच भारेटच इते। तथ विकास कर ममूत भूटक खेठा-ति छ इहेतामें हुं नेतिशिक नीनवेष्टरन कहिएलैन गर्थ : **यां**त ৰুখা অন্তেখণ করিয়া আয়াদিত ধ্ইবার আবশ্যক নাই, यिन दिन छ दख पूनलं का रहेल, कारा प्रदेश अगटल कर् कृश्यक्षाती कहेक ना ; त्रुकिलाम अक मिटन आमात कीत्र সংশয় উপস্থিত **ছইল**ি রাজী তাঁছরি অধিক কাতরোজি धारा अमगर्थ रहेशा महमा मृत्यीन इरेलन এवः (मध भूकंशज अन्मान कतिया कश्किन आर्थार्थ्ज ! প্রকাশ করিবেদ না, দেই এই পত্রিকা, গ্রহণ করিয়া স্থ্ সচ্চলে তাবস্থান ক্রুন। মরপতি অকমাৎ মহিঘীকে সমী-প্ৰবিদী ও তাহার ইংক উর্কশীলিখিত পানকা দেখিয়া অতান্ত লজ্জিত হইলেন এবং সমস্ত্রমে স্থাগত জিজাসা क्रिया भागरन मानवकरक किस्टिन व्यमः। अथन कि উপায়ে এই अम्याबाहद्रश्वत अिंडिविधान कृति । मानतक কহিলেন লোপ্তু স্মেত ধরা পড়িলৈ চৌরের বাজাত ছারা নিষ্কৃতি লাভ নিতান্ত অসম্ভাবিত।

अनुष्ठत त्राका महिबीटक कहिटलम<sup>हा</sup>रम्बि। आर्थि

पुकरात्का अध्यात केतिहरू हि ता। आजात मह नद्धां कहान या कहिएकेथि । आब्दी एकारमान्द्रका मग्रदन करिस्तम हेश আপনার মন্ত্রপত্র ছাপেকা, ক্ষরিকাঞার্বন্ধিতক আরু পোপ-त्मेत्र श्रद्धां <del>केन्द्रशाहि । "कत्रशक्ति " काकाश्रति उप</del>्रद्धा कहि-ब्लन पित । हवा जानुका कतिहा क्या जागाएक अशहा है त मध्या भवन। कतिएक ? ताकी करिरतान धविषता चाम-नात जानताथ कि जो जामि वर्धन अमन नमस्त्र अखिक्ल-पर्णना इहेशा आश्रमात्र व्यक्तिमातिश्वात वार्षाष्ट्र कविश्रामः उथन आधिर मण्डि अवताविमी इरेताहि, यादा इछक, आद कविक का वाशनात इटी विशाम संमाहेब मा ; अवे বলিয়া নিগুণিকাকে কহিলেন নি**পুণি**কে। अञ्चारन क्षेत्राम क्षेत्र ज्यान अभोदिन वाकिया महातारज्ञत मत्नात्वतना त्मञ्जा छिन्छ मत्ह ; बहै विषया श्रञ्जाना-मुखा इहेरलम । नज्ञ शक्ति विमीख वहरम किरलम (मिव । প্রকু ভূতো। অপ্রাধ ব্যতিষ্ঠেকে কখন বিয়ক্ত হয়েন না; स्टंबार जारि समबावी स्ट्रेशिष्टि किछ क्रमा कविया असे अध्याश्रद्धार या**र्क्ना कतिर्देछ रहेदन अहे लगा** विद्या छ। हात प्रकाल प्रक्रिक इंहेटनमें । बहिंची प्रेरकालनहाम कहिएके वाजिद्यान, अधन थात विमन्न ७ एप्रको शकारभूत जातमत नारें भूनएए ने कतियां जनस्मक कतिरम कि मछ। शस्त्रिक रहेंग्री थाटक ? अहे कटल ताकात्र विनन्न वाका व्यवदन विधित रहेश পরিজন সমভিন্যাহারে **প্রজান করিলেন**।

'अनस्र भानवक जुशिल्क मध्यासम क्रिया कहित्सन वशना 'ताकी वर्षाकानीन कटलानिमीतनाम अञ्चनम जातके গমন করিলেন, আব অরণো রোদন করিলে কি হইবে, গাত্রোপান করে। গাজা উচিয়া সাভিমানবচনে কহিলেন সপে! এত স্তাতি বিনীজিতেও দেবীর রোধোপশম হইলনা কি আশ্বর্ণা কি অন্যায়! যদি ও স্বানী আতি কণ্ঠা কি অন্যায়! যদি ও স্বানী আতি কণ্ঠা বভাৱ প্রান্ত কণ্ঠা কি অন্যায়! ত্মি ও স্বানী আতি কণ্ঠা কচন করা করেলে তথাপি তাঁহার প্রদেশতন ও বিনর বচন কজেন করা অবলাজাতির ক্লাপে বিবেশ নতে। মানবক কহিলেন বয়সা! তুমি ঘ্টা কহিতেল বাহা যথার্থ বটে কিন্ত নয়ন্দীড়িত বাজি কোন সভেই প্রান্তে দীপ্রান্থ সহা করিছে পারে না। মরপতি উত্তর করিলেন স্বান্ত প্রান্ত করিছে করিছে প্রান্ত করি করা করিছে তাহা কিন্ত করিছে মান্তি করি করা করিছে করিছ

গ্রন্থ মনেদক কহিলেন বাস। ।।র দেবল কথার সান্দোলনে প্রয়োজন লাই, সংস্থিত লানজোলন কো উপান্তিত। নরপতি উজে দুঁটিপোল কার্য। কলিনেন কথার্থই দিন্দনি প্রথমের স্বান্ধানি কইবাদেন। সান্ধক কার্দেন সংগ্রেই দেখা ময়ুরগণ সন্ধান্ত ক্ট্রা ক্লান্থের স্থাতিল আল্বাল মূলে অবস্থিতি ক্রিটেছে, নিরেন্দ্রনা উত্তাপভয়ে ক্রিকার কুস্থমের অভ্যন্তরে বিনান হইনা লহি-য়াছে,মরালকুল আতপতপ্রধার ত্যাগ ক্রিয়া তারস্থনলিনীত শিশিরজ্জানতে অবস্থান ক্রিটেছে এবং কেলীগৃধ্বানী পঞ্জরশুকশাবিকাসকল স্থামকর্প হইয়া বার্যার জল প্রার্থনা করিতেছে এবং প্রান্তরে গো সহিষ হরিণ প্রভৃতি পশুগণ জলজ্ঞমেগমৃতৃষ্টিকার ব্যবসান হইতেছে। উভরে এইৰূপ কথোপকখন করিতে করিতে ভবনাভিমুখে প্রস্থান করিলেন।

#### বিক্ৰমোৰ্হশী

#### তৃতীয় অক।

ভরতমুনির এক শিষ্য অভিনৰ নাটকের অভিনয় দর্শনার্থ তাঁহার সমভিব্যাহারে দেবসভায় গম্ব করিয়াছি-लनः उँ। होत्र नाम रिभलतः रिभलत उथ। हहेर् अउहाः গত হইলে তাঁহার এক প্রিয়বস্থু কিজ্ঞানা করিলেন, সংখ উপাধ্যায়প্রণীত মনোরম নাটকের অভিনয় पर्भाति मुख्य मगल त्वांक मुख्य इटेशाएडन कि ना? लिनि छेख्य कविद्यान यमि छेखनी व्यनवधान धमर्थन कविहा द्वर-**जिल्ला क्रिक, छोड़ा इटेटन छोड़ा मद्दाक्रयुन्न**त ७ मक-लात मराखायसमक इट्रेंड मरामह नाहै। जिनि कहिरलन বয়স্য । উর্বাণী কিলপে রসভঙ্গ করিল শুনিতে অভান্ত (कोणुझ्ल इहेटल्डा ? अन्नव किस्तिन वस्त्राः। अन्नीः সরমর উপ।খানের অভিনর হইতে ছিল। অবসর ক্রমে वाकृती ज्ञानधारिकी अभका नक्यी दिनमधारिकी छेर्स्व मी दक জিজ্ঞাস। করিল ভগবতি ক্যলে। দেব দানৰ গন্ধকা প্রভৃতি অনেক মহাপুরুষের সমাগ্র হইয়াছে; বল দেখি ইহার মধ্যে কাহার হস্তে তোমার আত্মসমর্পণ করিতে অভিলাষ হয়?

উর্বাদী পুরুরবাচিন্তায় একবারে বাহজ্ঞানশূনা হই-য়াছিলেন, স্কুতরাং তৎকালে পুরুবোভ্তমের প্রতি প্রণয় প্রকাশ করিতে বিশ্বত হইয়া আপনার অভিপ্রেত প্রিয়- তমকে লক্ষ্য করিয়া ক**হিল, আমি মহারাজ পুরুরবার** প্রথম প্রত্যাশী হইয়া অন্যস্কল বিষয়েই স্পৃহাপুনা ইইয়াছি:

নদ্ধ কহিলেন সংখা। এ অতি ঘথাৰ্থ কথা যে বৃদ্ধি ও ইন্দ্ৰিরগণ ভবিতব্যেরই অনুসরণ করিয়া থাকে। ভাল বরসা। উপাধ্যায় ভাষাতে কুফ বা অসম্ভুট ইইজেন না? পৈলব কহিলেন সংখা। রোধ বা অসম্ভোধের কুথা কি কহিতেছ। উপাধ্যায় আশাকে পাদশ অনক্ষিত ও অধীর-প্রকৃতি দেশিয়া ক্রোধভারে এই বলিয়া অভিশন্ত করি ব্যাছেন ব " নেমন ভুই অনুজ্ঞা করিয়া আভিশন্ত করি অধিকার থাকিবে না"।

পান্দর দেবর জে ভাছাকে সজ্জার নতা ও বিষয়েপুথা দেখিয়া জানুত লগা প্রদর্শন পুনেক কভিনেতা, বালে। ইছিলে প্রনি প্রতি ত্যান র প্রতি ক্ষান্ত অনেত আছাল কবিয়া থাকেন। অত্তর করে তথা রলগারে অনেত আছাল কবিয়া থাকেন। অত্তর করে তথা রলগারে অনেত আছাল কবিয়া থাকেন। অত্তর করে তথা করালের মুখ দশন না করেন, ভারং জুমি জাবাসের ইছিলে জাজার করা, পরে স্থানিয় সমুদার বিষয়ে পুরুবাধ অবিকারিণী ইছিল স্বর্গে আলামন করিবে। এই কথা জানিয়া তিনি ক্ষিলেন ব্যুমাণ স্বর্গতি উর্বাদীর প্রতি গণ্ডি অনুত্রছ করিয়াছেন বলিতে ইইবে। এই রপ্রতি গণ্ডি অনুত্রছ করিয়াছেন বলিতে ইইবে। এই রপ্রতি গণ্ডি ক্রিয়ার করিছেন বলিতে ইবিন। এই রপ্রতি করিয়ার করিছেন করিয়ার করিয়ার স্বর্গায় স্বর্গায় করিয়ার ক

অতিক্রান্ত হইল, আইন শীঘ্র উপাধারের নগীপনর্ভী হই। এই বলিয়া উভরে প্রস্তান করিলেন।

এদিকে রাজ্ঞী নরপতির প্রণিপাতলঙ্গনে অভিশয় অলুভাপিত হইয়া পুলঃসমাগ্যবাসনায় এক কাঞ্চিত প্রতের অনুষ্ঠান করিয়া নিপুণিকা নার্মী পরিচারিকা দ্বার ' ভাবলা জাতি অতি নিৰ্বোধ, অধিস্বাক্রী ও ছিতাছিত-क्लानम्बा: कुछबार छार्रात्व भटम भटम चलराह्यत স্তার্থা আদি মহাত্রগণ তেহোদের অপরাধ মনে করিয় অভিমানী হয়েন, लोहा इहेटल मिट हितालता विगीत हा। काइति निकटी क्रमा आर्थमा कृतिति है मुख्यति जानि প্রিয়প্তসাদন নামে এক ২তেব অনুষ্ঠান করিয়াছি, মহা-বাজকে পুরবক্ত অপরাধ নার্জনা করিয়া রলভলে উপ **जित १२८७ १२८४क: ब्राइडी मिश्रुशिकारक शा**राहेता বিশ্বস্ত হুইতে না পারিয়া পুনব্বরে এতীহারীকে গেরন করিকেন। প্রতীধারী যাইতে ঘাইতে মানসিক ছুঃখ প काम कृतिएक लाशिन, हाम । मश्माती वाकि मार्क्क द्योव-নাৰতায় অর্থোপার্জ্জন করিয়া দুর্জাবস্থায় উপযুক্ত সন্তানের হস্তে কার্য্যের ভারার্পণ করিয়া অবস্থত হইয়া থাকে। কিন্তু भाषृण इंडिंगा वाङ्गिपिशदक अरे भानहानिकत भवृद्धि সেবাশৃপ্থলে নিগড়িত হইয়া আজন্ম চিরজুংথে কালাতি পাত করিতে হইল। বিশেষতঃ ক্রীজাতির রক্ষণাবেক্ষা অতীব প্রজর। যাহা হউক মহারাজের সন্ধা।পাদনাদি সমাপন হইলে দেবীনিদেশ নিবেদন করিয়া, আপাততঃ নিশিন্ত হই। এই কহিয়া রাজগৃহে প্রবেশ পূর্বক সায়ং—
কালীন রমণীয়তা ভাবলোকন করিতে লাগিল। কোন স্থানে
দিবদাবদানস্থাক ভূর্যধনি হইতেছে, কোন স্থানে বিদ্দিণ সন্ধাকালীন স্তৃতি পাঠ করিতেছে, প্রজালত ধূপধূম
বাতায়নপথে নিংস্ত হইলে, বোধ হইতে লাগিল যেন
গৃহ বহিঃস্থিত কাঠদও সকলে পারাবতগণ উপবিষ্ট বহিয়াছে, এবং রুক্লাভঃপুরিকাগণ স্থানে ভানে দীপ স্থাপন
করিলে সমুদায় পুরী হীরকমন্তিতের ন্যায় শোভা পাইতে
লাগিল। অন্তুর নরপতি সন্ধ্যাবদ্দনাদি সমাপন করিয়া,
মানবক সম্ভিব্যাহারে বহিগমন করিতেছেন এমত
সময়ে, প্রতীহারী তাঁহার দৃষ্টিপথে দণ্ডারনান হইল।

ভূপতি উঠানীচিন্তার নিতান্ত অধীর সায়ংসমর উপক্তি দেখিলা মনে মনে কহিতে লাগিলেন আমি নানা
কার্যো ব্যাপুত থাকিরা কথিজিৎ নিরুৎকণ চিত্তে দিন
যাপন করিলান, কিন্তু এই বিরুহদীর্ঘানা যামিনা কিরুপে
অভিবাহন করিব এইরপ ভাবিতে ভাবিতে মন্তর্থসমনে
অগ্রনন করিবে এইরপ ভাবিতে ভাবিতে মন্তর্থসমনে
অগ্রনন করিবে এইরপ ভাবিতে ভাবিতে মন্তর্থসমনে
অগ্রনন করিতেছেন। প্রতীহারী মহারাজের জয় হউক
বিলয়া তাঁহার সম্মুপবর্জী হইরা কহিল মহারাজে। মহিনী
নিশাকরের রোলিনীযোগ পর্যান্ত মহারাজকে মনিহ্র্মান
পূর্বে অবস্থিতি করিতে অন্তরাধ করিতেছেন। রাজা
কহিলেন তুমি দেবীকে নিবেদন কর আমি শীঘ্রই তথায়
উপন্থিত হইতেছি। প্রতীহারী যথাজ্ঞা বলিয়া প্রস্থান করিলে ভূপতি মানবককে জিজ্ঞামা করিলেন বয়সা। বল
দেখি, দেবী কি উদ্দেশে এই ব্রতামুশ্বান করিয়াছেন ?

তিনি উত্তর করিলেন সথে। আমার বোধ হয় মহানুতাবা মহিবী পুরাক্ত প্রাণিপাতলঙ্গনে সাতিশয় অনুতাপিত হইয়া তজ্জনিত দোষ কালনার্থ এই এক উৎকৃষ্ট কৌশল অবলয়ন করিয়া থাকিবেন।

রাজা কহিলেন সথে। ধথার্থই অমুভব করিরাছ।
মন্থিনী কামিনীগণ প্রিরতমক্কত প্রভি বিনীতি বিলপ্তনন
করিয়া পরিশেষে এইৰপ চাতুরীই অবলম্বন করিয়া থাকে;
যাহা হউক, আইস আমরা মণিহর্মাপুষ্ঠে গমন করি। এই
কথা বলিয়া উভয়ে মণিহর্মাটেয়ুথে গমন করিলেন।
ক্রমে ক্রমে তথার উপত্তিত হইরা মানবক উদ্ধে দুটিপাত
পূর্বক কহিলেন বয়সা! নিশাকর উদিতপ্রায় হইরাছেন।
ক্রি দেখ পূর্বদিক্ তিমির্রাপ অবগুঠন পরিত্যাগ করিয়া
হর্ষোগ্রুলবদনে প্রিরতমের প্রতি অনুরাগ প্রদর্শন করি

রাজা, সংখা যথার্থ অনুভব করিয়াছ বলিয়া আছি পুরুষ জাবে চল্লের অশেষবিধ স্তুতি পাঠ করিয়া সাফাঞ্জ প্রথিপাত করিলেন এবং উভয়ে উপবিষ্ট হইয়া দীপধারি। শী পরিচারিণীদিগকে বিশ্রামের আদেশ করিলেন।

 কথা বারম্বার স্বরণ করিলে মান, থক যন্ত্রণা ভিন্ন কিছুই লাভ নাই; কলতঃ যদিও সেই স্থরবিলাসিনীর সহিত আশু সমাগমের কোন বিশেষ হেডু উপলব্ধ হইতেছে না বলিরা তোমার ইর্ষয়াগুণের কিঞ্চিৎ ব্যতিক্রম ঘটিয়া থাকে, তথাপি ভাঁহার তৎকালীন ভাদুশ অনুরাগস্থাক ব্যবহার স্বরণ করিয়াও প্রভাগশিত হওয়া উচিত। রাজা কহিলেন বয়সা! ভুমি যথার্থই কহিতেছ গটে, কিন্তু আমার মন এনন উদ্বেশ হইয়াছে, যে কোন মতেই সাজুনা রূপ শর্করা সেতু বেউনে ভাইকে প্রকৃতিপ করিতে পারা নায় না। ধ্যে ছাংখর কথা কি কহিব, দেখ দেখি ছ্রাম্বা মক্র কেরুর কি ক্ষতম্বতা! আমি আন্তরিক যন্ত্র সংকালে ভাহতে মনোমধা সমিবেশিত করিয়া জনেক সংকাশেত দ্বা পরিবার্দ্ধত করিলাম, এক্ষণে সেই নুশা সাল মারই অনুজ্ঞালার উত্তেজনা করিতে লাগিল।

মানবক রাজার চিত্তবিকার উপস্থিত নেথিয়া উহিছিল
কৈ অনামনা করিবার আশারে উৎসাহ বর্জন পূর্ক্ষি কহিলেন. সথে ৷ তোমার এই অনপণতলাবণা ক্রশালালারী
স্পান্ত প্রতীতি হইতেছে, অচিরাৎ সেই ক্রদরোলানিনী
স্পান্তিনিনা তোমার নয়নানন্দিনী হইবেন ৷ এই কথা
কহিতে কহিতেই দক্ষিণবাজ্মসন্দ হওয়াতে ভূপাল
ভানত কলম্বকলক্ষণ অনুভব করিয়া কহিলেন সথে ৷
ভূমি সেমন আমাকে নানা সান্ত্রনা বাক্যে প্রত্যাশাপাশে
বন্ধ করিতে চেটা করিতেছ; মেইরপ এই দক্ষিণবাছ
সহনা স্থান্তিত হইয়া আমার বিরহ্বিধ্ব অবিশ্বস্ত মান-

সের বিশাসোৎপাদন করিতেছে। এই কথা শুনিরা মানবক প্রগণিভত বাকো কহিলেন, প্রিরতম ! গ্রাহ্মণের বাক্য কথন কি বিফল হইয়া থাকে ? উভয়ে এছরপ কথোপকখন করিতে লাগিলেন।

এদিকে উর্বাশী রাজবিরহে প্রধীর হইয়া অভিসরণো-भएयात्रि त्वन पूचा शतिश्रङ् भूर्वक विकागत्ताकृत्व আগমন করিতে করিতে নিজ পরিস্থদ পরিপটৌর প্রতি দৃত্তিপাত করিয়া চিত্রলেখাকে কহিলেন গ্রি: এই মুক্তাভরণ ও নীলমণিবিভূষিত অভিসারিকাবেশ আমার অত্যন্ত প্রাতিকর বোধ খ্ইতেতে ; দেখ দেখি, ইহা বাস विक कि भरमातम करेशास्त्र। हिलालथा सहित्वन किय-স্থি। অধিক আরু কি বলিব, ইহার বৈভিত্রা ও তহত-নিত ভোষার মাধুন্যতিশয় দর্শনে আছাব এরপ বেব हरे**र**टर यभ जगमीश्वत 'भागारक श्वकत्व कित्रकः, छ। इ**हेटल हे** हेहात प्रकास भाषीन इहेल। **छेखा**की कवि-লেন স্থিতি সে যাহা হউক বন্দেলি আর কত দুরে ताकवानी। विज्ञात्त्रथा करित्यन मर्थि। यामतः श्राप्त । । कः शांनीत मनिवारन উপनी ह स्टेशिष्टि। अहे कथा अनिया ऐक्षमी अमिन्छ मान किश्विन मुखि। एवं अकराब প্রাণিছিত হইয়া দেখ দেখি, মেই হৃদয়টোর কোন স্থানে কি কপে কাল যাপন করিতেছেন। চিত্রলেগা মনে মনে ভাবিলেন ই হাকে প্রায় মহীপতির সম্মুখেই মানিয়াছি; একণে কিয়ৎকণ ইহাঁর সহিত পরিহাস করা ঘাউক। এই द्वित कतिया किश्लिन मथि! नमाधि माता प्रति

লামন তোমার প্রির্ভম এক অভিমত কামিনীর সহিত হাস্ত পরিহাস করিতেছেন। ইহা শুনিরা উর্ধানী সন্মিত বদনে কহিলেন, স্থি! ইটি তোমার কাম্পানক কথা। ইহাতে আমার ক্ষর প্রত্যন্ধ করিতেছে না। আর আমি বিলক্ষণ জানি যে, কেহু কথন অনুমুরক্ত ব্যক্তির নিমিন্ত এত কাতর হর না। প্রিয়স্থি! এ পরিহাসের সময় নহে; ত্রায় ভাঁহার সহিত সমাগত করিরা আমার বিরহ্বকাতর জীবিতের স্থায়া সম্পাদন কর। চিত্রলেখা সহাস্যাবদনে কহিলেন স্থি! আমি যথার্থই পরিহাস করিতে। তলাম, ঐ দেখা মণিহর্ম্মা প্রাসাদে নরপতি বয়সোর সহিত তোমার সহিত কমাগনের উপায় চিন্তা করিতে করিতে কত প্রকার কম্পনা করিতেছেন। উর্বাদী কহিতকেন স্থি। চল, শীঘ্র সমীপ্রতিনী হইয়া ই হাদিগের পরাম্য প্রাসাশ প্রবাণ করি, এই কথা কহিল। উভয়ে অবতরণ করিয়া রাজ্মমীপে উপনীত হইলেন।

भिमयामिनी अविवासिनी विशास निमय पूर्णील मान-वकरक मरश्यन कवितां किश्तिम वत्रमाः। विवहरत्वना निशास्त्रारण नामाविष्यमी विश्वास वााशृष्ठ थाकार् विवहर्त्तना निशास्त्र निष्ठास काष्ट्रव कवित्र शारत्व नाः। किस्न तस्त्रनी व्यार्थ स्राया शाहेश मन्त्रास्त्रवाशिनी इत्रेत्न। कुष्ट क्रिम-क्व इहेश स्टिटं।

ইলা শুনিয়া উর্দ্ধশী হর্ষবিক্ষণিত বদনে মনে মনে কহিতে লাগিলেন, হৃদয়! তুমি আমার সহিত আজল বস্কুতা পরিত্যাণ করিয়া যে ই হার শরণাণত হইয়াছ, এত দিনে তাহার সম্পূর্ণ ফল লাভ ইইল; এইরূপ ভাবিতে ভাবিতে আনন্দমন্তরগমনে রাজসমীপে গমন করিলেন এবং তৎক্ষণাৎ প্রত্যাগত হছয়া সহচরী চিত্রলেগাকে জিজ্ঞাসা করিলেন প্রিয়স্থি। সামি মহারাজের সম্থ বর্তিনী হইলাম.তথাপি তিনি চির্সমাগমোচিত সম্ভাষণাদি विगता छेमानीना अवलयन कतित्लन; इंशत कात्र कि? ভূমি যে তিরস্করিণীপ্রশুলা রহিয়াছ, তাহা কি আনন্দে अकवादत विश्व छ इहेग्राष्ट्र ? छाङ्गदमत अहेकश कृत्थाशः কথন হইতেছিল এমন সময়ে রাজনির আগমনকোলাহল ইইয়া উঠিল। উর্বাদী শুনিবা মাত্র অতিশয় বিষয় চিত্তে ञाश्रमात चामराधेत छर्भमा क्रिट नागिरतम् भामवक কহিলেন সথে । দেবী উপস্থিতপ্রায় হইলেন আর এ সকল কথার আবশ্যক নাই। নরপতি কহিলেন বয়সা 🖰 🛒 ম সাব্ধানে স্থির চিত্তে অবস্থান কর; দেখিও যেন কোন মতে চাপলা প্রকাশ না হয়।

উর্বাণী চিত্রলেখাকে কহিলেন স্থি। রাজ্ঞীর দৃষ্টিপথে
পতিত হইলেই অবমানিত হইবার সন্তাবনা; এক্ষণে
আমাদের কি করা উচিত। চিত্রলেখা কহিলেন স্থি।
তুমি র্থা কেন অমূলক চিন্তার কাতর হইতেছ ? আমরা
তিরস্করিণী ঘারা মানবজাতির সম্যক্ কপে অদৃষ্ট হইরা
রহিয়াছি এবং রাজ্ঞী ত্রতসম্পাদনার্থ আগমন করিয়া
ছেন, ত্রতানুষ্ঠান হইলেই এ স্থানে অধিক ক্ষণ অবস্থান
করিবেন না; অতএব প্রতিগমনেরও প্রয়োজন নাই

মানবক ভূপালকে সংখ্যাংন করিয়া কহিলেন সথে।
দেবী পুরাক্ত অবিনয় গরিহার ও আমাদিগের প্রতি
রোবস্থাতা প্রদর্শনার্থ এই চাতুরী, অবলয়ন করিয়াছেন
সন্দেহ নাই। রাজা কহিলেন বয়সা। তাহার সন্দেহ কি;
ইহার এই বিনীত বেশ ভূষাই তাহার স্পন্ত সাক্ষ্য প্রদান
করিতেছে। এইরূপ কথোপকধন হইতেছে এমত সময়ে
মহিষী জয় শব্দ উচ্ছারণ পূর্বক সপরিজনে মণিহর্মা।
প্রামাদে উপস্থিত হইলেন। রাজা দশনমাত্র সমগ্রম

चेकिनी यखदान इरेटि नितीत क्ष नार्ग वित्नाक्त कित्रा ७ रेपना शाबीर्यानि छर्गत नक्षत एकन प्राचे छेप-नक्षि क्रिया क्ष्टिन हैनि त'क्ष्यहिंगे मुक्त विथाठ इरेबात छेपयुक्त भाज मरम्ह मारे।

রাজা উপনেশন করিয়া শিকীচার পরত্পরা সমাধান পূর্বেক বিনীত্রচনে ক্ছিলেন আর্থাপুত্র! আপনাকে দাস্থীন করিয়া এক ব্রুক সম্পাদনের অভিলাধ করিয়াছি: খদি অনুগ্রহ করিয়া এই উপরোধটি রক্ষা করেন, তাহা হইলে ব্রুচানুষ্ঠানে অধিকারিণী হই।

রাজা কহিলেন দেবি! প্রভুর আনেশ উল্লেখন করি-তে কোন্ ভূডোর সাহস হয় ! বাহা ইউক জিজ্ঞাসা করি, যে প্রতের অনুষ্ঠানে উদ্যত হইয়াছ, ইহার নাম কি? মহিনী অবলাজনস্থলত লজ্জার বশয়দতায় স্বয়ং কিছু বলিতে না পারিয়া পরিচারিকার প্রতি নয়নপাত করিলে. নে কহিল মহারাজ! ইহার নাম প্রিয়প্রসাদন। এই কথ শুনিয়া নরপতি রাজীর প্রতি অবলোকন করিয়া কহি-লেন, অয়ি আত্মগুণাবমানিনি! এই অকিঞ্চিৎকর বহু সাধনার্থ এত দূর পর্যান্ত আত্মাকে আয়াসিত করিতেছ? কি আশ্চর্যা! নিযুক্তেরাই স্থামিসন্থোধার্থ নানাবিন চেন্টা পাইয়া থাকে; কিন্তু ভূত্যের প্রসম্ভা লাভার্থ প্রভূর এত যত্ন কথনই দেখি নাই। '

উর্কাণী রাজার এই ৰূপ সন্ধানস্থাক বাক্য জ্ঞান করিয়া সংচরীকে কহিলেন, স্থি। সংরোজ সহিনীর মথেক সন্ধান করিয়া থাকেন। চিত্রগোহা কহিলেন অগ্রি মুদ্ধে। অন্যসংক্রান্তজ্ঞানয় ধূর্বের: স্থাগ্র সংধ্যি ীয় নিকট এই ৰূপ দাজিশাই প্রকাশ করিয়া থাকে।

রাজী কছিলেন আর্যাপুত্র। এই ব্রের কেলন প্রভান পেখুন গুনিয়াছিলান আপনি আ্লার জাতি আভিমনোর্ছ হইয়ছিলেন, কিন্তু এতের আ্লার ছন হইতে না হইতেই আপেনার অনুকুলাচরণ লক্ষিত হইতে লাগিল। নরপতি এই কথার উত্তর প্রদানে উদাত হইতেন, মানব্রু নিবারণ করিয়া কহিলেন, সংখা। পেরী বাস্ত্রিক ক্রাই কহিতে ছেন, আর ইহার উপর বাক্চাতৃযোর প্রয়োজন নাই।

অনন্তর রাজ্ঞী ত্রতসাধনের শুভ সমন্ত্র পিঞ্চ নেথিরা পরিচারিনীদিনকে উপহার সাম্ত্রী আনমন করিতে আ-দেশ করিলে ভাহার। সমুদার সামগ্রী সম্মুথে আনমন করিল। দেবী গন্ধ পুজাদি বিবিধ উপহারে চল্লনেকের পূজা করিয়া মানবক ও কঞ্কীকে যথেক মিন্টাল্ল প্রদান করিতে অনুমতি করিলেন। পরিচারিকাগণ তাহাদিগকে বিধিবৎ অর্চনা করিয়া নানা বিধ স্থরস সামগ্রী প্রদান করিল। তাহারাও আনন্দে আশীর্বাদ করত গ্রহণ করিল। অনন্তর রাজ্ঞী সহতে স্বামিপূজা সমাপন করিয়া কুডাঞ্জলিপুটে কহিতে লাগিলেন, "আমি এই চক্ররোহিণী দেবতা মিথুন সমলে অকপট হৃদয়ে প্রতিজ্ঞা করিতেছি, আদ্যাবিধি মহারাজ যে অনুরক্ত কামিনীর প্রণয়পাশে বন্ধ হৃইবেন, আমি প্রাণান্তেও তাহাব প্রতি প্রতিকূলাচরণ করিব না।"

উর্বাণী তাঁহার তাদৃশ উপদহহার বাক্য প্রাণা করিয়া বিশ্বিত ও আফাদিত হইরা কহিলেন, অবলা জাতিতে একপ সরলক্ষার ও মহান্তভাবা কামিনী কথন নয়নগোচর করি নাই,ইনিই ব্যার্থ পতিপ্রাণা প্রণায়নী; যেহেন্দু ইনি স্থামিসম্বোধার্থ এতাদৃশ অসহা ক্লেশ স্বীকার করিতেও প্রস্তুত হইলেন; থাহা ইউক ইহা শুনিয়া আমার ক্ষম নিঃশঙ্ক ও স্বন্ধ হইল। চিত্রলেখা কহিলেন স্থি। মুগ্ধ-স্ভাবা মহিধীর এই প্রতিজ্ঞানুসারে বোধ হয় এত দিনে ভোষার প্রিয়সমাগ্য অবাহিত হইল।

মানবক দেবীর অগোচরে কহিলেন হস্ত হীন লোক সমা থধাবিত চারকে ধরিতে না পারিলে স্কুতরাং ধর্মের উপরেই নির্ভর করিয়া থাকে। ভূপতি মহিধীর একপ উদার বচন প্রবণ করিয়া কথিকিৎ আন্তরিক আনন্দ প্র-কুদন করিয়া মানবদনে কহিলেন, অয়ি অসহনে। ভূমি আমাকে যেকপ ভাবিতেছ, রাস্তবিক আমার স্বভাব সে-

# ত্তীয় অৰুণ

ৰূপ নহে। রাজী কহিলেন আর্থাপুত্র। আমার নার।
বক্তব্য বলিলাম, আপনার কর্ত্তব্য আপনি বিবেচনা করিবেন, এই কথা কহিয়া পরিচারিকাদিগকে গমনার্থ
প্রস্তুত্ত হিতে আদেশ করিলে, রাজা কহিলেন দেবি!
এতশীঘ্র প্রতিগমন করিলে প্রসাদাকাক্ষ্ণীর প্রতি নিতান্ত
নিগ্রহ প্রকাশ হয়। রাজ্ঞী কহিলেন আর্থাপুত্র। মনোহর বন্ধু সহবাসে কাহার অনিক্ষা হয়। কি করি, আজি
ত্রতনিয়মে অত্যন্ত ক্লান্ত হইয়াছি, নতুবা আগনাকে অন্ধ্ররোধ কবিতে হইবে কেন; এই বলিরা সপরিজনে স্থস্থানে প্রস্থান করিলেন।

মানবক কহিলেন সংখ! দেবী সানিপাতিক বিকার বিক্তরোগীর ন্যায় ভোমাকে স্বশে রাখা অসাধ্য বিবেচনায় পরিত্যাণ করিয়া গিয়াছেন, একণে উকাশীর প্রিয়-পাত্র হইয়া মহোৎসবে সময় যাপন কর। রাজা দীর্ণ নিশ্বাস পরিত্যাগ পূর্কক কহিলেন বয়স্য! আমার ভাগে। কি উবাশীসমাগম ঘটিবে? আমি আর কি সেই অনুপম সৌন্দ্র্যাশি দেখিতে পাইব? আর কি সেই মনোহর নূপুরশিঞ্জিত শুনিতে পাইব? ভিনি কি মহনা পশ্চাদ্র- ভিনী হইয়া ক্মলকোমল কর্মুগলে আমার লেওন্যুগল আহত করিবেন? অথবা এই নেধিওলে অবতরের করিয়া স্পরেস্বশে মন্থ্রগামিনী হইনে চত্রা চিতালেশ বল পূর্ণিক তাহাকে মানর সন্মুখে উপনীত করিয়ে। ?

চিত্রনেং। রাজার এইরপ অভিলাধ শবণ করিয়া উর্কাশীকে কহিলেন থ্রির্নাথ। বলতের এই মনোরণ পূর্ণ করা উচ্চ। উর্কাশী কহিলেন প্রিন্দাধা। যাবা কহিতেল, বাস্তবিক বিধের বটে, কিন্তু কিনাপে এক বারে লক্ষার মন্তকে প্রার্থণ করিব। যাহা ইউক বজ্ব-জনের অনুরোধ অনুন্দমনীয়, এই বলিয়া শনৈঃ শর্মেঃ ভূপতির পশ্চম্বর্ভিনা হইয়া করপ্রতিরা নয়ন্দ্র আন্ধরণ করিলেন। চিত্রলেখা মান্বক্কে গ্রান্থ অনুভব করিয়া প্রকিত করিলেন। ভূপতি স্পার্শস্থ অনুভব করিয়া প্রকিত বদনে কহিলেন, বয়স্য। আমার নেলাবরণ করিয়া প্রকিত বদনে কহিলেন সংখ্ কিন্তে মায়ারণে ক্রিয়াছেন। মানবক কহিলেন সংখ্ কিন্তেপ অনুভব

क्रिटन ? ताक्षी क्रिट्निन मर्थ ! जारात क्रतश्रम स्था বাতিরেকে শরীর এরপ পুলকিত হইবে কেন ? দেখা कूबूमवन (कवन स्वथारकः । गेरे विकति छ रहेशा थाटक। **उद्यं**नी ता**जाजण्यार्म ज √. जूंठ रहे**गा मटन मटन कहिटड লাগিলেন কি আন্চর্যা! আমার শরীর অলস ও বাছযুগল এমত ছুর্ভর হইয়াছে যে নয়ন হইতে উত্তোলন করিতে পারিতেছি না; এই বলিয়া মুকুলিভাকী নয়ন হইতে হস্ত अश्नरान कतिशा कथिक्ष मस्त्रं गमरन ताजनमार्थ छेश-श्वि रहेटलन। त्रांका मर्भनमाळ नमज्जदम ममर्फना क-तिश উপবেশন কর।ইলেন। অনন্তর চিত্রলেখা রাজ-সমীপে উপস্থিত হইয়া কুশলবার্ত্তা জি জ্ঞানা করিলে, ভূ-পতি কহিলেন আজি তোমাদিগের শুভাগমনে দর্বডো-ভাবে কুশলী इहेनाम। উর্বাশী চিত্রলেখাকে সম্বোধন করিয়া কহিলেন স্থি। আমি দেবীর আদেশাসুসারেহ মহারাজের প্রদাদাকাজিকণী হ্ইয়াছি, নভুবা আমাকে भुदराजीतिनी विद्यवना कति । ना। यहे कथा अनिश ভূপতি সম্মিতবদনে কহিলেন, অরি হৃদয়হারিণি ৷ যদি আঁজি দেবীর অনুমতি ক্রমেই স্থীয়ভাবে আমার হৃদয় অধিকার করিতেছ, তবে বল দেখি প্রথমে কাহার অনু-मुण्डि वनभूसकं इतन कतिशाहितन ? ऐसंनी बहेकवा শুনিয়া আর কিছু উত্তর দিতে পারিলেন না। চিত্রলেখা তাঁহাকে উত্তরদানে অসমর্থ দেখিরা কহিলেন, মহারাজ ! আপনি ত্রিলোকরক্ষিতা, যদি চোর বলিয়া আপনার তপাই প্রতীতি হইয়া থাকে, তবে কখনই ইছাকে পরিজ্ঞান

कता विरक्ष मेर्ट्ड मञ्जलि चामात्र आर्थना এই বসন্তা-পগমে স্থাপরিচর্যার ভার আমার উপর অপিত হইয়ারে 🖁 শীঘ্র স্থারলোকে উপস্থিত হইজে হইবে; অতএব আমা-দিদের উপর এই কূপাদৃটি রাখিবেন, যেন প্রিয়নবী सूत्रत्नारकत निभिन्न छेश्कांकेष मा इन । ताका कहित्नन, मुम्पति ! प्रियत्नाक जारंगध मुर्चित चाकत, घाठवर ठामृग स्रथनिधान ज्ञान वित्यातिक कर्त्री महत्र कर्या नरह, उरव आनि এই মাত্র কহিতে পারি বেঁতিসাদের সহচরী আমার कीवनमर्दाय इहेटलम, शामि क्षांनभटन हेशांदर महाचे রাখিতে চেকা করিব। চিত্রলেখা বিনীতভাবে কহিলেন মহারাজ ইহা অপেকা আর অধিক অনুগ্রহের অভিলাবী नहि, यदयके इन्सारह। अने विनया छैर्सनीरक मरशायन कदिया कहित्वन, विद्वतिथि । अकृत्व अन्तमदन जामात्क विमात्र (मंख । উर्काणी अअपूर्व (लांहरन आनिक्रन कतित्र) न्नान वमरन कहिरलन प्रथि! यन आगारक अक्वारत जूल-क्रा शांकिए ना। विज्ञास्था कंश्रितन अति शृथिवींनायअग-য়িণি : ভুমি যাহা আশকা করিতেছ, একণে তাহা আমা-पिटगद्रहे व्यानक्रमीय, कलकः पृत्रावद्यान ना विट्यागावद्यां যথার্থ বন্ধতার বাতিক্রম জনাইতে পারে না; অতএব সে আশঙ্কা পরিত্যাগ করিয়া সদা সাবধানে মহারাজের শু শ্রাধা কর। এই বলিয়া নরপতিকে প্রণাম করিয়া সন্থানে क्षश्राम कहित्सम ।

অনন্তর মানবক ভূপতিকে সম্বোধন করিয়া কহিলেন সঙ্গে ! এত দিনে তোমার মনোর্থ পূর্ব হইল। রাজা

कश्लिम वत्रमा । अधिक कि कश्नि, अरे सूत्रविलामिनीत সমাগমলাতে আমি যেৰূপ পরিতৃপ্ত হইয়াছি, স্পাগরা ধরণীর একাধিপত্য প্রাপ্ত হইয়াও আপনাকে তাদৃশ ক্লুত-कार्या त्वाथ कति नारे, धरे यानशा नामदत फैलानीत एख भारतभूर्यक करिए नाभित्तम, श्रुमिति। श्रूरथेत व्यवश्रायः त्य जकत्वरे बाजीयठा करत, ज अठि यथार्थ कर्या । त्य रम स्थार खिकत्र विश्वदर्गात नाम मंत्रीत माह करिल, তাহা আজি সুশীতল চন্দনরসের ন্যায় দেহের সাহ্য সাধন क्रिटिंग्ड ; या मकन कि। किनकनत्र वक्रिनिर्धाय अक्र (वाध रूरेज, डांश जकरण संधुधाता वर्षण कतिर्द्धाः जन् যে সকল স্থরভিগন্ধ মনকে নিডাপ্ত উৎক্ষতিত করিত, ভাছাতে इनम यৎপরোনাস্তি প্রফুল হইতেছে; অধিক कि विनव य य मत्नातम व खबाठ क्रमग्रशक्नात आर्थि-ভাব করিত দে সমুদায়ই এক্ষণে আনন্দনীরের প্রস্তাবন **थन्तर्भ अञीत्रमान इंश्टिल्ड**! जेक्क्मी विनीलवहरन करि लान भशत्राक ! इंशानित्शत किहूई माय नाई जानिहे বিলম্বে আসিয়া সম্পূর্ণ অপরাধিনী ছইয়াছি। নরপতি কৈছিলেন স্থন্দরি! ছঃথের পর মুখ যেমন প্রীতিকর-ধারাবাহিক মুখ সেৰূপ সম্যোষকর নহে। দেখ তরুচ্ছায়া স্বভাবতঃ শীতল ; কিন্তু আতপতাপিত না হইলে তাহার যথার্থ শৈত্য গুণ অনুভব করা যায় না।

এই নপ কথোপকখন হইতেছে এমত সময়ে মানবক কহিলেন বয়স্য। আমরা অধিক ক্ষণ এই অনার তস্থানে অবস্থান করিতেছি, এস্থানে আরু অধিক ক্ষণ থাকা উচিত नत्र। ताका कहिलन मत्या चयार्थहे कहिएक, धहे विविद्या मकत्म शार्त्वाणान कितिलन। याहेएक याहेएक ज्लिकि जिस्मीतिक नित्यायन कितिया कहिलन सुन्निति! वित्रहात्रज्ञात वियामा त्यक्रण मीर्घयामा आजीव हहेफ, अफारण यक्ति (महेलाल त्याय हत्र छोड़ा हहेला जामि जालनात्क कृष्टार्थ त्याय किति, धहे विविद्या श्रहाजियूर्थ ध्येष्टान कितिलन।

#### विक्राविणी।

#### চতুর্থ ভাসং।

किश्रमिन चार्छी उ हरेला, अक मित्र छिजालक्षः महन मत्न ভाविত वाशिलन, वहापन इहेन अभि भगाः ग्रकत्य স্থানেবায় ব্যাপৃত আছি, এপর্য্যন্ত প্রাণাধিকা উর্ক্ষান্ত (काम म**अल**वार्छ। ना शा**रेश आ**मात रूपम अराज छेरक. िठ इहेगारह, किस अनािश शर्याात्र अदा इहेटच अश-एक इट्वात **खरमत उपछित इ**स माहे, ख असर पारेसः अविद्राय कानिव । याहा इंडेक मधार्थ व्यवहम द्रविहः দেখি, তিনি কিরূপ অবস্থার অবস্থিতি করিতেছেন। এই क्षण निक्त कतिया नमाविष्ठाता अवश्व इहेरलन, उद्धर्नः কাৰ্তিকেয় শাপে ভদধিকত উদ্যানপ্ৰাত্তে দভাৰপে 'পরিণত•হইরাছেন। ইহা দেখির' একবারে বিঘাদ मिलिटन निम्म इंडेरलन अमर्यमा रमाध्करोहिएक काल उत्क क्तिटल लागित्लन। महजना। नाम्नी छ। हात अक महण्ती তাঁছাকে নিতান্ত চিন্তাকুল দেখিয়া জিল্ঞান। করিলেন স্থি **চিত্রলেথে! অকন্মাৎ ভোমাকে এত ব্যাকুল এবং** ভোমার मुथकमन, मान ७ विषक्ष (मिथिएक्टि किन? हिजारमधी कहित्यन धिशमधि । कि कहित ज़ःत्य क्रम्स विमीन ररेएउट्ट। मरकता छोरात अहता ताका अवनमाज विभिन्न इहेश कहिलन मथि । তোমার क्या छनिया

आगात रुप्त किलाज रहेट उट्ड, ना शानि भहमा कि जात-त्मिक अनिके घटेना इहेल! याहा इंडेक मवित्मव छनिया স্মান্তঃখভাগিনী হইতে আমার অত্যন্ত বাসনা হই-हिंद्रत्वथा अञ्च्यूर्व लाइत्न कहिट्छ लागिरलम স্থি। একদা নরপতি পুরুরবা অমাতাবর্গের হত্তে সমস্ত সামাজ্যের ভারার্পণ করিয়া কৈলাস শিশরস্থনদ্দবনে বিহার বাসনায় গমন করিয়াছিলেন। তথায় সন্দাকিনী-ভীরে উনয়বতী নামী এক বিদ্যাধরদারিকা সিকতাপর্বত নির্মিত করিরা কীড়া করিতেছিল। রাজা তাহার অর্নে। কিক ৰূপ মাধুরী দর্শনে বিমোহিত হইয়া ক্ষণকাল ভাহার প্রতি সভৃষ্ণ দৃষ্টিপাত করিয়াছিলেন। তাহা দেখিয়া छेक्नी यद्भारतानान्ति तायभवनम इरेशा छाँश्व मध्मर्ग প্রবিভাগে করিতে উদাত হইলে নরপতি নানা প্রকার স্ততি বিনীতি করিতে লাগিলেন, কিন্তু তিনি ভাষতে কর্বপাত না করিয়া এক দিকে প্রস্থান করিলেন। একে নিতান্ত অভিমানী, তাহাতে আবার শাপপ্রভাগে দিব্য-জ্ঞানপুনা, মুতরাং দেবতানিয়ম বিস্মরণ পূর্বক অবলা-जनशतिरत्रभीत कार्जिटकशाधिक्र डेमाटन अटवम कति-লেন। প্ৰবিষ্ট ছইবামাত্ৰ কাননোপাত্তে লভাৰূপে পরি-ये इर्डेशार्ष्ट्य। महक्षता (महे नाक्षत टेनवह्किनाक খাবণ করিয়া করুণ বচনে কহিলেন, হায় দৈবের কি অলঞ্নীয় প্রভাব! তেমন আফুতিরও পরিণামে এই ভুরবন্ধা ঘটিলা বাহা হউক, স্থিণ তাহার পর কি হইল ? চিত্রলেখা কহিলেন, নরপতি তদৰ্ধি তাহার

चनर्भात छेगल्थात रहेत्रा चटहाताळ तर कानत्मत हकू-र्फिटक व्यवस्थ कतिया त्वडाहेटल्डिन ; এलिन यह हहे-বার হইয়াছে। সম্প্রতি বর্ষা কাল উপস্থিত। এইকাল ঋতি विषय काल। नवीन जनमजाल हादि मिक् बाळ्च कदिया মুম্মুর গভীর গর্জান করিতেছে, বোধ হইতেছে যেন নিতান্তাঞ্জিত চিরবিরহিত চাতকগণকে বারিদানার্থ আফা্-ন করিতেছে ;চাতককুল তাহা এবণ মাত্র সমীপবন্তী হই-सा **रुश्युहक कनकल धनि क**तिख्छा मागूत मशूती शन আহ্লাদে পুল্ছ বিস্তার করিয়া নৃত্য করিতেছে; কাশ কদ-ষ কুটল পুল্পের শোভার চতুর্দিক্ আলোকময় হইরাছে, **टाश्मिरंगत भतांगवाशी शक्षवर मन्स मन्स विश्वा नमूनम्** স্থান স্থাক্ষময় করিতেছে। এ সময়ে যোগিগবেরও মন विकृष्ट 'अ प्रभान हरेसा छेट्ये ; विविह्नित्वत कथा कि करिव ; অবশাই তাঁহার মানদিক বিকার অনিবার্যা হইয়া উঠিবে नरम्मर गाँरे। मर्बना। किस्काना कवित्वम, गथिन कार्जिन কেয় শাপ হইতে বিমুক্ত হইবার কি কোন উপায় নাই? চিত্রলেখা বাষ্পাগদাদ বচনে কহিলেন সখি। যদিও একটি মাত্র উপায় নির্দারিত আছে,তাহা অতীব দ্বুপাপা। ভগ্ন-বতী গৌরীর চরণরাগ্রসমূত সঙ্গমমণি ব্যতিরেকে শাপ-মোচনের আর উপায়ান্তর নাই। সহজন্যা কহিলেন স্থি। তাদৃশ মধুরাক্কতি কথন চিরছ:খভাগী হয় না; বোধ করি বিধি অনকূলতা প্রদর্শন করিয়া অবশাই তাঁহার ছঃখা-वनान केतिरवन। याश रूपेक आंत अंतरण रतामन केतिरन কি হ্ইবে, সম্পূতি সূর্য্যোপস্থান বেলা উপস্থিত। আইস त्रकार्या मन्भानत्म व्याचात्क नियुक्त कति, এই बिना छछ-त्त्र श्रम् कतित्वन ।

." अमित्क यथन झांचा उँकांनीवित्र हिन्छा कांच्य हरे सा আছার বিহারাদি পরিত্যারপূর্বেক কেবল কিবপে ভাঁহার. সহিত সমাগ্ৰম ইইবে নিয়ত এই চিন্তা করেন, তথন ছুরন্ড বর্ষাঋত্ব স্কুরধনুতে সৌলামিনী বাণ যোজনা করিয়া আক্র-মণ করাতে তাঁহাকে নিতান্ত অধীর করিতে লাগিল। তথন অন্যান্য সমুদায় চিন্তা দূরীভূত হইয়া কেবল উর্কাণী চিন্তাই তাঁহার মাননরাজ্য অধিকার করিল। निकु अवटन श्रादिश्वतीत मर्भन भारेव, वरे भितिखश्य जिनि चात्रात नव्रतनत चानम वर्कन कतित्वम, अहे नगीशूनितन আমাকে সাদ্র সভাষণ করিবেন এইরূপ নানা প্রকার কৃশ্যনা করিয়া ইতস্ততঃ অঘেষণ করিতে লাগিলেন। अग्रम नगरत कामस्ति निधनत कर्रालक क्रिनः कर्ण करन বিগ্রাতের আলোক বহির্গত হইতে লাগিল, এবং স্থারধন্ত छेनिछ इरेशः मत्नाइय स्नाडां विखात कतिन, अवै अन-প্রত বিন্দু বিন্দু বারিধার। পতিত হইতে লাগিল, ইহা त्विश्रा ताकात कई त्वाध हरेल यम ह्व्यू छ विकंगाकांत्र দৈতা শ্রাসনে শ্রসক্ষান ও বর্ষণ করিতে করিতে প্রিয়-ত मा छेकांगीरक इत्रग कतिया व्यञ्चान कतिर छट्ट, देश स्ति করিণা উদ্ধে দৃষ্টিপাতপুর্বাক প্রতীকারের চেন্টা দেখিতে লাগিলেন। দেখিতে দেখিতে অপ্সক্ষণেই তাঁহার আন্তি-দূর হইলে যৎপরেনোন্তি কাতর হইয়া কহিতে লাগিলেন, साम । देश नवीन शनमावनी, छुताचा निमाहत नरह । देश

वाखितिक नेतामन नरह, खुत्रपञ्च छैनिड हरेसारह ; हैसी বারিধারা পতিত হইতেছে; শরবর্ষণ নহে, ইছা সৌদান মিনীর অচিরপ্রভা প্রকাশিত হইতেছে, প্রিয়তমার শরীর শোভা নহে; হায়। ছুতাগ্য বশতঃ সকল ব্যক্তিই এই क्रम व्यकातरन व्यञातिष स्हेत्रा थात्क, अहे कथा कहिएड ক্ষিতেই ছুর্ভর ছুঃখভারে আক্রান্ত হুইয়া বিচেতন ও অবদীতলে নিপতিত হইলেন। ক্ষণকাল পরে সচেতন क्रेशा भारकाशान शृक्षक मीनवग्रतम कहिरच लागिरलग, এত স্থানে अध्ययन করিলাম এক স্থানেও দর্শন পাই-লাম ন । না জানি কোথায় গমন করিয়াছেন। তিনি কি ক্লোধবশে দেবযোনিম্বলভ স্থীয় ঞভাবে মানব জা-তির অংগাচর হইয়া আছেন? কিন্তু অধিকফণ তাদ্ধ হুইয়া থাক। তাহার স্বভাব নহে। কি অভিমানের অনু-तादय (मनदलादक शमन कतिशा थाकिदन ? किस्रु जिलि णनाना अञ्चरती**४ अटशका जा**गात अन्दश्त अन्दराष्ट्रक অপরিহার্য্য বিবেচন। করিয়া থাকেন, আর আমার সম্মুখ इक्टें य मानत्त्र जाहादक नहेंगा याहेत्व, हेश अ निज-ত্ত অসন্তাবিত, তথাপি তিনি কি নিমিত্ত আমার দৃষ্টি-পথের বহিত্তি হইলেন, কিছুই বুঝিতে পারিতেছি না : এইৰপ চিন্তা করিতেছেন এমত সময়ে, মেনমালা গভীর গর্জ্জন করিয়া বারিধারা বর্ষণ করিতে লাগিল,কদম্ব-পরাগবাহী স্থান্ধ গন্ধবহ মন্দ নন্দ বহিতে লাগিল; ভেক-कुल व्रॅष्ट्रक मन्मश्रीन कतिए लाशिल अवः विष्ठारछत अन लारक करन करन ठजुमिक जारनाक्यम हहेरल नानिन।

তথন রাজা নিতান্ত অধীর হইয়া কহিতে লাগিলেন, হায়! আজম হতভাগ্য লোকের এক প্রকার চুঃখ উপস্থিত र्हेट ना रहेट है रा नाना क्षकत हुः थे छेश द्वि रत्न. এ অতি যথার্থ কথা। দেখ, বেমন প্রিয়তমার বিরহত্তঃখ উপস্থিত হইল, অমনি বর্ষাঋতু মুরধনুতে শর্ষোজনা করিয়া তাহার উত্তেজনা করিতে লাগিল। किश्वा कलपत्रक मरश्यम कित्रश किरिङ नाशिलन, रह জলধর ! তুমি অবিরস্ত নববারি বর্ষণ করিয়া পৃথিবীর স ন্তাপ পরিহার করিয়া থাক, কি কারণে রোধণরবশ হইয়া আমার বিরহায়ির উত্তেজনা করিতেছ বলিতে পারিনাঃ णागि विनी उपहान (ए। भारत निक्छे धई क्षार्यना कति, एपि এই ভূম ওল অন্নেষ্ণ করিয়া প্রেরসীর বদনস্থাকর দর্শনে অধিকারী হইতে পারি, তবে আমি তোমার সমুদর অত্যা-চার সহ্য করিব; এক্ষণে ক্ষান্ত ২ও, এক্ষণে আমার প্রতি ক্রোধ পরিত্যার করিয়া কান্ত হও। অথবা সম্প্রতি ইহার অধিকার সময় উপন্থিত: সকলেই স্ব অধিকারকালে স্বীয় প্রভাব বিস্তার করিয়া থাকে, আর এইকাল উপস্থিত हरेबाटक विवसाई प्यामि ताकाकात स्रेसाट अतरंगः রাজোপচার প্রাপ্ত হুইতেছি; অতএব ইহাকে তিরস্কার কর। অমুচিত; এই সৌদামিনীশোভিত পয়োধরশ্রেণী অ:বার মণিমাণ্ডত নীল বিতান স্বৰূপ হইয়াছে; নিচুল বুক্তের মঞ্জরী, চামর ব্যঞ্জন অকপ হইয়াছে এবং ময়ুরগণ বর্ষাস্থলভ আনন্দে মধুরধনি করিয়া আমার স্তুতিপাঠকের কার্স্য নির্ব্বাহ করিতেছে। কিয়ৎক্ষণ চিস্তা করিয়া কহি-

লেন আমি কি নির্বোধ! প্রিয়তমার অধ্যেষণে প্রযুক্ত हरेशा अकारत आश्रमाधा अकाम कतिरुहि; रेश कि আমার পরিচ্ছদ পরিপাটীচিন্তার সময়? যাহা হউক এক द्यारन व्यवसान कतिरम अञीय मान रहेरव ना सामास्टरत याहे. এই कथा कहिन्ना जना এक मिटक छलिएलन। याहेटल याहरू अक नवकमनी इस्कत श्रम्कृष्टि श्रम्भ नकन দেখিতে পাইলেন। সেই পুম্পের প্রান্তভাগ ঈষৎ লোহিত वर्ग अवर अञासत मीलवर्ग मिथिया कहिएक लागितलम, প্রাণেশ্বরী কোন কারণ বশতঃ কোপনা হইলে ভাঁছার নেত্রযুগল বাষ্পপূর্ণ হইরা এইরূপ শোভা বিস্তার করিত: ভার। যেখানে ঘাই-সেই আনেই উচ্চার আরুতির প্রতি-क्रॅंड (मर्चिएड शारे, किस्र कान इंटनरे (शरे माहिनी मूर्जि नशन भारत हा सह ना। कि कति, कान् भारव व्यवस्थ হারিলে যে ভাঁহার দর্শন পাইব, এবং তিনি যে কোন পথের পথিক ইইয়াছেন, ভাষা উপলব্ধি করিতে পারি-टिছि ना । याहा इंडेक এहे अमबीट अध्यवन कति अहे विनिहा (अहे श्राय शमन कतिएक निशित्न । किश्नमृत यां हेशा कहिरलन, तांव इस जिमि अभरथं भर्मार्थं। करतेन নাই। কারণ একে ইহা দিকভাময় এবং ভাহাতে আবার অনবরত নিপ্তিত বারিধারা পরিবিক্ত হইতেছে, যদি সেই নিতমগুনী ইহাতে পাদবিনাস করিতেন, তাহা হইলে পশ্চায়ত ও অলক্ষকান্ধিত চরণচিত্র অবশ্যই লক্ষিত হইত। এই স্থির করিয়া তাহা পরিত্যাগ করিয়া ইত-স্ততঃ তাঁহার গমন পথ অবেষণ করিতে লাগিলেন

কিয়ন্দুর গমন করিয়া এক দিকে দৃষ্টিপাত করিয়া কছি-इंहा जानकाठ दहेन (कन ? (वाथ इस यथन অভिमानिनी রোবভরে ড়েতগামিনী হইয়াছিলেন, তথন ছুর্ভর পয়োধর ভারধারণে অসমর্থ ছইয়া ভ্রম্ট ও পতিত হইয়া থাকিবে; **ान हेडा मन्भुनं भी**खर्न हिन, मर्सा मर्सा किन्रहा लोहिन जिल्ला ? ताथ कति कुःचिनीत नमनवाति चथतः রাগ কালন করিয়া ইহাতে ঋলিত হইয়া থাকিবে; বাহা इडेक, इंडा अध्न कतियां अरे भार गमन कति। अरे विलिश তाहात निक्रिवेखी हहेगा मिथिलिन, जाहा छना -खक नहरु, रेख्नदशाभकी छेभून भाषन स्मि निष्य करिया যৎপরোনান্তি কাতর হুইয়া কহিতে লাগিলেন, হার প্রভাগ্যের কেমন প্রভাব। পদে পদে প্রভারিত করি-হা দশ্ধবিধে ৷ আর কত কাল আমায় প্রতা-त्रना क्रिकि, अधन अ कि जात यदगात्रथ भून इस नाहे ? যাহা ১উক আর আমি খ্রং কোন উপান্ন উদ্ধার্গনের যুদ্ করিয়া বারহার এতারণা ক্লেশ সহা করিতে পারি না; यांक काकात्र अनिकृष्टे नमाठात পाके, खाहात्र असूनकान করি। এই বলিয়া ইতস্তঃ দৃটি নিক্ষেপ করিয়া দেখি-लाम अक मधूत आनत्म पूष्ट विश्वात भूक्तक छेन्धीव इरेश (मधम अन अवदनाकन कतिराज्य ; मिथिश क्रके **চিত্তে** তাহার নিকটবর্তী হইয়া কহিলেন হে নীলকণ্ঠ। यि आमात की विष्यती जामात नत्रन शाहत इहेता था-क्न, उद्भ वल जिनि कान् निष्क श्रमन क्तिलन। विर्श-

জাতি মানবজাতির কথা কি বুঝিবে, সে বর্ষাকালস্থাত আফ্লাদবিমুগ্ধ হইয়া বহাবলী বিস্তার করিয়া নৃত্য করিতে আরম্ভ করিল। নরপতি উর্ব্বশীবিরহে চেতনাচেতনজ্ঞান-পুন্য, তাহাকে উত্তর দানে পরাগ্র্খ দেখিয়া কহিলেন, উত্তর না দিয়াই নৃত্য করিতে লাগিল; বোধ করি প্রেয়-শীর অমুদ্দেশ বার্ত্তা শ্রবণে ইছার আন্তরিক হর্ষোদয় হই-য়াছে ; কারণ, তাঁহার কোন প্রকার অনিষ্ট ঘটিলে ইহার कनारभत जीतर । इम्र, नजुरा भिष्टे सुर्क्गीत कुन्नुः মশোভিত ও বিগলিত বন্ধকেশকলাপ বিদ্যমান থাকি-তে কোন্ব্জি ইহার ষৎসামান্ সৌন্দ্যালী শিখ-ওের সমাদর করিবে? যাহা হউক পরব্যসনস্থী এই বিহগাধমকে আর জিজাসা করিব না। এই বলিয়া তথা हरेट अञ्चान कतिरलन। किस्न हत् **धक क**म्हरक धक काकिनदक प्रविद्य शाहेशा आमिनिस्ट मदन कहिएतम, পিকিমধো এই জ।তি অতি ব্রিজীধী, ইহাকে জিজাসা করিলে অবশ্যই সন্ধান পাইব। এই ছির করিয়া তংহার मभी প्रवर्शी हो ता कि छाना कति लिन, हर शिक नत । यनि संमध्तजाविनी जामात अपितिनी जामात नग्ननभरवत भ-থিক হইয়া থাকেন, ভবে বল কোন্ভানে তিনি প্ৰস্থান করিলেন ? কোকিল তাঁহার কথা কি বুঝিবে, সে মনুষ্য দেখিয়া সেই দিকে নেত্রপাত করিল তাহা দেখিয়া ভাবি লেন, যেন কিছু জিজ্ঞাসা করিতেছে, ইহা নিশ্চয় করিয়া কহিলেন, কি নিমিত্ত একান্ত অনুরক্ত আমাকে পরিত্যাপ कतिरनन এই कथा जिल्लामा कतिरुहः? जाउः! कथन

ভাঁহার কোপের কারণ কোন প্রকার অন্যায় আচরণ করিয়াছি বলিয়া আমার অরণ হয় না, তবে যে তিনি কি নিমিত্ত আমার প্রতি প্রতিকুল হইলেন, তাহা তিনিই আনেন, কিন্তু এই মাত্র জানি রমণীগণ পুরুষ জাতির উপর প্রভুত্ব ও যথেক্ছাচরণ করিতে একান্ত বাসনা করে, অপরাধ পর্যান্ত অপেকা। করিতে চাহে না।

তিনি এই রূপ আর্তভাব ব্যক্ত করিতেছেন, কোকিল मिशिल, देहा इटेट कान अनिके आगका नारे,रेश डित করিয়া কথন জয়ফল আহার, কথন বা কুছরব করিতে लाजिल। जाहा रेमिथमा काउन बहरन कहिएड लाजितन, হায়। জনতের কি এইকপ নতি। কেই কাহারও ছঃথে ष्ठुःशिङ इय नाः, मक**त्वरं** श्रीय यानतम यानिमङ स्ट्रेड ভাল বাসে। ইহাতে বেখে হয় লোকে অনোর অত।প মাত্র স্থাকে অভুল স্থাও নিতান্ত অসহা ক্লেশকেও সামান্য यसना (ताथ कतिया थातक धरे या शाहीन क्षवाम आहर, हेरात ग्यार्थ प्रत्यः आत कान मतम्ह नाहै। गार्श रहेक, **এই বিহল্প জাতি প্রেয়নীর ন্যায় মঞ্জাবিলী**; অতএব কোপভারে ইহার উপর কোন প্রকার অত্যাচার করা অবি-(धन्न, अहे विद्वहनां कतियां छथा इहेर्ड अञ्चान कतिदलन। এवং याङ्केट याङ्केट कहिटलन अहे वनष्ठलीत पिक्रवाश्या মুপুরঞ্চনি হইতেছে; বোধ করি, অভিমানিনী এই পর্বে যাইতেছেন,এই দ্বির করিয়া তদনুসরণ ক্রমে তথায় উপ-ভিত হইয়া দীৰ্ঘ নিশাস পরিজ্ঞাগ পুর্বাক কহিলেন, হা বিধে: আর কত কাল আমাকে প্রভারণালালে নিবজ कतिहा व्यक्तिराया प्रथमानदा निमध त्राधिदा ? এখনও कि তোমার মনোরথ পুর্ব হয় নাই ? হায়! বর্দাগমে মানদ-গামী মরালগণ মৃণালাদি পাথের গ্রহণ পূর্বক আলীয় স্বজনদিগকে আহ্বান করিতেছে; সূপুরধ্বনি নহে। যাহা হউক যাবৎ ইহারা গগনমার্গে উড্ডীন ন। হয় তাবৎ ইহা-দিগকে জিজ্ঞাসা করি, ইহারা অবশ্য বলিয়া দিতে পারি-এই নিশ্চয় করিয়া কহিতে লাগিলেন, হে জলবিছ-ঙ্গমরাজ। পক্ষিজাতিতে তোমরা অতিশয় সাধু। সাধু বাজিরা স্কার্য্যদেশকা অনোর চুংখ শান্তি অবশ্য সম্পাদ-নীয় বোধ করেন. এই নিমিত্ত অনুরোধ করিতেছি যদি আমার হৃদয়হারিণা তোমার নেত্রপথে প্রতিত হইয়া থা-क्ति, তবে অত্যে ভাঁহার <del>শুভ স</del>মাচার প্রদান করিয়া আমাকে ত্বর্ত্তর শোকভার হইতে অবহত করু, পশ্চাং मानम मदतानदत गंभन कतिछ। इश्म मानवकाछि (मधिय উন্থ হইয়া দেখিতে লাশিল ইহা দেখিয়া নরপতি বোধ করিলেন যখন উৎস্ক নয়নে দৃষ্টিপাত করিতেছে, তখন দেবিয়া গোপন করিবার অভিপ্রায় ব্যক্ত করিতেছে স-(मार मारे। देश दिव कतिया किहिलन ति इश्म। (गालन করিতেছ কেন? আমার স্পাষ্ট বোধ হইতেছে অবশ্যই তিনি ভোমার নয়নানন্দিনী হইয়া থাকিবেন, নতুবা কি कर्पि छाँशांत भिंछ विख्य इत् वितिष्ट विश्वन छाँशांत विमानगमन जानात निकं निकं हरेटलाइ, जनन তোমাকে তাঁহাকে প্রদান করিতে হইবে; যে হেতু চৌর-शृद्ध व्यथक्ष वस्त्र अक्षिमाज-विकृष इहेरल जाहादक

# विकरमावनी ।

সমুদায় হৃতবন্ধ রাজদারে উপস্থিত করিতে হয়, এই কণা कहिट कहिट छ है जाहाता नकटन श्रञ्ज इहेशा गंगनमार्ट्ग উড্ডীন হইল, তাহা দেখিয়া কহিলেন, হায়! ইহারা আসাকে রাজা বলিয়া বানতে পারিয়া দণ্ডভয়ে পলায়ন कृतिन. এখানে আর বিষয়া हिन्छ। করিলে কি হইবে, यनि অনা কোন স্থানে কাহারও নিক্ট সমাচার পাই, তাহারই **(हकी) कदि, এই कहिला किसमात गमन क**दिशा এक निरक দৃষ্টিপাত পূর্দ্ধক কহিলেন, এই যে এক চক্রবাক আপন প্রেয়সীর সহিত বসিয়া ক্রীড়া কোতুক করিভেছে, ইহাকে क्रिक्षामा कति। এই वितिश ठाहात्र निकृषे भगन कति-লেন এবং জিজ্ঞানা করিলেন,হে চক্রবাক ৷ ভুমি আমার थाम्त्री **উर्द्धगादक (मधिम्राष्ट**) (म रेमदार (महे मित्क मुथ कितारेश गफ कतिन, তाहा अनिया ताकः ভावित्नम আমার পরিচয় জিজ্ঞানা করিতেছে, এই প্রির করিয়া क दिलान जुमि आभारक जान नी, आभि हतावः नीत ताका পুরুরবা, উর্ফাশীবিরহে আমার এতাদৃশী ছুর্গতি ঘটিরাছে। एक वाक छ। हात कथा कि बुबिद्द , दम सीश शीमस्त्रिमीत महिङ आस्माम आस्त्राम कतिए लागिन। नत्रशिक छो-িহাকে উত্তর দানে অযত্র প্রকাশ করিতে দেখিয়া অভি-শয় বিরক্ত হইয়া কহিলেন, রে রথাঙ্গনাম : আপনার অন্তকরণের সহিত তুলনা করিয়া অন্যের সুখ ছুঃখের व्यवका भर्तात्माहना कता मकत्वत्रहे छेहिछ। जाविहा रमथ, महावदत की जा कतिए कतिए छामात महत्ती निनी भटक असरिं छ इहेटल, जुनि खाहाटक मृत्रशामिनी

# DES SE

ভাষিরা কত চীৎকার করিয়া থাক; আমাকে চিরবিরহিত ও নিতান্ত কাতর দেখিয়াও ভাঁহার সন্দেশ দারা স্থা করিতে ভার বোধ করিতেছ, ইহা ভোষার উচিত নহে। অথবা এ বিষয়ে ভোমার কোন দেখি নাই, আমারই জনা-डर्नभाष्टरकत शतिवष्ट कन किनिएएए। वाहा इडेक, অন্যক্র গমন করি। এই বলিয়া এক সরোবরতীরে উপস্থিত रहेशा (मर्थितनन, अक श्रकृत कमर्म अक मध्कत मधुमरक जब इहेश छन् छन घटत शान कतिरुटह ; তाहा प्रतिश कहित्त नातित्नम, यनिष्ठ हें इहेर्ड थिया अतृतिनाच বিষয়ে সম্পূৰ্ণ সন্দেহ উপস্থিত হইতেছে, তথাপি ইহাকে পরিত্যাগ করিয়া নিয়া পাছে পশাৎ অনুতাপিত হইতে र्यः, এই আশকায় জিজাসা করিতে অভিনায হইতেছে। এইৰূপ ভাবিয়া সন্দিহানমনে তাহাকে জিজ্ঞাসা করিলেন, ছে মধুকর। যদি ভূমি সেই মদিরাকীর কোন ধংবাদ জান তাষ্ঠ্ৰিইলে বিস্তারিতৰূপে বর্ণন করিয়া আমার উৎক-निकाकूँ ने एथन टिएउत श्राष्ट्रा मन्धापन कतः किस आगात বোধ হইতেছে, সেই সম্পূর্ণচন্দ্রাননা ভোমার নয়নগোচর रंतिन नाहे; कात्रन, यपि छै। हात्र मूचकमत्मत स्वजिनका একবার আত্রাণ করিতে, তাহা হইলে এই সামান্য কমল গালৈ মুদ্ধিইয়া আমোদ করিতে কথনই ভোমার প্রবৃত্তি र्के मार्कि अहे विनया उथा इटेट अवान कतिरम्म। किशमुद्धः अंक कमम्रह्ममृत्य अक रेखी रेखिनीम् मानकी পলব আহার করিতেছে, দেখিয়া ছাউমনে কহিতে লাগি लन, हेरात निकंगे व्यसभीत कुमनराई। भारेट भातिक,

क्षि अकटन देशांक विश्वक कक्षा छिति नटर ; त्यटर्कु निम गर्छतीत गर्छ जानत्म जारात कतिराहर । अर ৰলিয়া ভাহার ভোজনসমান্তি পর্যান্ত প্রতীকা ক্রিয়া विष्टिलम् । किय९कन् शद्द डाइटम्त आहात्रामि ममाशत र्रेटन ममीशवर्खी, ररेमा कहिटनम् ए कतिताक। कृषि বেমন ধর্থপতি, আমাকেও লোকে ভূপতি বলিয়া থাকে। यथार्थ अविश्वनी वटि ; नकल विषद्यहे आमारमत्र केंका चिन-রাছে; কিন্তু আমি প্রার্থন। করি যেন আমার মত তোমাকে वित्रहाक्षिएक मक्ष रहेएक ना रहा। यनि कृषि आभाव প্রিয়ভনাকে দেখিয়া থাক তবে বল, তিনি কোন্ স্থানে অবস্থান করিতেছেন। হস্তী পশুজাতি, ভাঁহার মনোরথ কিৰপে পূৰ্ণ করিবে। স্কুতরাং তথা হইতে প্রস্থান করিয়া এক পর্বত অবলোকন করিয়া কহিলেন, বোধ হয় ইহারই নাম স্থরভিকন্দর সালুমান। এই ভূধর অপসরজাতির অতিশয় মনোহর; বোধ করি ইহার উপত্যকায় মনোরমার पर्भन शाहेव। धहे ड्रिब कतिया जाहात निकटेवर्जी इहेग्रा कहिटलन, हेका महत्करे अक्षकातावृत्त, जाहाटक आवातं स्परमानत रुषताटण कि छूरे मृचित्शावत रहेटण ह ना, कि ख মেঘের বেৰপ আকৃতি দেখিতেছি, বোধ হয় অচিরাৎ অচিরপ্রভার প্রভা বিস্তারিত হইতে পারে, তাহা হইলে महे पाटनाटक मञ्जूमात्र झान मृथित्या हत्र रहेवात मञ्जावना । अट्टे विद्वहनाश व्यानक करा छथात्र मधाश्रमान ब्रहिटलन. किन्द जाहात मट्या स्नोमामिनीत छमा हहेल ना मिश्रा

কহিতে, সাগিলেন হায় ৷ ছুর্ভাগ্যের সময় অবশাস্তা विषय परिया छिटो मा। याहा रेडिक देशांक बिखाना ারুরি এই স্থির করিয়া কহিলেন, হে ভূধরনাথ। ভূমি त्नहे नद्वाक्रयुम्पती युवकामिनीरक महेमरभावत कविहाइ ? পর্বতগুহার এই শব্দের প্রতিধানি প্রবণ করিয়া বোধ कतिरामन, रचन मिथिशाष्ट्रि विनिश छेखत थानान वाका निर्गठ हरेन । किस किथिए भारतेरे आधार जिल्लामा বাক্যের প্রতিথানি হইল বুমিতে পারিয়া ছুর্ভর শোক-छात्त प्राक्रास इरेश भूक ७ विष्ठ एन इरेलन। प्रातक क्रव शरत मरह जन इरे हा विषक्ष मरन कहिर ज्वा विश्वन আঃ নিতাত পরিআন্ত ইইয়াছি আর ভ্রমণ করিতে পারি না ; কিয়ৎ ক্ষণ এই গিরিনদীর তীরে উপবেশন कतिया जतकानिवासियान जानिज क्षत्र मीजन कति। এই বলিয়া তথায় উপবিফ হইয়া নদীর নানাৰূপ শোভা নিত্তীক্ষণ করিতে লাগিলেম। অমবরত তরঙ্গ উপিত इ उदार उर्वाद इरेल राम मनी आउकी कतिया उर्जन कति . তেছে; হংস সারস চক্রবাক প্রভৃতি জলবিহঙ্গমকুল শ্রেণীবদ্ধ হইয়া ক্রীড়া করিতেছে, তাহাতে বাধ হইল নেন মণিময় মেখলা পরিধান করিয়াছে: স্রোতের উপর ভাসনান ফেনরাশি দেখিয়া বোধ হইল যেন নিভয়-चानिত वनन आकर्षन कतिएउए धवः वक्तनामिनी इहेग्रा रयन रयोकमञ्चल विलामशयन श्रीकाण कतिराज्या । मत्र-পতি এই সকল কামিনীসদৃশ ভাব বিলোকন করিয়া মনে মনে কহিতে লাগিলেন, বোধ করি কোপনা অভিমান-

ভরে ন্দীর্শা অবলয়ন করিয়াছেন ৷ এই ছিরু করিয়া क्रिमादबार्द्धः स्म हे नहीरक मरबायन कतिहा कहिएछ লাগিলেন, হে মানিনি আমার হৃদয় তোমার প্রতি যে-ক্রপ অনুরক্ত, তাহা আমার আধুনিক অবছা দারা স্পাই অতীত হইতে পারে এবং প্রণয়ভঙ্গভয়ে কথন পরুব बाका धदमान कतिए भामात माहम रह नारे, छथानि কি অপরাধে আমাকে পরিভাগে করিলে বল? কলো-লিনী অচেতন, তাঁহার বিলাপ ও পরিতাপ কি বুঝিৰে; স্থতরাং নরপতি কোন উত্তর না পাইয়া বুঝিতে পারি-त्तन, इंश यथार्थरे त्याउयठी, षामात व्यस्ती नत्र ; नजुरा जामारक পরিত্যাপ করিয়া সমুদ্রাভিসারিণী হইতে কেন। যাহা হউক আর ইতন্ততঃ অন্নেরণ করিয়া কি ছইবে, বরং যে স্থানে ভাঁছাকে হারাইস্লাছি তথায় গিয়া व्यक्ष्यन कति। এই बिलशा शक्षमाननवनाष्ट्रियः अञ्चन করিতে করিতে এক ছরিণকে সম্মুখে দেখিতে পাইয়া কহিলেন, ইহাকেও একবার জিজ্ঞাসা করিয়া দেখি, এই বলিয়া তাহাকে কহিলেন হে হরিণরাজ ৷ ভোমার ন্যায় आकर्विवाखरलाहनाः आभात क्षित्रच्या स्कान् पिरक अभने করিরাছেন বলিভে পার ? সে পশু, তাঁছার কথা কি বুঝি-त ; मुख्यः कतिए कतिए कतिए कार्या अमृत्थ हिना (शन। ढांश मिथेश नवलिंछ मीर्घ नियाम প्रविज्ञान कविशा कहिएड नाशिरशन, शंस ! रेमर প্রতিকুল स्टेरन य मर्यक পরাষ্ট্ত হইতে হয়, এত দিনে ইছা আমার সমাক্ রূপে क्रमाज्यम स्ट्रेश।

অনন্তর নরপতি কোন ছানে উর্বালীর দর্শন বা সমা-চার্না পাইরা নিভান্ত অধীর হইয়া অঞ্পূর্ণ নয়নে 🗞 भागाम बहरन कहिएल माभिरत्यन. हा श्रिश्च ह्या है। भर्म-্ক্সগামিনি! হা মঞ্জুভাষিণি ৷ হা মদর্থস্করলোকগরিভ্যা পিনি। হা জীবিতেশ্বরি। তুমি কোথায় আছে, একবার আমার কথার উত্তর দাও, একবার আসিয়া সচলে আমার দশা দেখিয়া দাও; আমি তোমার অদর্শনে সমস্ত সাম্রান্ধ্যে क्षमाञ्जनि निया जैभएखत नगात वरन वरन खमन कतिराज्ञ । হায় ভোমার মনে কি এই ছিল! আমাকে এই রূপ যত্রণা দিবে বলিয়াই কি তখন তাদৃশ প্রণয়পাশে বদ্ধ করিয়া-ছিলে? তোমার সেই অরুত্রিম স্থেহ ও অলৌকিক অনু-রাগ কোথার গেল? পূর্বে আমার সমকে যে সমস্ত অনুকূল কথা বলিতে, দে সমুদায়ই মিথ্যাস্থাতবাদ মাত্র; नजूर। जूमि माहात कर्गार्क अपर्यात अलग्न कान कविट. এক্ষণে তাহার চিরবিরহ কি কপে অকাতর মনে সহ্য করিতেছ এবং যাহার অত্যাপ মাত্র শারিরীক অমুখ অবণ করিলে নিভান্ত ব্যাকুল হইতে. এফণে তাহার উদুশ অসহা যন্ত্রণা ও নিভান্ত ছবিবিষ্ঠ ছবুবস্থা দেখিয়া কিৰূপে নিশ্চিন্ত রহিয়াছ? বুঝিলাম ভুমি যে সকল ভাব আন্ত-तिक विनशा **जांग कतिर्द्ध, (म मश्चु**पांश्रहे (म)थिक ; याहा হউক যেখানে যাই, সর্বাত্র ভোমার অঙ্গলতিকার অন্তু-काति स्कूमात वस्रकाण महनदशानत इस, किन्छ स्ट মোহিনী মৃত্তি এককালে অলক্ষিত হইল। হায়। কেন অব্দরগণের কাতর শ্বর আমার অবণগোচর হইল, কেন-

निक प्राप्त मरकार अकिसाय, दक्तरे रा मर्गम विवनविधि क्षत्र असूत्रक वर्षण हो संबोधित । यमि সেই চিরুসঞ্চিত মুখে একবারে বঞ্চিত করিবি বলিয়। তোর মনে ছিল, তরে কেন তাঁহার রূপে পক্ষপাতী করিয়া व्यागाटक नाष्ट्राटनंत्र निकाण्याम, महणादिशटनंत्र উপहात्रा-ल्यम, तास्त्रीत साम्रात्मान ७ अकागटनत त्नाकान्यान, शति-শেৰে বনচর कंत्रियां स्वितिषद स्थानीटन निमध कतिनि ? रा मन्भ्रविष्यामरमः । अ अधीनरक भतिष्ठाभ कतिरव विश्वा यनि ट्यामात्र महन निकास हिना, जरव त्कंस मर्जनका विश्व जानून अन्य अकान कतिरम ? क्विहे दा अकादनीरमाहमः ছলে সত্ত দৃষ্টিপাত করিয়া আমার হৃদর হরণ করিলে ? क्तिके वा नामाना भानत्वत करना व्यव्यवस्थितिका सूत-লোক পরিত্যাণ করিলে এবং কি অপরাধেই বা भागारक यावष्कीवन सूर्य विशेष्ठ कतिरुवः? आगि आरमाः পাস্ত মনে করিয়া দেখিতেছি. কিন্তু কখন স্বপ্নেও তোমার অনানর করিয়াছি বলিয়া স্মরণ হয় নী, ববং আমি যে দৰ্বাথা ভোমারই অধীন ছিলাম, ভাহা এক্ষণে স্পান্ত অনুজুত হইতেছে। দেখা যে হস্ত ভোমার শরীর ममारत ও পরিচ্ছদ পরিধাপনে নিযুক্ত ছিল এবং ভুমি গলে ধারণ করিবে বলিয়া যাহা নানাজাতি পুজা চয়ন করিয়া মনোহর মাল্য প্রস্তুত করিত, যাহা ভোমার চরণ রঞ্জনার্থ অলক্তক ধারণ করিত, যাহা ভোনার বদনার-विरम नामदत स्तम स्था ७ भानीत वर्षण कृतिक, যাহা তোমার তামুলকরত্ব ধারণ করিয়া থাকিও, বাহা





তোমার অলে द्वनिक विद्वालयगादन गार्नु । याहा তোমার সাহ্যকর বায়ু नकालमार्थ वासन मका-লন করিত এবং যে কোন আবশাক বিষয়ে সদা তৎপর थाकिछ, अकरन तमहे इंड कड़ी पूछ हहे ब्राट्ड ; अवर त्य দর্ম তোমার মোহনত্ত্বপ অমবরত অবলোকন করিত. তাহা আর কোন বস্তুতে দৃষ্টিপাত করিতে চাহেনা ; যে নাদিকা তোমার মুথকমলের স্থরভিনন্ধ আত্রাণ করিত, তাহা আর কোন গন্ধ আদ্রাণ করিতে প্রবৃত্তি করে না; य कर्न निव्रष्ठ তোমার स्थामय तहनविन्ताम ७ सूर्युत-রণিত আবণ করিত, তাহা আরে কোন মধুর ধনি শুনিতে পদ্মত নহে; যে স্কৃ তোমার মুগম্পর্শ অঞ্চ স্পর্শ করিত, তাহা আর কোন বস্তুই স্পর্শ করিতে প্রয়ন্ত হয় না এবং যে রসনা তোমার সহিত সতত পরিহাস করিত, এক্সণে তাহা তোমার গুণবর্ণন ভিন্ন অন্য কোন বর্ণ উচ্চারণ করিতে নিতান্ত অনিচ্ছা প্রদর্শন করিতেছে। যাহা হ্উক, कृषि कि अरे जनभूना श्रास्तंत मसारद्ध পण्डि रहेशारह, কি এই ভীষণ গৰ্ন কাননে সিংহ ব্যাঘ্ৰ প্ৰভৃতি হিংস্ৰ জন্তুর হস্তগত হইয়াছ, কি অসহায়িনী বলিয়া দানৰ কর্ত্ত অপসত হইয়াছ, কি রোধাবেশে স্থরলোকে প্রস্থান করি-য়াছ ? ইতাদি নানা প্রকার সন্দেহে আমার মন অতাত্ত व्याकृत इहेशारह, भीख धकवात्र हजानन अपर्मन कत्रिश मत्मार ७%न कता भात कि अभवार्थरे वा आमारक পहिला न कतिता सक्योक्षात अक्यात तारे कथा है विनया याल, जाहा स्टेटलरे आणि निःमदम्ब हरे। अहे



त्राण उ जनात्रण माना क्यांत विमाल कतिए माशिरमन। কিয়ৎকণ পরে কিঞ্চিৎ ধৈর্যাবলয়ন পুর্বাক কহিতে माशिरमन, जात जातरण रहामन कहिरल कि श्रेरत। यमि কোন পদবীতে প্রেম্বর্গীর কোন প্রকার চিহ্ন দেখিতে भारे, जागबरे अरचर्य कति अरे वित्रा कथिकः शास्त्री-থান করিয়া ইতস্ততঃ দৃটি নিক্ষেপ করিতে লাগিলেন; शिविष्यार अक निमार्शन अंक दक्तवर्ग मनि व्यवस्तातम করিয়া কহিতে লাগিলেন, এই সন্মুখন্থিত শিলাখণ্ডে যে লোহিত বস্তু দৈখিতেছি, ইহা কি হরিহত গজমাংসের कियमश्म ; ना, जाहा इहेटन अज्ञान छिक्कन इहेटन दिन ; उत् कि अधिकर्गा: किन्नु कर्ण कर्ण एक याजा वृष्टि हहे-उद्देश जाहार जाहाकना कथनर अगठ जेक्कन थाकिएड शास्त्र माः स्वाथ इस लाहिज्यस्वत हीत्रकथल इहेस्यः मञ्दा अमा काम रख धना अवाहिष्ठ क्यांजिः विकीर्व করিতে পারে না, মার ইহার উপর স্থয়ারশ্মি প্রতিফলিত হওয়াতে বেংধ হ'ইতেছে যেন দিনকর নিজ করাবলী দ্বারা हेश छेटजानम कतिवात (वंकी) कतिराज्यका ; याहा रूपेक গ্ৰহণ করিতে হইল, এই নিশ্চয় করিয়া নিকটবর্তী হইয়া **मिथित्वन यथीर्थरै तक्कवर्त्व मिथिछ। श्रेहन क**विशा कहिट्छ लाभिटलन, हेरा घाँदात मन्मात्रमालादविष्ठ (वंगी-बद्धात मधाकाल विमाख कतिवात छेशयूख्न, यमि मिटे सुरकमा (अग्रनीहे जिल्ला) इंदेरनम, जरव त्र्था कम हरख शार्व कतिया देशांटक जंडांट्डांटड मनिन कति, धरे विनेशे বেমন পরিস্ত্যাগ করিলেন, তৎকণাৎ এই আকাশবাণী



डाहात कर्वटभावत रहेक अ वरका है है। स्तिडाभ क्रिक না, শীত্র গ্রহণ কর। ইহা জগবতী পার্বেতীর চরণরাগ-मसुष्ठ राख्न, हेहात् आप मक्त्रमानि । हेहात विटलव छन अहे যে, যে ব্যক্তি ইহাকে ধারণ করে, অচিরাৎ তাহার দূরস্থ বল্লুজনের সহিত সমাগম হয়। " নরপতি অবণ মাত্র উৎস্কৃতিতে গ্রহণ করিয়া তাহাকে সয়োধন করিয়া কহি-লেন হে সক্ষমণে! যদি ভুমি সেই প্রাণেশ্বরীর সহিত আমাকে সমাগত করিতে পার, তাহা হইলে আমি যাব-জ্জীবন তোমাকে শিরোমণি করিয়া মস্তব্ধে ধারণ করিব। এই बार कहिएक कहिएक समा कतिएक मानिस्मा । महि-তে যাইতে এক অম্বুৎফুল্লকুম্বন লতা বিলোকন করিয়া কহিলেন হায় ! এই পুষ্পহীন লতা দেখিয়া কি নিমিন্ত আমার ভূপ্তি লাভ হইভেছেনা। যত বার দেখি ভতই धनगृहस्ये (मथिटक हेम्छा इस अवः अकातरः। अर-कतरः। छेकाशीनमारनाइन इर्षामग्र इट्रेड्ड्इ। द्कि (मरे एडि-মানিনী কোধভারে লভারপ ধারণ করিয়া থাকিবেন, কা-রণ ইহার অচিরোদ্যাত নববারিসিক্ত রক্তপল্লব দেখিয়া বোধ হয় যেন কোপনায় অধরস্থল আঞ্জলে আদ্রি হই-য়াছে; পুষ্পবিরহে বোধ হয় যেন অভিমানভরে সমুদয় আতরণ পরিত্যাগ করিয়াছেক এবং ভ্রমরগুঞ্জিতাভাবে বোধ হয় যেন মৌনভাবে চিন্তা করিতেছেন; বাহা ইউক্ এই লতা সর্কাথা প্রেয়সীর অনুকারিণী। অতএক একবার रेहादक कारमधा कतिमा नकण हुः रथत कारमान कति, अहे বলিয়া তাহা আলিঞ্চন করিবামাত্র উর্বাদী স্বস্তুপ প্রাপ্ত





হইদেন এক উলির শ্রীরস্থান্ত্র রাজার অভুত रुखशहरू महागाँ मिनिविज्ञानक रहेगा गतन मत्म कहिए माशिदमन, आहा । इस्ति म्लाम त्यासीत नाजम्मात्र শ্যার আমাকে হ'হ ও শীতন করিতেছে; কিন্ত প্রিয়া বোধে যে যে বস্তুতে আগরী ক্ইয়াছিলাম, পরিশেষে সর্বাত্র প্রতারিত হইরাছি, বিকাশে আর সহসা দক্ষ নয়ন **उँगीनन कतिया अ**छातिछ **रहेर्च मा, अरे** तिनिया उन्ज नियोगन क्रिया थाकिए एको क्रिक्ट माणिएनम, किंख जानून छ्रदेशन में मंत्र प्रकृ निजी निक् रहेशा शांकरङ পারিবে কেন; শীঘ্রই ভাঁহাকে নেত্র উদীলন করিতে হইল। উন্নীলন করিবানাত্র উ**র্বলীর**্মোহিনী মূর্ত্তি (मशिरङ পाইरनन। प्रिथिश माज विस्माहिक, विरुक्ति अ वजाउनभाती एकेटनम । जैकाणी मन्दर एहेता जीहातक श्रांतन कतिया कहिंदलन महाज्ञाल। जीवानिक इन्ते। नेकी भीत এই अमृष्टमेस बाका कर्नकूरत अतिके रहेवामाळ नत-শতি সতে তন হইয়া ৰাষ্ণাক্ষলিত বছনে কহিতে লাগিলেন। আहा छिता। कि मिथिनाम, फाकि आमात कि शुक्र मिन। **ट्यामात्रकानम्भावत अञाक गरेवा। शूनर्कात जूमि जामा**-র ইন্দ্রিরগণ ও আন্ধাকে পরিত্প করিবে, ভাষা আমি चेटश्रंड खेळामा कति माहै। विटमयटः यथम अक्षमानमा ব্যি এপর্যান্ত যাবতীয় স্থান অন্মেষণ করিয়া ও তক্রতা आविवटर्गर्व निक्छ क्यून्यवादका आर्थना कतिशा क्रुकार्या क्केट्ड भातिनाम मान् उसन आभातः श्रमतः अहे मिन्न्य বিভিন্ন নিতান্ত অভিমান ও রোশপরবল হইয়া



व अरीनदक अवसंदर्भ का किया अधिरत ; करावर अधिन विभाजा वर्ण, अस्मारकी, जासकारणी, शतिकातकर्ग ७ समस् नावाका सब विमान कविया ब्रानिश्तिमक्का अस्त हरे-शांकिकाम, त्करत शांत्म शांत्म (जामात अनुकारी नलकार), মধ্যে মধ্যে সমাধানিত করিয়া ভরিবরে প্রতিবন্ধকতা-চরণ করিতে লাগিল; স্তত্তরাং নেই আশাপিশাচীর দাসত পরিত্যাগ করিতে না পারিয়া এই ছুর্ভর দেহতার বহন করিতেছি, কিন্তু তুমি মেঞ্চপর্যান্ত স্থামাকে স্থৃতিপথ হই-তে নিকাসিত কর নাই, ইহাতেই আনার সমুদর ছংখ অন্ত-হিত হইল। আইন একবার ভোমাকে হৃদয়ে ধারণ করি-রা তাপিত প্রাণ শীতল করি। এই কথা বলিতে বলিতে व्याममाञारकारण ताबात वकश्यक शाविक स्टेग्ना (शल। छेसभी भाक्षमग्रदम कत्रकमदल अक्षत्र धात्र । शूर्काक दमक जल माठन कतिया सार्ट्याशस्त्रक करले कहिएल नाशितनन মহারাজ। আর কেন অকারণে শোকাগ্নির উত্তেজনা করে-न ? (माकारतश मग्रदश कक्सम । (करन रेमरवह প্রতিকূলতা अयुक्तके अहे पूर्विमा हरेग्नाहिम । व विषया आमारन অনুমাত্র অপরাধ শাই বিনরপতি এই কথা শুনিয়া বৈ-गाविलयन श्रांक कहिरलन, ब्लिट्स विल प्रिथि ७७ किन একাকিনী কোৰায় কিৰপে কালাভিপাভ করিলে? উ-र्सनी विनीच ভाবে कहिए नानित्नम महाताक। अवन পুর্বে ভগনান কার্তিকের শাখত কৌমারত্রতে विक रहेशा धरे यान जान कतिएक अवः धरे निम्म নিশারিত করিয়াছেন বে রে জীকোক এই ছানে 🖻

বেশ করিকে শ্রেক মাত্র তাহাকে লতারপে পরি
গত হইতে হইবে এবং গোরীচরণরাগ্যন্ত সক্ষমণি
বাতিরেকে অনা কোন উপারে প্রকৃতিহা ইইতে পারিকে
না; কিন্তু আমি ভরতশাপে বিবাজ্যানখনা, শ্রুতরাং
সে নিয়ম বিশারণ পূর্বক এই ছালে আসিয়াছিলাম;
আমিবামাত্র লতারপ পরিগ্রহ করিতে হইয়াছিল।
এই কথা রাজার বিলক্ষণ হুলয়ক্ষম হওয়াতে কহিলেন,
প্রোমি! ইহা যথাইই বটে; নতুবা ভূমি এক শ্যার
নিদ্রাবেশে কিঞ্জিং অন্তর্গ্রত হইতে ক্রাহাকে প্রবাস্থত
বোধ করিতে, তাহার সহিত এত দীর্ঘ বিরোগ সহ্য করিতে পারিবে কেন? আর সক্ষমণিই যে শাপমোচনের
এক মাত্র উপায়, ইহাও স্পন্ত প্রতীত হইতেছে। দেখ
দেখি, বোধ করি এই সে সক্ষমণি।

উর্কাণ উৎস্কনয়নে অবলোকন করিয়া কহিলেন,
মহারাজ। এই মণি আপনার হস্তে ছিল বলিয়াই সেই
লতাকে আলিক্ষন করিবায়াত্র আমি স্বরূপ প্রাপ্ত হইয়াছি। হায়। আমি কি হতভাগিনী। যিনি শত শত অসহা
ক্রেশ স্থীকার করিয়া বারংবার আমাকে ছন্তর ছংর্থ
পারাবার হইতে উদ্ভূত করিতেছেন, আমি তাঁহার অণ্
মাত্র উপকারিণী না হইয়া কেবল পদে পদে ছংবের
হেডু হইলাম। নরপতি সম্পৃহ বচনে কহিলেন প্রেয়ি!
আর সে সকল ছংগের কথায় প্রয়োজন নাই। আইস,
এ মণি ভোমার ললাটে বিনাম্ভ করি। এই বলিয়া তথায়
বিনামে করিয়া কহিলেন, প্রিয়ে। এই মণিয়াপে জ্যোমার

### **उर्थ अह**।

#### विक्रमाईमी।

#### পঞ্চম আন্ধা'

नत्रপতि উर्सभी ममिलवाशाहत ताजधानीट उन्नेमीक रहेश পরम ছুত্থ <u>কাল যাপন করিছে লাগিলেন। क्रम</u>मः উর্বেশী তৎসহযোগে গর্ডবতী হইলেন, স্থর্পতির শাপা-ন্তকর বাক্য তাঁহার স্থতিপথে আঁক্ট হইল। তথ্ন সাতিশয় ছঃখিত হইয়া মনে মনে ভাবিতে লাগিলেন, हात्। সকলई গভোদরে পুরুষ্ধ নিরীক্ষণ ও স্বামীকে প্রদর্শন করিবার প্রত্যাশার আনন্দিত হইয়া থাকে; ুক্তি আমি কি হতভাগিনী। স্বামী পুত্রমুখ বিলোকন ক ज़िल, आमि डोहात वमनञ्चवाकत मर्गटनक विकेष रहेर, এই ভরে আমার স্কুদর কম্পিত হইতে লাগিল। ধাহা হউক নোপনে গর্ভাইছা অভিবাহন করিয়া প্রসবকাল উপস্থিত इहेटन कीन बर्टन झूनाखरत श्रुप्तक कतिया काशत अ हरछ সন্তান সমর্পণ করিব এই নিশ্চয় করিয়া নিয়ত তাহারই উপায় ভিত্তা করিতে লাগিলেন। অপ্সরজাতির গর্ভনক্ষণ মধুবাগণের নামি অনায়াসলক্যা নহে; স্কুতরাং কিঞ্ছিৎ ्रध्येषु ७ क्योगन अयुनयन कतिया भक्त्यक अकाष्ट्रभारत গর্ভাবস্থা অতিক্রম করিলেন । এবং এক বিশ্বন অদেশে धक क्कूमात कुमात क्षमव कतिया मञ्जत भगतन तमहे महारा।-

26

काठ महानत्क हार्यन प्रमित्र आधारम मुझारेजी नाबी अक

ভাপনীর হজে সমর্পণ করিয়া প্রত্যাপত হইলেন এবং পূর্বাবৎ অসমুচিত চিত্তে কালাভিপাত করিতেলাগিলেন।

ेक्षितक ताकमहिबी পूजार्काटव नर्खनारे अस्थी, नक्न दियदम् निक्र शाह ७ नक्क । हिसाम निमध इरेम काल याभन कतिर्दे नागिरनन। এवः निवम नत्रभि जाँ-बाटक नर्याना विखाकून प्रतिशा जिल्लाना দেবিট ভোমাকে নিয়ত চিতাকুল ও দিন দিন ভোমার মুখকমল মান ও বিবর্ণ দেখিতেছি কেন? রাজী সবাস্থ महारा कहिएल लागिरलम, महादाक। आमामिरणह धन সম্পত্তি ও পরিজন প্রভৃতি আবশাক সামগ্রীর মধ্যে किबूबरे अजाद नारे । किछ এक दखत अजाद नमुमास সংসার শুন্যময় দেখিতেছি। গৃহীগণের গৃহস্থাশ্রমে পুত্র जिस त्रमतीस वास चात्र किष्ट्रहें नाई। এই चमान मः मादत পুত্রই সার পদার্থ। মনুষ্যগণ **পুত্রমুখ অবলোকন না** করি-**ल পুরাম**্কিরর ও পৈতৃক খান ছইতে পরিতান পায় না এবং অপুত্রের পুত্রশূন্য মনোহর হর্ম্ম্য প্রচুরধনপূর্ণ হই-रैक्छ जातरवात माशि, भूरमात माशि ए मामारमत माशि প্রতীয়মান হয়। আর ষে সম্পর্তী সন্তানের মুখচন্দ্র দ-্র্শনে অধিকারী হইল না এবং স্ক্রপত্যের অর্ক্রোচ্চারিত अभुष्ठितिक बाका पाहारमञ्ज ध्वन्यरभावत स्टेल मी, याहाता मझानीन स्थलार्ग जनसमतीत लाग कतिराज शार्रण ना, তাহালের জীবন ধার্ক করা বিভ্রনা নাত্র। বিশেষতঃ प्रकार वार्कतका शुंबरे अक गांव **घ**रनम्म ; सङ्बाध র্দ্ধাবস্থার শুরুক্দিনকে বেরণ নানাপ্রকার ক্লেশ ভোগ করিতে হয় জাঁহার বর্ণনা করিয়া শেষ করা যায় না, এবং নিঃসন্তানের ধন সম্পত্তি পরিণামে জ্ঞাতি কুটু-ষের বা কোন প্রবল ব্যক্তির অথবা ভূপতির ভোগ্য হইয়া থাকে। দেখুন, আজম প্রমার্জিত সম্পত্তি যে অন্যের হস্তগত হর, ইহা সামান্য স্কৃতিগাের বিষয় নহে; এবং সকল ব্যক্তিই নিঃসন্তানদিগকে পাপী ও অধার্মিক বলিয়া ঘুণা করিয়া থাকে। অধিক কি বলিব তাহাদের নামোলারণ করিতেও স্তর্দুট জনিবার আশক্ষা করিয়া থাকে। মহারাক্ষা পাছে পরিণামে আমাদিগকেও এই সকল ফল ভোগ করিতে হয়, এই ভয়ে আমি সকাদা শ-কিত ও উৎক্তিত ভাবে অবস্থান করি।

রাজা কহিলেন, দেবি। দৈবায়ত্ত বিষয়ে শোক বা পরিভাপ করিলে কি হইবে। যাহাতে নৈব অনুকূল হয়েন
এবং দৈবের অনুকূলতা সাধনার্থ শাস্ত্রকারের। যে সকল
ধর্মাচরণের উপদেশ প্রদান করিয়াছেন, ভাহারই শান্তপ্রান
করা বিধেয়। দৈব অনুকূল হইলে অবশাই আমাদের
মনোরথ পূর্ণ হইবে। এই নিশ্চয় করিয়া পর দিন
অবধি দীন দরিদ্র অনাথদিগকে ও স্নাতক ব্রাহ্মণদিগকে
ধনদান করিতে লাগিলেন, নিয়ত দেবসেবা, অভিথি
সেবা ও ব্রাহ্মণ শুশ্বার যত্রান হইলেন; সন্ত্রীক
হইয়া প্রতিদিন গঙ্গান্ধানে ক্তসঙ্গপ হইয়া গঙ্গাতীরৈ
এক পটমগুপ নির্মিত করাইলেন এবং প্রত্যহ সেই
হানে স্থান পূজা সমাধান করিতে লাগিলেন।

একদা ঘটনাক্রমে ভূত্যেরা রাজার মেন্ট্রিরত্ন সঙ্গমনি তালর্স্তাচ্ছাদিত করিয়া পটমগুপের বহির্ভাগে রাখিয়াছিল। রাজাও মহিধী উভয়ে গঞ্চাজলে অব-পাহন করিয়া স্নানাদি করিতেছেন, এমন সময়ে এক গুণ্ मारमथ छ दाट्य मिर्रे मिन खेरून कतिया शतनमाटर्ग উড্ডीन इहेन; তाहा मिथिशा नकटनई हांश। महाताटकन्न **मिर्द्राष्ट्र**स्य এक शृधु कर्जुक व्यश्चित इहेन! ७३ विनिहा কোলাহল করিয়া উঠিল। নরপতি অবণমাত্র অতিমাত্র ব্যঞ্জাসহকারে তীরে উঠিকেন এবং কঞ্কীকে জিজ্ঞানঃ করিলেন, রেচক! ছুফ বিহুগতস্কর তে৷মাদিগের সম্মুখ হইতে মণি লইয়া গেল; তাহার কি প্রাণনাশের আ-শক্ষা নাই ? বাহা হউক সে কোনু দিকে পলায়ন করিল বলিতে পার : কণ্টুকী ভয়স্থলিত বচনে কহিল, মহারাজ 🚦 দেখন ঐ সেই বিহপাধম চঞ্পুটে মণির স্কুত্র ধারণ করিয়া আকাশসওলে স্থমণ করিতেছে। নরপতি উদ্ধে দৃষ্টিপাত করিয়া, পতশমুথবিত মনির লোহিত প্রভা শ্বরাতচক্রের ন্যায় বলয়াকার ধারণ করিয়াছে দেখিয়া ेशार्श्व वयत्रारक मरम्राधन किटा किहिलन, मर्थ ! ७३ নাচজাতি পক্ষী কি শর্মিঃকেল্ডের যোগ্য পাত্র? মান-वक कहिरलम, नयुमा। इँहा यक्ष । अयुल ज तद्भ इत्र क्रियाट्य, जाशटज कान करमरे मकुछरवाट्य प्रना क्रा উচিত নহে; বিশেষতঃ এ জীবিত থাকিতে মণিলাভও নিতান্ত ত্বজর হইবে; অতএব আমার মতে যত শীঘ্র मखद्य देशांक विनाम कवारे कर्ववाम नव्यात जाहात



# विक्रहमार्श्नी

ममूनस वाकार्थ कार्याण हरेशा कहिलान, मध्य । जूनि सथार्थे कार्युण्य करियाण । अर्थे कथा कहिला शिर्याण करियाण । अर्थे कथा करिया शिर्याण करियाण । अर्थे कथा करियाण । अर्थे अर्थे करिया करियाण या करियाण प्रतिकार करियाण स्थित करियाण स्थित करियाण स्थित करियाण स्था । विश्वेष प्रतिकार करियाण स्था । स्था अर्थे ।

এইরপ কথোপকথন হইতেছে এমন সময়ে ধয়ু হন্তা এক থবনী উপস্থিত হইয়া কছিল মহারাজ! এই সশর শরামন গ্রহণ করুন। রাজা কহিলেন সে মাংসাপিশাচ বাণপথের অতীত হইয়াছে। এফণে উহা আর আবশাক নাই; যথান্ধানে স্থাপন কর, বিলিয়া যবনীকে বিদার করিলের। অনম্বর আর শরক্ষেপের টেন্টা করা রথা ইহা নিশ্চর করিয়া কঞ্চুকীকে কাইলেন, আর্গ্য তালবা! নগরম্ব ব্যাধপল্লিতে এই কথা প্রচারিত করিয়া লাও, যেন তাহারা সকলেই সায়ংকালে পাক্ষিনিবান্ত্রক এই বিহুগাধমের অন্তর্মণ করে এবং যে ইহাকে ধরিয়া লিতে পারিবে সে সবিশেষ পারিতাবিক প্রাপ্ত হইবে। কঞ্চুকী যথাজা বলিয়া প্রম্বান করিল। অনম্বর মানকক কহিলেন বয়সা! বিপ্রাম করা। যদিও সে পক্ষী

## ヤツ海 明年 |

শহাতি তোমার বাণপথ অতিক্রম করিল, কিন্তু ভোমার শালন ইইতে কথনই পরিবাণ, পাইবে না। নরপৃতি উপবেশন করিয়া কছিলেন, সথে। সেই মণি কৈবল মহামূল্য নছে, বিরহিত রক্ত্রক্তু সমাগমের এক মাত্র সাধন; এই নিমিত্ত আমি তাহার নিমিত্ত এত কাতর হইয়াছি। পরক্ষার এইরূপ কথোপকথন করিতেছেন এই অবসরে রক্তৃকী আদিয়া নিবেদন করিল মহারাজ। সেই বিহ্নাক্ষম এক বান ঘারা আবিদ্ধ হইয়াছে। এই আকম্মিক ব্যাপার অবণ করিয়া সকলেই বিস্মিত হইলেন। কথুকী মণি প্রকালন ফরিয়া নিবেদন করিল মহারাজ। এই আকম্মিক ব্যাপার অবণ করিয়া সকলেই বিস্মিত হইলেন। কথুকী মণি প্রকালন ফরিয়া নিবেদন করিল মহারাজ। এই প্রকাশিত মণি প্রকালত মণি কাহার হত্তে প্রদান করিব। রাজ। কহিলাক করিল মহারাজ। এই প্রকাশিত মণি কাহার হত্তে প্রদান করিব। রাজ। কহিলাক করি বাগারে যুলুর্ফ্রিক রাখিতে দাও। পরে এফ কি রাত সেই মণি কোষাগারে লইয়া গেল।

অনন্তর রাজা বিশায়োৎকুল বদনে কণুকীকে জিজাসা করিলেন, ইয়া কাহার বাণ, কিছু স্থির হই-য়াছে? সে কহিল মহারাজ। কিছুই ধির হয় নাই; কিছু এই শর তাকরাজিত দেখিতেছি, দর্শন শাক্তির অম্পতা প্রযুক্ত সমাক্র পাঠি করিতে পারিতেছি না। নরপতি এই কথা প্রবণ করিয়া সম্পৃহ বচনে কহিলেন, দেখি দেখি কাহাল নালাক্ষর। কল্পুকী বাণ রাজার সম্পৃথিধারণ করিছে তিনি পাঠ করিতে আরম্ভ ক্রিলেন। গাঠ সমাপ্তি হইলে, মানবক জিজাসা করিলেন, বয়সা! কাহার নামাক্ষর অবধারিত ক্ষ্ইল? নরপতি, কহিলেন

मर्थ। वर्गावली वाता अछीछ स्टेट्ट्स, रेहा छैकांगीत গর্ভজাত সন্তানের শর। শএই কথা শুনিয়া মানবক मानम्बरुटन कहिलन दशमाः উर्खगीनटर्ड जाननात्र এक मञ्जान উৎপন रुदेशाटक अवश्रत्यहे शुक्र रा वशः शाश्च ७ धनु तर्वातन कृष्टिन हरेशास्त्र, रेहा नामाना সৌভাগ্যের বিষয় নহে। ুরাজা সোৎকণ্ঠ চিত্তে কহিতে লানিলেন বয়সা! আমি এক মুহুর্তের নিমিতও উর্ধ-শীকে দৃটিপথের বহিত্তি করিনাই; কিন্তু এপর্যান্ত কথন তাঁহাকে গভলকণাক্রান্ত বোধ হয় নাই, অথচ ভাঁহার সন্তান জনিয়াছে, ইহা কিরুপে সম্ভবে। কিন্তু কিছু দিন তাহার চুচুকারো নীলিমা, মুথকমলে পাওতা ও महीदत क्रमण निकित स्रेमाहिन, देशरे कि शर्जनकीद्वद मन्भूनं लक्षना मानवक कहित्लन वसमा। छर्वनी जनस्यानिः शानवी नटहन; सुख्दार मासुधीन उलका ब्हेर उ दिशासक বিলক্ষণ বৈলকণা হওয়া নিউ। দু অসম্ভাবিত নছে। রাজা कहितलन गर्थ। पंजावसा शास्त्रन कतिवात अशास्त्रन कि? भानवक कहिल्लन वस्त्रा! (मवत्र्या अकीव छन्, अनासारम ममुनव मनीर्थ जारशंख इटवा महस्र नटह।

এই রপ কথোপকধন হইতেছে, এমন সময়ে কপুকী
মহারাজের জয় হউক বলিয়া উপস্থিত হইল এবং কৃতাজলিপুটে নিবেদন করিল, মহারাজি। ভগবান চাবন মুনির
আশ্রম হইতে সতাবৃতী নামী। এক তাপুদী একটা স্কুমার
বালক সমভিব্যাহারে মহারাজের দর্শনার্থিনী হইয়া উপহিত হইয়াছেন, যে রূপ অনুমতি হয়। নরপতি সাদ্র

वहरत कहित्वन छ। हाफिशत्क मीख वहेंसा चाहेन। ক্ষুকী ষ্থাজ্ঞা বলিয়া প্রস্থান করিল। এবং কির্ৎক্ষণ পরে তাঁহাদিগকে লইয়া প্রবেশ করিল। মানবক তাপদী সমভিব্যাহারী বালকের প্রতি দৃটিপাত করিরা ভূপতিকে সম্বোধন করিয়া কহিলেন, বয়স্য! ইহার ভাব **जङ्गी (मर्थिय़) म्प्रेगे अजीजि हहेएज्ड याहात मत** श्रेहादत कुछ नकूनि विनके स्रेशिहिल, व त्मरे कि ब्रि कुमान, অনেকাংনো আপনার অনুকরণ করিতেছে, বোধ হয় **এইটাই আপনার উর্বেশীগর্ভসম্ভুত সন্তান। নরপতি** কহিলেন সংখ। এই অপরিটিত বালককে দেখিয়া আদা-রও অতিশর সন্তান ক্লেহের আবিভাব হইতেছে। দেখ, ইহাকে দেখিতে দেখিতে আমার নেত্রযুগল আনন্দাঞ-পূর্ব ও হৃদয়ে বাৎদল্য রদের দঞ্চার হইতেছে এবং এমত ইচ্ছা ২ইতেছে যে গাঢ়ালিঙ্গন দারা ইহাকে হ্লয়স্থ করি, এই কথা কহিতে কহিতে কিয়দূর প্রভাঞ্চামন পূ্র্যক তাপ-সীর চরণ বন্দন করিলেন। 'তিনি যথাবিধি আশীর্কাদ প্র-(सांगै कतिता मत्न मत्न कहिट नाजित्नन, कि आफर्ना ! ইহাদিগের আক্রতি সাদৃশ্য দারা অপরিচিত বাক্তিও এই বালককে ইহাঁর জরদ প্রুত্র বলিয়া অনায়াদে বুঝিতে शादा। ुरेश कविशा मिरे वालकत्क किरिलन, वर्म! ইনি তোমার পিতা, ইহাঁকে<sup>®</sup>প্রাণাম কর। বালক সবা**স্গ** নয়নে পিতার চরণে প্রণত হইল। নরপতি বাছযুগলে তাহাকে আলিঙ্গন করিয়া<sub>ই</sub> স্পর্শস্থ অনুভব করিয়া क्राइड जेश्रद्धविषक क्रिट्सिन क्रेन्ड जाश्रमीरक मरमाधन

করিয়া কঁহিলৈন, ভগবতি ৷ আপনার অসামান্য অন্ত্রাহ बाता जामात क्रमत जानमनद्भारमत श्रद्यां जन ज्यदेश क्रे-ৰার নিমিত্ত নিতান্ত ঔৎস্থক্য প্রকাশ করিতেছে, সবিশেষ वर्गना कतिरल চরিতার্থ হয়। তাপদী কহিলেন, মহারা-क । अरे वामक উर्वामीत गर्छमञ्जूठ, তিনি কোন আনিৰ্বা-চনীয় কারণবশতঃ জাত্যার আমার হত্তে ইয়ার লালন পালনের ভারার্শ্য করিয়া কহিয়াছিলেন, এই বালক ক্ষ-তিয় কুমার, অতএব যেন ক্ষতিয় কুলোচিত ছাতকর্মাদি সমাপিত হয়। এই ব**লিয়া** আমার নিকট রাখিয়া व्यानिशाहित्नन। थानि (परे व्यननिनव वानकत्क नरेशा ভগবান চাবন মুনিকে সবিশেষ অবগত করিলাম, তিনি লাভকর্মাদি সমুদার সংস্থার সম্পন্ন করিয়। যথাবিধি माद्याश्रामम ध्वमान कतिशाह्म, विरमवंड धमुद्रम्य के-हात मितरम्य देनभूग किमिन्नाहा भाषा अना अनाह भाषा কুমারগণের সহিত সমিৎকুশ পুলাদি আহরশার্থ বহিগত ছইয়া এক ভলেবেদের বিরুদ্ধাচরণ করিয়াছিলেন। রাজা কহিলেন কি ৰূপ আত্ৰমবিৰুদ্ধ আচরণ করিয়াছে? তাপরী কহিলেন, এক পক্ষী এক খণ্ড মাংস গ্রহণ করি-য়া আত্রমরকে বিশ্রাম করিতেছিল, দৃষ্টিমাত্র ভাষার প্রতি শর নিক্ষেপ করিয়া তাহার প্রাণ সংহার করিয়া-ছিল। ভগবান চাবন দেই সংবাদ অবণ করিয়া আমার প্রতি এই আদেশ করিলেন, "এরপ উদ্ধত্য আভামের উ-পযুক্ত নতে; অতএৰ ভূমি बतात है हाटक छैसंभीत हत्छ সমর্পণ করিয়া আইম'' এই নিসিত্ত একখার উর্বাদীর

महिल माकाथ कतिए आनिष्ठाहि। नत्न नि कहिलन, जनवित श्री का का नि । अहे कथा कहिला का नि । अहे कथा कि । कि का नि । अहे कथा कि । कि का नि । अहे कथा कि । अहे नि का नि । अहे नि

এইবংগে সকলে উপবিত্ত আছেন, এমন সময়ে উর্কাণী তথায় উপস্থিত হইয়া দেখিলেন, নরপতি একটা বালকের কেশ সংঘত করিতেছেন, নেখিয়া মনে মনে ভাবিতে লাগিলেন, 'হায়। এখন স্মধ্রমূর্ত্তি বালক মহারাজ কোথায় পাইলেন? ক্রমে ভাপদীর প্রতি দৃটিপাত ইইয়া মাত্র বৃক্তিত পারিলেন, সভাবতী আমাকে সন্থান প্রদান করিতে আসিয়াছেন। ইটি আমারই জীবনসক্ষর দীর্ঘামুঃ। হাঁয়। আনি কি হতভাগিনী। প্রস্বাবধি ইহার বদন স্থাকর দেখিতে ও অবন্যকর্ত্তরা পালন প্রথম্ন করিতে একবারও কেন্টা করিলাম না এবং মন্তান পরিপালনে যে দিন দিন নব নব স্থানুত্ব ইয়, তাহা আমার ভাগো ঘটিল না। আহা। যথন শিশুগণ স্থান্তর শ্রামান প্রথম্ব শ্রামান প্রশাস্থ্য স্থানীয় স্থানিত হন্ত পদাদি সঞ্চারণ ও নায়ন

यूनन छेगीलन कतिया जेयर शामु कृतिए आत्य करत, যথন জান্ধ ও বাহুলভিকার উপীর, নির্ভর করিয়া অন্পে অম্পে এক স্থান হইতে স্থানান্তর গমন করিতে ও তুর্বল চর**ংখ**র সাহাত্যে কোন বস্ত **প্র**লয়ন করিয়া<sup>র</sup> দঞায়মান रहेट्ट भिका करत बदः यथन शिला भाजा वा मान मानीत অঙ্গুলি ধারণ করিয়ু৷ বিচরণ করিতে অভ্যাস করে, ও পদে পদে अमिञ्चाि रहा, এবং यथन অর্জোচ্চারিত বচনে কিছু ক্রিছু কহিতে আরম্ভ করে ও ক্রনে ক্রনে অব্যাহত বাক্যে স্বুস্পায় শক্ষ উচ্চারণ করিতে শিখে, এবং শিক্ষকের সমু-পদেশ সকল গ্রহণ ও ধারণ করিয়া স্থমধুর ভাষায় পিতা भाजात निक्रे পরিচয় প্রদান করে, সেই সেই অবস্থায় পিতা মাতার যে অভূতপুর্বা ও অনির্বাচনীয় আনন্দোদয় इहेश्रा शांक, आमि वक्तात नाश जल्झ्याचामरन विभिन्न इटेशंছि। यारा रूडेक, टेराक य खवार्ड ও वर्षिड **मिथि** शहिनाम, देहा८**७३** जामात नमुणाय क्रः८४३ जव-मान इंदेल। এই कथ भरन भरन कहिए कहिए झाशभन क्रिक्टन । नद्रপতि উर्क्तां कि नमान्न प्रित्रा मीपायुक कहिरलम, वर्षा हिम द्यामात अमनी आमिरङहम। তাপদী কহিলেন, कुमात! हैनि তোমার গর্ভধারিণী, ইহাঁকে প্রণাম কর। কুমার বিনীতভাবে মাতাকে প্রণাম क्रिल। উक्सी मदाका महारन मछारनत निरत्राञ्चा। ७ मूर्थ हुरीन कतिया जालभीत हत्रात अने स्टेरन, जिन सामीत অবিচলিত প্রণয়ভাজন হও, বলিয়া অশীর্কাদ প্রয়োগ कतिरलन। अनगत डेक्स्नी महाताज! विक्रती रुजेन विलग्न

বিনীভভাবে নরপতিকে সংখ্যের করিলে মহীপাল সমা-দরে উর্বাদীর করগ্রহণ করিয়া আসেনে সনিবেশিত করি— লেন।

नकत्व सुर्था अविषे रहेत्व, তाशशी कहिए नाजि-জেন, বংসে উর্ব্বলি! তোমার এই দীর্ঘারু সমুদার শাস্ত্র ও সমস্ত শস্ত্রবিদ্যার স্থশিকিত হইয়াছে, আর ইহাঁকে তপোৰনৰাপী করা বিধেয় নহে; এই নিমিত্ত ভগৰান চাৰ-নের আদেশামুসারে ইহাঁকে মহারাজের হতে সমর্পণ क्तिलाम, अकरा आखरम अरमक कार्रधाशात्राम आहि, অতএব সুরায় তপোবনে যাইতে অভিনান করি। উর্বাণী বিনীতভাবে কহিলেন, ভগবতি ় আপনি আমার প্রতি ষে অসামান্য অনুগ্রহ প্রকাশ করিয়াছেন তাহাতে আমি চিরক্রীত ছইয়াছি, বিশেষতঃ বুছ দিন হইল আগনার वित्रह्मार्थ म्वावित मिलाम, किंदू मिन नमानम सूर्वायुज्व वाजित्तरक अभूनाम छुन्थ निर्याणिख इस ना, किस उट्या-বন কার্য্যকলাপের ব্যাঘাত করিতেই বা কেমন করিয়। माहम कति, याहा इंडेक शूनव्यातं त्यन ज्ञालनात पर्णन পাই, এই বলিয়া সবাচ্চানয়নে প্রণামান্ত্রিলেন। নরপতি करिरलन आर्रा। छशवान ग्रावनक्ष्ण भरहाशकारत आमि তাঁহার ক্রীতদাস হইয়াছি এবং ভক্তিভানে প্রণাম করি-তেছি ই হা থেন তিনি জানিতে পারেন। তাপদী তথান্ত विना श्री वहेटल, कुमात नवीलानश्रम कहिल ज्ञान বতি! আপনি কি যথার্থই গমন করিতেছেন? তকে व्यावादक्थ महेश हनून। नतशिष्ठ अत्वावनात्का करितनन বৎসা তোমার প্রথমাখ্যমের কর্ত্তব্যকলাপ সমাপিত হই-য়াছে, ইহা দিতীয়াশ্রম পরিএহের সময়, এখন আর তপোৰনবাদে ভোমার অধিকার নাই, অতঃপর মধ্যে মধ্যে অব্দরক্রমে এক এক বার দেখিয়া আসিও। ভাপ্নী কহিলেন বংদ। এক্ষণে পিভার বশবভী হইয়া চলিতে मयञ्ज रु। ७ रे कथा छनिम्नाः कूमात कहिलमः, छगवि ! यपि जटलावन भगरन निजाल हे निवास हरेरज हहेता, जटव কলাপ কণ্ডুয়ন করিয়া দিবার সমগ্র যে আমার অক্ষে निक्किन इरेड, तम्हे मत्नातम ममुब्रेष्ठी आमाम शाधाहेबा निट्यम । जाभनी कहिएमन वयम । मीखरे भागिरेश निय, এই कथा किह्या जाशभी अमरनामुधी हरेरक्रन। अकरनर পাত্রোপান পূর্বেক প্রণাম করিলে তিনি যথাবিধানে আশীর্বাদ করির। প্রস্থান করিলেন। কুমারও বিশ্রামার্থ त्राविनिर्फि छाटन शमन कतिरलन।

অনন্তর নরপতি প্রফুলবদনে ও সাদর সন্তাবণে উর্বাশীকে কহিলেন স্থানর! আজি আমি স্থান জলত এই
স্থানুমার নবকুমার পাইয়া পুত্রিগণের অগ্রগণ্য হইলাম।
উর্বাণী এই কথা শুনিয়া ও মহেক্দ্রত শাপাবসান হস্তান্ত
শ্রণ করিয়া রোদন করিছে লাগিলেন। তাঁহার তথকালোচিত আনন্দোদর না হইয়া অফুচিত অ্লুপাত হইতে লাগিল দেবিয়া, য়াজা সশস্কমনে বিজ্ঞানা করিলেন,
স্থানীয় একপ স্থানের মন্ধ্রে তোমার এভাদুলা অনিবার্থা
স্থানের উদ্রেক ইইল কেন শীঘ্র বল, আমার হাদর কপিত

इंहेटलर्ट्ड। केंबिनी श्रीलिजवन्ति कहिरलेन प्रहाताल ! अवेर्टम श्रुविभूषे नितीकन कतिया वर्श्यातानिक वाक्नानिक इटेग्नीहिलाम, किन्छ महना (मर्कत्राटकत विधाक वांकावान श्राप्त विक रुखराटि नमुनाय सूर्य धककारन जसर्हिङ क्हेंस । ब्रांको कश्टिलंग मद्भव मितिएमच वर्गमा कता छक्तमी দীর্ঘনিশ্বাস পরিত্যাগ পুর্বাক কহিতে লাগিলেন মহারাজ! आश्रनात अनुश्रहरत मानवश्य हहेट विभुक्त इहेश यथन मिवटनाटक छेशिष्ट इंडेनीम, मिहे नमस मिवन छात्र এক মূতন নাটকের অভিনয় হয়, তথায় আমি অভিনয় করিতে করিতে জাপনার গুণপক্ষাতিনী হইয়া কিরুপে রসভঙ্গ করিয়াছিলাম ভাছা মনে হয় না, মাট্যবিধাতঃ মুনিবর আমাকে তৎকালে তাদৃশ অনবহিত দেখিয়া রোবভরে এই বলিয়া শাপ দেন ও যে ছর্বিনীতে। ষে-एक् व्यवस्था क्रिया आयात्र महम माँग विदय क्रिक्ति, অতএব অদ্যাবধি দিবাজ্ঞানে ও দিব্য ভূমিতে হোর কিছু মাত্র অধিকার থাকিবে মা।" অন্তর আমি যথোচিত স্থাত বিনীতি প্রকাশ করাতে দেবাধিপতি করুণার্য বচনে कहिटनमें ''वाटन। जूनि योहाट आधुतक हहेग्राष्ट्र, जिनि আঁমার মহোপকারী বন্ধু ; অতএব খাবং তিনি তোমার গভিছাত পুত্রের মুখ অবলোকন না করিবেন তাবৎ ভোমাকে ভাঁলার শুক্রবায় ব্যাপুত থাকিতে হইবে, পরে স্থীয় প্ৰভাৰশক্তিসম্পন্না ইইয়া এখানে আসিবে " এই विभिन्न आमि महातारकत विरय्नानभकाय स्मिक हरेरलंह नखानरक ठावनाध्येरन मछाविष्टीत इटल विनाख कतिया-

हिलाम, विकर्त भागनि तर्रे महात्नत्र मूथ्रेक्स नितीकन क्तिरंगन, व्यामिष्ठ महातारकद्व रमनक्ष्मकद्व नर्गरन विक्षेष्ठ रहेनाम, धरे कुःमर कुःत्थित व्यवद्यात त्रापन खित्र व्यात कि वित्नामन रहेट्ड शादा। नद्रशंड धरे कथा खनियामाज মুগ্ধ ও বিচেত্ন হইলেন। সকলেই সদজ্ঞমে নানা প্রকার শুক্রবা দারা তাঁহার মোহ শান্তি করিলে তিনি সচেতন रहेशा नीर्घ नियान পরিত্যাগ করিয়া কহিলেন, হায়। रेमरवत्र कि सूथअञ्चलक्राः। रामन स्थाम द्रक नववाति-**নেকে মুশীতল ও মুস্থ হইলে, আকম্মিক অ**শনিপাত তাহার জীবন নাশ করে, সেই রূপ আমার সন্তানলাভস্ট হৃদয়ে প্রেম্ননীর বিয়োগ শোষ্টানল প্রজালিত হুইল। হার। जामि कि इंडजागा, बंड मिन महानविद्राष्ट्र कंड कर्ये ভোগ করিলাম, যদিও ঘটনাক্রমে মনোমত পুত্র লাভ হইল, কোথায় ভাহাকে লইয়। এত দিন নব নৰ স্থাসা-मन कतिव, जाहा ना इसेशा हित्र दिन कृश्योर्गटवरे जानिएक इर्ग ।

मानवक ब्रांकांत जंडामृन काउद्याक्ति क्षवन कतिया किरित्यम, दश्च ! दाध इस एपदाक च्यार कि विषयत कान विराग्य दावक्ष कित्रदम मान्मह नार्के, याहा इकेक निठास भारतकूल इछता छेडिछ नटर । छेर्चामी मीनवादका किरिए नाभित्यम, हा थिक्। चामि कि मन्नछाभिनी, दाध इस, क मगर चामि स्वत्याक भमन किरिया महातास चामातक च्यार सार्थभन दिन्न किन्नदम। करे क्था ताकात कर्नकूहत क्षितिक इरेगामान किनि ममद्भास करि

लार्न क्रमाति। खकाइद्य धक्त क्लीना कहिए नैं। जूर्नि এৰপ ভাবিও না, যে পুৰুরবা তোমাকে প্রভারিকা বোধ করিয়া তোমার বিরহ ছঃথ বিশ্বত হইরা সাম্রাজ্য मदबादश षासूत्रक इकेटव, जात धरे मश्मादत दक्र है हे छा-मुद्धा स्थारहार्ग मधर्य नटर वर श्वादीनका पाठीत ৰুলবতী। অতথ্য তুমি অসমুচিতচিত্তে স্বামিশাসন প্রতি-পালন কর, আমি অদাই তোমার পুরের হত্তে সাদ্রাজ্যের ভারাপণ করিয়া ও বিষয় হথে জুলাঞ্জলি দিয়া তপোবনে গমন করিব এবং তপস্থিবেশ পরিগ্রাহ করিয়া ঈশ্বরো-পাসনায় মনোনিবেশ করিব। এই বলিয়া পুত্রকে আহ্লান করিয়া কহিলেন বংস ৷ আমি তোমার হজে রাজ্যভার অর্পিত করিয়া সংসারাশ্রম হইতে বহির্গত হইতে ফুতনিশ্চয় হইয়াছি, **অতএৰ তুমি সা**ৰধান ও সত্তৰ্ক **হই**য়া যথাবিধানে গ্রন্থেমণ্ডল পরিপালন করত সন্তাজ্যসম্ভাগ কর। ঝালকুমার বিদীতব্চনে কহিলেন ভাত। বলি छ-বাছা ভার<sup>্ত্</sup>বহ্নে **ছ্র্বলকে নিযুক্ত করা কি** ন্যারানুগত **हरेट शास्त्र ? नत्रशिक कहिएनैन वर्ष्त्र ! रखामारक ख** विषयात जात अर्ग कतिए रहेटलए, हेराटल वनावरनत কিছুমাত্র কারণভা নাই। দেখ, গৰুত্বীপের একটী শাবক রুহৎ রুহৎ অনেক হস্তীযূপকে বলীভূত করিতে পারে, এবং ভুজন্সশিশুর বিষ অতি শীত্র শরীরপাত করিয়া থাকে; ইহাতে বোধ হয়, জাতীয় স্বাভাবিক শক্তি দারা স্বজাতীয় কার্য্য সাধন করিতে পারা যায়, স্বতএব ভুমি व्यापनाटक वालक काविया महिक रहे थ ना । अहे कथा

কৰিয়া কঁপাকীকে আদেশ করিলেন, আর্থা ভালধা। অমাতা পর্বতকে কুমারের রাজ্যাভিষেক সামগ্রী আহরণ করিতে ঘল। কন্ধুকী বধান্তা বলিয়া ছুখিতে ভাবে গমন করিল।

অনহর নরপতি হঠাৎ গণনমগুলে দৃটিপাত করিয়া
মনকককে কহিলেন, সংখ! অকআং আকাশন ওলে
বিজ্ঞাংপাত সদৃশ আলোক হইল দেখ! কিয়ৎক্ষণ
প্রনিধান পূর্বাক নিরীক্ষণ করিয়া কহিলেন সংখ! ভগবান
নারদ আগমন করিতেছেন, ভাঁহারই শরীরপ্রভায়
দিয়ওল আলোকময় হইয়াছে, ইহা হির করিয়া পরিজনদিগকে শীঘ্র অর্থ প্রস্তুত করিয়া আনয়ন করিতে আদেশ
করিলেন। উর্বাশী বহুতে অর্থপাত্র আনয়ন করিতে আদেশ
উচ্চারণ পূর্বাক উপস্থিত হইলে সকলেই গাত্রোপান
পূর্বাক প্রণাম করিলেন। মহর্ষি যথাবিধি আশৌর্বাদ
প্রনাম করিলেন। মহর্ষি যথাবিধি আশৌর্বাদ
প্রায় আসনার্চ হইলেন। নর্গতি ভক্তিভাবে

অনন্তর নরপতি গুরুজনসমাগমোচিত শিষ্টাচার সমাধানাত্তে কহিলেন, ভগবন্। আপনার দর্শনে আমার অন্তরামা পবিত্র ও পরিতৃপ্ত হইয়াছে, কিন্ত চঞ্চল অন্তঃ-করণ আগদনিপ্রোজন জিজ্ঞানায় একান্ত কৌতৃহল প্রকাশ করিতেছে; অনুপ্রাহপ্রকাশ করিয়া তাহার কোতৃক ভঞ্জন করিলে চরিতার্থ হই। অনন্তর মহর্ষি কহিতে লাগি-নেন, মহাবাজ। অগাধিপতি সমাধি দ্বারা আপনাকে

**তপোবনগমনে क्टिनिक्द्र स्निता अहै** इतथावमात हहेट छ আপনাকে নিরুত্ত কঞ্জিনার নিমিত্ত আমাকে পাঠাইলেন এবং এই বিজ্ঞাপন করিতেছেন, বৈ ও উচিয়াং অমুর-গণের সহিত স্থরপণের যুদ্ধ হইবার সম্ভাষনা, ইহা ভবি-্ ব্যক্তিৎ পণ্ডিত্রণ নির্দ্ধারিত ক্রিয়াছেন, আপনি আমার नमहमहात । घठवर व नगरत आंभनि गञ्ज श्री-जान कतिरवन ना, जात छेर्ननी चेरिक्कीतन याश-नात हर्द्धानी इहेन "। अहे कथा अनिया जिलानी भरत भरत कहिए नािएनन, जा धर्म वाकानिनी যেন আর্মার অন্তঃকরণের শল্য নিফায়ণ করিল। রাজা क रिकान, क्रिश्वन हिस्स्वता क्वा भारतन निरक्षा श्री कति-नाम। महित कहित्नन, महाद्राख। ज्यापनि महाताल्व, ७ छ. রপতি মাণনার অনুরোধ রক্ষা করিবেন তাহাতে সন্দেহ কি। আপনারা পরস্পারের কার্য্যে সাহায্য করাতেই স্থার-লোক ও মন্ত্রণাক **অশেব স্থের** মালর হইয়াছে। वाद अंतिन मीधायुटक द्योवताका अधिविक कतिवात বাসনা করিয়াছেন, তাহাঞূর্ণ করিবার নিমিত্ত স্থরপতি র**ম্ভার হত্তে সমস্ত উপ**করণ পাঠাইয়াছেন। ঐ দেখুন, রন্তা সমুদায় লইরা স্থানিতেছে। এই বনিয়া আকাশে দৃষ্টিপাত क्रिया क्रिकन, त्रस्त प्रमाद्वत अभित्यकप्रसात जान-ार्य**ण्य**ें। त्रष्ठा<del>-के</del>शकत्रग व्यानत्रन कतित्व, महर्थि कूमा-त्रक भिश्हामतम आह्वाहर्ग कत्राहेक्क यहत्य का किटमक कारी ममाभन कतिरमन, अव्ः अवाह्य अञ्चाद जूमछाल একাধিপত্য স্থাপন কর এই বলিয়া আশীকাদ করিলেন।

नत्र १७ ७ ऐसंभी अस्म । दर्भवर्कन १७ विता जानी-र्काम क्रितितन ।

্ অনন্তর বৈতালিকেরা স্তুতিবাদ করিতে লারিল, যুবরাজ ্মহারাজ আপনাকে যৌবরাজ্যে করিয়াছেন; আপুনি নানা গুণে পণ্ডিছ ও অনেষ विनाय शातकर्गी, ऋष्णुत, वृक्तिमान, ऋगीता, धर्याञ्च ও ধার্ণ্মিক; মহারাজের ন্যার যুবরাজের অধিকারে রাজ্য-বাসীক্ষমন্ত লোক কৃষি বাণিজ্যাদি নানা প্রকার উন্নতিকর **७ म्र**थरुत वारमार **करमध्**म केत्रिया जनासाटम कीविका निर्कार कतिरव अवर जाशामत्र माधात्र मकटलके विकार শिकाय पत्रांभी अ नाना विनाय क्रकरिना रहेटल अजा-भटनत स्टथर **आंद्र अदिमीमा शक्टिन ना** ; छथन जात क्रिक् काहात्र खेलत्र बाठामात्र कतित्व मान क्रिक् कार्य-त्र मर्वत्रह्तर्भ कत्रु इहेर्यमा, क्ट् व्यागीरच्छ নিধ্যা কথায় অন্যকে প্রভারিত করিতে সন্মত হুইবে ন', क्टर कारांत्र इंट्रिंग ७ एवर कितिद्व मा, क्टर कारांद्र अवक्षमा क्रिट्र मान् एक्ट्से पृष्टकी जात्र अञ्चलाती হইবে না, কেহই স্থুৱা প্রভৃতি মাদকদেবনে আশক্ত रहेरव मा, त्कर कारात अतिवातत्क कृषिवारी। कमटक कलकिङ कतिए मार्गी स्टेर्ग मा, त्काम दाक्ति आत कुनश्कादबब्र बनीकुछ हरेश अलीक कर्म्य आहा ७ भ-वश्रक्तिं। कटमा अनाशा शकान कतिर्देश न। এवः यथार्थ শাধুগণকে ভ্রন্তাচার বোধ ক্ষিবে মা, প্রভারক ভানকারী-मिगदक ভক্তি ও ভাষ্টের প্রভারণাবাকে। বিশাস করিবে

, x-

না, দেশহিতৈবী মহাত্মগণকে স্বার্থপর স্থির করিয়া ত। হাদিশের সর্বশুভকর সৎকর্মকে অসদভিপ্রারম্পক ্বিবেচনা করিবে না, এবং কেহই চিরাগত দেশচারের দাস ছইয়া কুপ্রথার উন্মূলনে ও স্বনীতি সংস্থাপনে অব-(इना कतित्व ग!। जधन नकत्न हे मडाधना शानत्व मयद्व ও সবাপ্রকার কুক্রিয়া হইতে পরাজ্মুখ হইবে, সকল গু-**ट्र**े पिन पिन स्थरफन्म ठात छेन्न ि ट्रेटन, मक्टनत्रे प्रथ चक्रजिन 'पानरम अध्वा ११र४, नकरनतरे **ऋष**र पत्रस **ज्याप्ट इंहर**व, भक्तवहे **काग्नमत्नावादका अत्मरमत** कीहर्सि সাধনে যদু করিনে, এবং সকলে**ই খামি**ভক্ত প্রকৃতভ হ্ইসা রাক্ষবিজােহে অভ্যাতান করিতে নিতান্ত পরা মুখ इड्रेट, उथन ममस्य ममस्य द्राष्ट्रा उँ९मदमयः वाक्रधानी जानकारकालाञ्चमध्, ताक्षत्रजा खद्रगक्रमस् ह्हेरतः। पद् बारकत माग्न युवतारकत ध्वन धरारा श्रकावगरक जना-দেশাধিপতিদিধের আক্রমণ ও অবরোধরেশ সহ্যকরি (७ ४३(वै ना, त्राकामत्या म्यावृत्ति काकामकुस्रामत् नाच् जलोक त्वाध इट्रेट, श्रवस्थात एव हिश्म। स्थर्मानीत नास প্রাচীন প্রবাদ মাত্র প্রকাশিত হইকে, যথাবিধানে চিকিং সাপ্রণালী প্রচলিত হইলে অকালমূত্যু অন্তর্হিত হইবে, কোন প্রকার হত্যা এককালে সকলেরই অজ্ঞাত হইবে, ইত্যাদি नाना श्रकात श्रद्धम सुरश्रद उपन एकरत, अहे आगार अक्रिकि म ७ ली जितानि जानमनीत्व निमञ्ज त्रिशादक, युवदाक णाशारमत मात्रात्रथ व्यवना शूर्व कतिरवन नरमह नाहे। **अनुब्र तुल्ला উर्क्सभीटक मह्माधन क**रिया कहिरनन প্রিয়া একণে এক একার নিশ্চিন্ত চইলেন। এ অবস্থায় ভোনাদের উভরকে। আর এককণের নিশিন্ত পরস্পারের বিয়োগবেদনা অনুভব করিতে চইবেনা; বরং প্রতিক্ষণেই নির্মাণ আইলাদলাভের সম্পূর্ণ সন্তাবনা। উর্বাশী প্রীতিপ্রস্কাবদনে কহিলেন, প্রিয়স্থি! সন্তান সাদ্রাজ্ঞানার গ্রহণে সমর্থ চইবেন ইছা অপেকা পিতা মাতার আর অভুল আনন্দের বিষয় কি আছে। দুপি! ভূমি এই স্থানে কিয়ৎকণ বিশ্রাম কর, আমি একবার দীর্ঘায়ুকে ভোমার নিক্ট লইয়া আমি এই কথা কহিয়া পুত্রস্ত্রিধানে উপস্থিত চ্ইয়া কহিলেন, বৎস্য। একবার ক্যেন্ত মাতার পাদবক্ষন করে যাইতে চইবে। নরপতি কহিলেন কিয়ৎকণ বিলয় কর আমরা সকলেই সম্পত কহিয়া তথ্য যাইতে ছি।

অনন্তর মহামুদি নারদ নরপতিকে সংসাধন করিয়া কহিলেন, মহারাজ! যৌবরাজ্যাভিষিক্ত কুমার দীর্ঘায়ুর মুথকান্তি বিলোকন করিয়া দৈনাপতের নিযুক্ত কার্তিকেয় বদনশোভা শারণ হইতেছে। ভূপতি হর্ষবিক্ষিত বদনে কহিলেন, মুদিবর! দেবরাজের এই অসামান্য অমুগ্রহাত হইলাম। মুদিরাজ কহিলেন রাজন! স্থরপতি যত চুর সম্ভবে আগনার প্রিয়কার্য্য সাধন করিয়াছেন ইহা অপেকা আপনার কি আর কিছু প্রার্থনীয় আছে? নরপতি কহিলেন ভগবন! যদি ভগবান দেবাধিপতি প্রসম্বতা প্রকাশ করেন, তাহা হইলে এখনও আমার মনোরথিনিন্ধির শেষ সীমা অতি

कास इस नारे, याविनिक्ष विदाधवन्य निक्षी अन्त्यावीत अकाध्याका लिका इस ना, यिन इस जारा इसेटल माधुन्य ति ।
अक्ष क्यारित मुश्रावना । अवः असे क्यार्की जात यिन 
मकल वाक्तित्र विश्व लिकाल स्थासार विनर्ष इस, मकरल तरे 
उत्रुख्यान अवल इस, मकल मन्स्र स्थात मिनावि के कि भाव 
मन्भा इस अवः मक्षार मक्षावस्था मकरल स्थानम्माधाद निम्म इस, जास इसेटल क्यार श्रीवस्थ स्था कि ।
स्य । यिन अधान स्थान स्वभित्र स्थान व्यापाद अधिनीय 
कि इसे । यिन अधान स्थान स्थान